

ASHA ARCHIVES

SHON W

2585

ASHA ARCHIVES



प्रज्ञानमस्मीव ज्ञानाश्च

वा.क.

ॐ नमः श्रीवज्रवाक्त्रे ॥ ॥ हगवनीदिगम्बामूककक्षार्धपाददिनकत्रासप्तहिमामहिना ॥ निखिलरुवनिहं
गांसिद्धिसम्भाधियार्ण्यपहामिगजितमागवज्रवादादिकल्पे ॥ ॥ अथगाहगवनीनांवावादीनांसदवानांमहेश्वरीणां
॥ महामरुमहागुह्यमहामायासुबन्धनी ॥ उल्लाससदृशगवांउल्लासामृतदयनः ॥ गुह्यकारीमियंमागमहामायावि
गुणा ॥ उल्लासगसतीविद्यापुपदवंमहनी ॥ ययाविद्यागंजायांविद्ययासाधकश्चनी ॥ सदवगधर्वगलितसयकासुबमान
मा ॥ विद्याधवयिष्ठावाग्वाकसावगकिन्नवान् ॥ वसुमानयगिरुगांजलजलनजानिद ॥ महाम्बयोकनीविद्याल्लुङ्गालीक
२४

अथगाहगवनी

2585

ASMA ARCHIVES

नीरुथा ॥ मादतंरुक्ततचैवविद्ययासादनादिकं ॥ वक्ष्याकर्षणजकृतंवानकविविधानि ॥ जनकधात्रि(ह)जुहःश्रुलिकालि
विशुद्धिगः ॥ वहुनाहीतिधर्मस्यात्युकाक्षामूकका ॥ यक्ल्लानमयंवज्रमालागिदसिधात्रि(ह) ॥ वहुमोवदिनाधार्थका
लाननांसुखीषणां ॥ नकवर्धुजितगच्छिदलयविशुद्धिगां ॥ शिकाधंयनिमस्त्रुहंसर्वहल्लनलीतगां ॥ ॥ एवंमया
हृत्तमकसिन्ममयुगवान् सर्वतथागतकायवाक्षिरुवज्रवादीरु(ग)वृविजहाव ॥ मार्यानदयहनिधायिनीध्वनीवी
गनागज्यावलाकिगध्वनादावहागिकाटियागिनीध्वनीम(ध)वज्रवादीमवलाकसितमकाधिरु ॥ गवनीवध्वनीउ

वा.क.

वावा॥ नृजालमया इहं महासूखं जालिज्जल॥ महासूखं पुनर्वशी वावादी कल्याणीनी ॥ प्रकाशयंतु रगवानलामी वावा
दीकनसम्पुवं ॥ उत्पलिकेन रुतिगंका वासा लवमिथिति ॥ किंका नहं महहं किं वा वापु यथानं ॥ नृदियं विषयं सर्वय
तिसं नारिमलुल ॥ वदत्यर्धमूखं वायुमूर्ध्वजं श्रयंजल ॥ नागमार्गं मधुली न्यरु वत्यदी कल्याणी ॥ गुरुजा गुरुवा
वादी हगलिज्जमनारुवा ॥ महासूखमया धातुं गिरिजुनिगपुनान् ॥ स्वरुवने वास्यकं तु खसमं थागनूयकं ॥ का नहं ज
नमर्हिक नृजा नूयमया रुवं ॥ यथाजनद्वयमिषा हूमजाथागपुसाधकं ॥ त्वया धियस्य कादवी संसा नंवह्नु वावकी ॥ मे

2

कुमालामना वल्लभा का नाय श्रगविशुः ॥ अथ वामूलकं वाक्काक ववं मरुः समन्वितं ॥ एके काक वमरु सगरा वा नादिया
गरः ॥ उत्पलिवदथा गित्या नाठिका यां ववं पुनं ॥ दासफकि सुहसं मधुना वावधूगिकां ॥ सर्वगमां वधूनी श्रयाय कस्य वा
वसिष्ठं ॥ नस्माद्या नादिविहू या नायकी वयमं यदं ॥ वजादियथमं नाम ज्वजा वक्रवजिका ॥ एवमाद्या मृगान्क मधुवाहि
रुतः सदा ॥ यस्मिन्कालजय मरुत्तस्मिन्कालमृयागवान् ॥ गत्या गतिय नाथ वना रिमूर्धा हृदा र्ज ॥ विसृष्टि सदा स्मानं यागी
नी वीवनायकी ॥ क्षयक्षय मृजा यरु वक्रयूका श्रया गिनी ॥ अथिय किं वयादवी मया सदरु या गिनी ॥ कालन वा कालरु वा

वा. क.

मवदाहवसितं॥ एवमुक्तवीजकुपागीमार्गवदिर्गतं॥ ननु कथा च तं ह्यनंतावयाई विधाक्षेत्रे॥ नानांप्रवृत्तकालतुक्र्या
हिंसाक्षेत्रं॥ ननु कृतसर्वाविद्यालिख्यगतावनात्मनां॥ यदि जंवेनावनानादनारिजं मधगुणा॥ इतुडउ४आमासवा
मलजुदुदतिहवहादीवायमजदु॥ अन्यमलासवनापसुमकजावासंथावातगुदनारिहीमाद(६॥००मथ००ववासु
तिह(६॥००जन००हुजनि॥ पृथ्वयहनि संजु००धीय(६॥००नात्रुजाव(६॥००दाय(६॥००दि॥ यासादिरिह(००००अधु००रिहिय
वधसन(००००उवीदजला॥ वाह(६॥००मदहावा००मारु००००अंस्ववनादिवीजं॥ अजानकदलाहव(६॥००दससिकदवधिन००

३

नवदहाव(६॥००एवमयदिजंवीजुदव(६॥००हुजनगुहा००दहागजुसवरुस(६॥००सुजलपदजुकहुगिलसदिजुदीयवंद
वउ०००॥ सववहावाजुनाहाव००सव(००००अवउसवगिहादनसदु॥ कवलदचदिरिदिमारुसउमथजुनागदलासदा
व॥ कानकवारिनिगुहाजुसंहावदवाकमाजुधउध००००उनाहागदनसंहाव००॥ धनविदिमायू००००उसकसव००रीड॥
रुसदसक००००उपृथ्विह(६॥००अरुंधीकि००००लहुपून००००तंददवा००००इदवव(६॥००व०००पविहकिरुपववादिविहद०००॥
॥ ॥ एवमुक्तयमकुारिन्नकमारुजुदवा॥ यागिनीनामसंयुक्ताकर्मकालववाधयत्॥ एकैकस्यमाहात्म्यमकवसा

वा.क.

न(क्ष)सदाउरिन्न॥पदकासनसुसंक्तु॥किहूअननाकिसनवाकक्तनूडमाडगिअउ॥सुसुअव॥उ॥पुसुप
लामरुसदऊसअनूपमा॥सवनानूअरुनमावऊसतुअनादऊम॥॥सुसुअरुनदकवग्यादकाविअ॥न०॥
उऊानसनूअ॥यमकाधर्मसदा॥वप॥सअलसरुसअनावद॥नद॥वद०कंटावविशरुआ॥अमनंदसदा
अमरु॥यवउरुदिअउ॥सवऊआनक॥रऊदवदअउ॥रमकानासतुपू(क्ष)पसवउद॥पउउवववव॥पदन
दवि॥अअकनलदलघूमकानदसनद॥पउमदननूगस॥अम॥नूअ॥सर्वनायमविहूनुहाकडकिहूयनरनकि

५

पदनगा॥मऊस॥नूअसवनानूअनरुऊ॥विसमिगधम॥ऊं वगासदंगा॥यमद॥अरुनूलावा॥चवगासमऊ
वी॥नसमकथि॥अनूगसपनलघू॥यवसनसदाव॥वमका॥उपपदद॥रऊवनविदअसककमसनूअ
वका॥॥॥किशीवऊवावादिक्कल्यमदामऊवाऊवऊवानादीनामसयूकायनि॥पुथम॥पटल॥॥
॥एदरगवानूवऊवावादीयागकल्यकं॥कनूहाकामसनारुगतलसववविहूना॥यकवकंयवकासिगलकुं
लघूविहूनं॥लिखययादहालखाहुसमकान्यदविहून॥दायहंपूटवदवीसहिहाने॥सुसाहिगं॥अवसेकाक

वा.क. नयनुदयावक्रमनायविस्तृतं बहुविधं कवतः संकल्पिकायानुसर्वगः। गमूडययगनातिं सदसादिदिसप्रकं
 ॥ अकेकस्यपनिवानं वसुवर्धवचुकं ॥ सर्ववामधिकं नूनं सुवदनुसमं चितं ॥ गुरुसुसमध्वनयनं कर्मकुरुयथाव
 दि ॥ विह्वानवादनसर्वनाठिकादयकालगः ॥ नृदियविषयकृतं तावथकर्मकालगः ॥ उच्चाटयसमानाम् वक्षं ३
 कुर्यादुचिकं ॥ धारवायमान्यवक्षः कियुष्टिश्चकावयत् ॥ वाक्यं सर्वगथायाज्ञासाकर्षणकुरुदवक्षं ॥ कायवाव
 र्थाविह्वकुर्यादुरुकुरुनं ॥ अनाकर्मयथान्यार्येणमक्षकनापि च ॥ अणवायादृहीवीरुसुत्यमाहाकुरुकर्मकं ॥ काल
 व

कस्यमहात्माना उत्पत्त्यारुगमक्षना ॥ दिगीययंगम्यवक्षा मिवावादीकल्पसंरुकी ॥ छादुमिच्छामिगव नृत्यरियल
 कक्षं ॥ उत्पन्नश्च कथयव सर्वकावेकयागिनी ॥ कथंवाग्निमायश्चपृथिवाकाज्ञमवच ॥ यश्चकात्रं कथयव सदिषयाम
 गः पुला ॥ कथंशिकायमधिष्ठानं वाक्कवात्यरुवसिगिः ॥ कथंरादवगानूपं कथयसुदवगपला ॥ वदुस्य कथं दवं
 कथंयश्चस्वरावकं ॥ कथंनक्षत्रीवस्वरावदुनाठीनूप कथंनक्ष ॥ कथंनक्षत्रीयमाहासाज्ञावीवंयिभुगः कथं ॥ सम
 यंकनक्षामस्य कथयस्वममपला ॥ कथंपीठदिसंकर्तवाक्कासिकुरुमवच ॥ कथंरुमादिनाहस्यकथंनिमिन्नदह

वा.क.

नं॥ कथं गदादहं कर्म. मनुजापकथं रवत॥ अकृमालाकथं पकि कनकापलकृषं॥ कथं मलुल वक्तु दंताका^व
न्यागग॥ सिद्धिमकुं कथं दव को सात्री गये हं कथं॥ कथं दिवस नं वर्त. वसति वलिकथं पुन॥ पंचामुनादिकथं दव
पंचाकृषं वक्तु वं॥ कथं यस्व मलुलालखं. मनुपाकथं रवत॥ कथं गुरुमिसंसाधु वका वक्तु कथं रवत॥ कथं वावादी
गुरुस्य. थागिनी मनु कथं रवत॥ आचार्यकनकर्तुं. कथं शिष्यसंगदं॥ अरिषक प्रमाने वक्तु कथं रवत॥ युग
युगकथं सिद्धि. वर्षावादि कथं रवत॥ कथं वावादि गुरुस्य. थागमकुं कथं रवत॥ कथं मनुपमाह. कथं पानमिमासुथा

॥ एतिषाक्षममागम्य. सिद्धिमकुं कथं रवत॥ नहायनं कथं दव. मद्ययानं कथं रवत॥ मनुपायं कथं दव. मनुपायं कथं रव
त॥ निगुदं वक्तु कथं दव. मनुगुदं कथं रवत॥ गलानाक कथं रवत॥ हन्याताक वक्तु कथं॥ कथं हन्यं सखा वक्तु. कनकाक
थं सखा वक्तु॥ दवी वृषं कथं नाम. वावादी वक्तु हं वलि. सर्वधर्मपत्रिहानं वावातां कथं गयता॥ ॥ रगवा नाद॥ साधु
वी वक्तु वी वक्तु वावादी यक्तु कथं॥ द्वितीययक्तु वक्तु मिलाकादिगकाम्यया॥ यवगादना वक्तु सहाओमिनि अं सुनद
कुश॥ असुनयुक्ति अडाका अनमका॥ ता० अं अं वल उअन वक्तु सक्तु उडा अनमिक्तु॥ अं अं अं सुवापदि अं गुहावा

वा.क

हिजिमा ॥ सत्र उग्रह नया निदुव वधाय नूव ग ॥ त्रय सहश व ॥ पदुन वगा पलिअय वनत नूत य ॥ ०० य सव
उलुविअ विडा ॥ संभूत ॥ नाअ सदा ॥ अअय किअं ह न ह क सिअ आय क धाग अउ रिन वगा ॥ ०० ह न स
मलिअ अनादि ॥ कुलुग वन ॥ कुनूडा वन दा ॥ अअ गव ॥ र न ॥ ह न अअ व मलिअ डा ॥ नाहि ॥ कु
॥ ०० ॥ य द का ॥ मं न नूपा ॥ द द का ॥ क न रा वडा ॥ मलिअ डा विहा स निअ स का य अडा व अ न द स नूअ ॥
महानि दिवी व ॥ न ह ग सिअ अं ॥ नूद स न ॥ स दा व ॥ स स दा ॥ अ अ ग द वे ॥ रि नि वा नू ॥ ह य द ग नि जा व स व

५ अंतज

ह ग दि ॥ अ का श व नि ॥ ग नूरा नूअ ॥ क नूडा सं वा व द ॥ अ ल्का नू ॥ धू ॥ ल लं द न द द रा व ॥ ग य ह ॥ अ अ ग द ॥ ह व हा वि
न ॥ ०० क अ क य ॥ स द ध ना नि नूअ ॥ त ॥ ०० ॥ ०० ॥ अ न ड सि ॥ अ डा डा ग ह ल क य ॥ म ऊ ना ॥ नि नूअ क ग द ॥ अ डा क म हा द क ॥
हा ड ॥ व अ अ ल अ ॥ अ सि न ॥ यि म ऊं स द वा ड स ना ड म ऊ ना ॥ गि नूअ ॥ पा थि अ वी डा ॥ अ न अ न ऊ व ॥ ति क न द म डि ॥ ग द क
॥ नि म न ड ॥ अ सि अ डा ॥ ग व अ सं आ व ॥ वी डा ध र्म धा ॥ का हा डा ति ह य न ड अ कि र ग दि अ ॥ धू ॥ गि स द ॥ म ऊ ॥ न ॥ ह अ
॥ जी न द दा डा ॥ य द क ॥ अ ड सा ॥ अ डा मा ॥ ति ॥ न ॥ य द ॥ अ डा क न स दा ॥ द द का वा डा ॥ ०० ह क डा नि दि रि न स क ॥ ००

गदक० नाद॥ नञ्दिमयमका वडरु वरुयमाद० सुरु॥ ॥००॥ दमादरुगवानया गायनस्य लिखितवक॥ वदस्यात्यलि
 वा. क० वक्रातिउत्थलिकमरावनां॥ वक्रवर्लिकुसर्वेनवानादीकर्मरागक॥ वक्रवक्रुजायक. वानादीपी० मलकं। वक्रमायानया
 रूत्वा. नानाकर्मसुतावत॥ अष्टाक्षरगजाडीपपादूकान्धकलायूजा॥ संसकां वमयूवक. सकसावादिजुलुजा॥ रुस्त्यवः
 गमसिषधखनमान्वरुनायूजाः॥ किमिकीटापदगाध्यससकादिसदका॥ दवनवकसुत्वा नामकनारुममवव॥ एकदो
 पपादूकसत्वाः पथमकल्पिकादयः॥ पूर्ववेदहापन। गदानीउरुवक्रुमवव॥ मसाहा। गनसवर्धः धंन्यायविवकि

नः। रुयदीयमनूया० निर्विकल्या विवर्जिता॥ रुमूदीयपूजागस्य कर्मरुमियहासुग॥ सरुगदः रुगकर्ममधमाधमम
 रुम॥ पूर्वजभविगाकाणदृष्टमसर्वरुधुष॥ मयमास्यदुरुनां. ६० कर्माहिमानिवः॥ नागदवादिमादानां. रुनाशाधि
 रुयीतिगाः। रुमूदीयवत्रं। मध्याद। हापययग। मृदुमध्यानीकद्रियाऊनपूर्वकृत्तमयदिगं॥ मनूयजातायथम
 स्यासत्तुलंगदानिका रुदिनीयसंलारं॥ कृत्तुलंयवकाभिसाधनंरुनीयं॥ यकागुमानसंलावदुर्थरुडदादगं॥ मायायमस
 माधिकनयुजानकिमान्वाः॥ अनादिकालिककृत्तवासानायवलीरुगा। गतयूनारुगकर्मचुल्लुखिरुवन्। सामगीलः

वा.क.

सुगतावसुपादमकनारवतिष्ठति ॥ अकनारवसुतुष्टयदक्षकनमिव ॥ कथं विलुप्तमस्तुष्टयसमंतिवपुजायत ॥ मातापिता
दिसंयागादकायवज्जमिनः ॥ अतिनिर्हवंमानदसुखमार्गपुवक्ष्यत ॥ शीघ्रं नलिमागत्यमूर्द्धकलमागकं ॥ दासकति
सदसुक्तातिमुंवायनका ॥ यनमानदसंपादसलिकालिदवीकनं ॥ ह्रस्वाणिनितयार्मिधिविदूयपलतिष्ठति ॥ पृथ १०
मंकललाकावमवृद्धदिगीयकं ॥ हनीयंयुसिनाजगं चतुर्थघनमवच ॥ वायुनापृष्टमानस्य मस्याकावतवरुवत् ॥ पक्ष
मासगगंवीजं पक्षस्तुटंयजायत ॥ कक्षावामनखाचिरुः सफमासनजायत ॥ अदियातिव नूपातिव अनामसुमासकः

संपूर्णनवमासनवगसादक्षमासकः ॥ कललादकायवृष्टिज्जुद्धंनलसम्भवं ॥ पक्षिज्जमिगनाथस्यचनाज्जमाद्यसिद्धयः ॥
पुपक्षिखावेनावनस्यापिपंवाकावंदुदर्शयत् ॥ अक्षाद्यमूत्रकस्य मिगारहृक नूयि ॥ पिष्टमागुरुनलस्यसपिष्टविवाच
नंस्तु ॥ दनाष्टेथानिमधु वामदक्षिणथारुथा ॥ वामहृकवीजानीया दक्षिणनलमवच ॥ तथा मीलीनमकल धर्मः
धरुसुतावकः ॥ कर्मवीजक्षयाफावायवायविवर्त्तव ॥ धर्मदयातिवालिमहिमुखंरवनिनिष्ठितं ॥ उरयार्मधुगगंवी
जंनयंसदावत् ॥ अक्षानुःपेयिकाहृया गजाधरुमाहका ॥ लुगास्यनकश्चमाहजा ॥ अतिकथन ॥ एवंवक्षोषिकं पिष्टं वजस

वा. ५.

लोववायथा॥ ॥ नूपवदनासंज्ञासंज्ञा नविज्ञानमवच॥ पञ्चवृद्धसहावकुसुं ध्यायति विनिश्चिता॥ उभात्यलिमं ह्युला
संमयसं वृद्धमाप्रयात्॥ ॥ नत्संधयनिज्ञानं कथितं नत्ववादिना॥ अनसंख्या नस्यो वडत्यलिकुटिलवादिना॥ साध्यास्यः
नाममादाय पञ्चात्मकन्यसं वृद्धः॥ ययवः ॥ ॥ अयपदतिअधमा॥ रगवडयन्तिअडा॥ ॥ अयवकह्युश नलाश्वनमक
॥ नमकडिअडायाऊऊअध॥ नः सशअः निमादिविस्मया॥ ययत् सदमं डालअनः मसअशः नवकवकु॥ वमऊ
गदः ॥ अडाऊऊदः ॥ अडाऊऊदः नअ॥ ययसं यडा॥ समऊकु॥ अदअनसदाडा॥ यवहायकाः ॥ ॥ निनिवाहासिनसि

११

अडा॥ विस्मदमरुः ॥ अऊानसन्अ॥ ऊवीडऊलअनरु॥ यवनूः ॥ अवा॥ सकऊानः ॥ दिः ॥ ववयः ॥ ऊवा॥ डाऊरु
यहः ॥ नअवाअ॥ यः ॥ वडकुदिअआदनागुववासः ॥ ऊला॥ नमकागिहिवानऊअडानिसदसिवाहननूअ॥ अ
सदामसगीर्णअरुनः॥ नमदवः ॥ सऊनलाआरुगदः ॥ अडाकुवदवडहादडा॥ नूडा॥ मिमलाश्वनसंकिः
अनअ॥ यदलाः ॥ अआसमदगलघु॥ मादअनऊऊनः ॥ विसः ॥ सवनावरुसहसराअवमिआनधमाअधमः
निसअडायवनदकाऊ॥ ॥ निमंरुदवः ॥ ऊलदासनसरु॥ डदः ॥ मकावहाः ॥ पुनायवनदकः ॥ अऊडादऊ

२३

[illegible]

॥ ० द ग ॥ ग द ॥ अ वी ड ॥ कि ड ॥ कि णि वा व सि न सा उ स अ ड ॥ म नू ॥ गि ऊ य ल स द ॥ य द ल ॥ वी ड ॥ म न न ड ॥ कि ज ड ॥ ॥ स र्व वा ज ज नू व ॥
 च द ह न र ड ॥ म क ज अ ल ॥ म रि नि द ॥ नि र नि ज द द व द व न स द ॥ य अ ॥ य वी ड ॥ म णि ज ड ॥ यि व ल स र त थ ज ग द न क ॥ स ज न ॥
 ॥ ह क ॥ सि द र स ॥ अ म ल ॥ ॥ ग म ल ॥ य नू ॥ अ म न ड ॥ अ रि ॥ य द ल ॥ ज अ व ॥ र द अ ॥ वि ड र ड ॥ ग द ल घ ॥ क वि स म न ॥ अ य स ॥
 ड ॥ म रि नि स न ड ॥ अ व न ॥ ॥ य मू ॥ नि य डि अ नू ॥ स च ॥ अ ड ॥ वी ड ॥ म सा नू ॥ ग द ल ॥ अ ल ल ॥ ॥ ह ल थ ॥ ड ॥ नि स द ॥ स र ॥
 ॥ व द ल ॥ अ स न य णि अ ड ॥ म न ॥ स च ॥ द द नू ॥ ॥ न ड अ ॥ स ज नू ॥ ड य ड ॥ वि ज र्क ॥ ॥ स व द द ॥ रि नि वी ड अ ल ल ॥ स स ॥ वि ॥

वत्ताविहसर्वमयकिष्ण॥ हृद्यगुल्लगावृक्षाजागविहानमायकं । षष्ठमिकाश्वदासत्ताविहानसद्वर्तुगं । तनसर्व
 वाक् । पिच्छस्याज्ञानीयारवविधीमना॥ मनसादिषूसत्तानांवायूसर्ववर्तुगं॥ कल्पाक्षिनात्युक्तिमयंशुक्तं सदावर्तु
 सर्वसंधिसंधिगुणानिच्छिष्टगुणवर्तुगं॥ पृथिवीमायकाथिनास्तिगादसादिमायकं॥ जायतुचमृववत्ताविहानसर्व
 ॥ दवासुत्रमनूषाणांविनास्तेनजायत॥ दवगालाकपालादिंसर्वसद्वर्तुगं॥ समकवदसिचक्रमत्यमराविग
 सदा॥ सर्वसर्वसर्वयगकिष्णकुरुमिजं॥ वदुर्गपनंशुक्तं सर्वज्ञासुसंमताः॥ पाणवायूसमाहृष्टमृगिजीवि

१८

नलक्ष्मं अमृतं सुखावकायस्य पृथिवीक्षमायना नूपवदना संज्ञा संज्ञानविहानमवव॥ समता आदर्शप्रत्यवकाः
 सा कृष्णानूक्तानमवव॥ कुरुनिष्ठ सदादवविहानंयत्रमध्वनी । तस्माच्चवर्तुगं ह्यतं आकाशं पश्यदवगाः॥ वेनावनः
 वत्तसंरवाभिगाराभायाकाशप्रवव॥ पंचकावेकसंधाधिंविषयाश्वपरिस्मृताः॥ नूपगदगध्वनसस्यर्धधर्ममवव॥
 उगांविहृदिमायागाध्वनवदहासृताः॥ उगांवांस्त्वध्वनूपत्ताहावयस्यनमाकवः॥ वृक्षत्वारुल्लुत्तात्तृक्ष्णादिहृ
 राववत्॥ वक्षुनिदियविहानंविहवद्विहृविगांशयः सुखावविहृचार्थप्रसाखनयदंरवत्॥ ॥ विहानकाशः

॥ अथ स्यात्पुनरुक्तं ॥ अथ विज्ञानं गंधर्व विष्णु इति रुथता स्मृताः ॥ बसुजिह्वा विष्णु विष्णु विज्ञानं पञ्चमार्थकः
॥ कायस्यार्धं विज्ञानमाया स न स्वरावर्गः ॥ मनाधर्मादि विज्ञानं द्वादशविधं विष्णुजिह्वाः ॥ षट्पुनर्विज्ञानमालयकुण्ठ
गताः ॥ श्रीवाचाश्च समाधि संप्रसादप्रसादात् ॥ विषया विषया गननिर्विकल्पयदहं बन् ॥ विषयं शुद्धिवाध्यास
सर्वकानववसिष्ठिः ॥ ब्रह्मधर्मसुखसंघर्षकायिकलनारुयं ॥ विज्ञानं तं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं ॥ विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं
विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं ॥ विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं ॥ विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं ॥ विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानं ॥

२८

याश्च पागुरु स्युर्गुणीयकांतिगुह्यं वयथा ह सुंधर्मादयास्वरावगः ॥ म्रियामूपलं रथागनसयात्तां मरुनूपिहः ॥ अयनाडी
सुनूपाववा नाक्रात्य कनवमुगः ॥ वाक्कालोकि काधर्मास्त्य कनवदवगाधिकं ॥ वाक्रात्य कनहुद्विवायागीवूडत्वमागदः
धर्मकाहुस्वरावकुद्ववगा संवर्धुप्रणि ॥ सर्वकानं सुनूपत्वाद्दवगीपविकल्पितं ॥ आदिदवगानूपं कुवजसत्तवावहिक ॥ यी
कुरु संकन्यागिनीयागसत्त्वं ॥ गथादयसमायागं सुललौयि कुद्वगाः ॥ असंख्यदवगासूवहां संख्यामलकल्ययगु ॥ म्रविह
दवगायागसत्त्वं वूडनाटकं ॥ गीतावाहीसमायागं यागिनीगलनूपनः ॥ कयावहिरुनूपत्वं रावनाकथितामया ॥ सर्वजुद

२६४

वा.क.

यनां पाथ्यप्रकाशविबर्जितं॥सुलक्षितमिषाकं शुक्लविकामयं वरु॥विकयानीदृशतत्वं तत्त्वदं पत्रिकीर्तितं॥ॐ दम
रुयरागुरुपुष्पागव्यकथन॥अथवा कन्यको वै नरुवाहनिर्गमनः॥ ॥निसनीॐ सॐ ऊअअ॥उणकमविम
सदरवर्क॥गवकवाॐ नी मरुहाजानूकं मसहाडामरुमरु मॐ मका॥कनसहाडादउकअदिअस॥असमॐ सिमरुय
उथानुसवूअ॥सअववॐ वूअ॥सगसहाॐ वॐ मरुअसु वसनाडनूअसगसॐ मरुॐॐ कृञ्चकवाॐ नमरुमनउ०अहि
सहाडा॥ ॥ॐ गिशी वजवाहिकल्यमहागुरुवाज॥पुष्टिकावकथागिनीवज्वरुथः पटलः॥ ॥ॐ त्यादरग

20

वागुरुपुष्पागव्यकथन॥अथवा कन्यको वै नरुवाहनिर्गमनः॥जालॐ गिजासॐ मरुपड॥मनॐ विसडजालदमदिय० कजदविस्मड॥पिघ
अलाजामामरुचकविजान॥वऊसवनॐ मरुपडकजदविजान॥वजाअसवमनायावविस्मडलमून॥मिलॐ कयडथान
नविजान॥विनिममरुसनजागविस्मड॥दमरुहिनिरुविअदं॥सदविसअडासदहासवजागरिनिॐ विजान॥अनमरुकाअध
ॐ सिम॥सहासमनक्षनूअनरु॥त्यादरगवानस्वामिवा वाहासखनदनवावककलियागा॥साविषयं दियादिमानकः॥यवानु
सर्वसत्त्वानां मूल्याहिविषयां वृजान॥यथां गवां दुसत्त्वानां मानां स्वस्वकर्मनाः॥यहा वकददायाकविषयादिंदुराकृतं॥साधकास्ते

वा.क.

तः। वायार्गनांगतः। साक्षात्तयापनिकीर्तितः॥ वहिः स्वात्मैः विदूषां वायुर्थागविवक्षः। या होऽप्यं वं जातवहिः स्वा
सुपादसंयुतः॥ उरुवाया नकालस्य दृष्टिः पथमवाप्तव। दक्षिणा यहा कालस्य निसाया यारुथा एवम्॥ दलेदलेदुया
वृद्धिं ज्ञानीयात्कालरादतः॥ स्वात्मैः सुपादसंयुतैः प्रसिद्धं कमलस्य वः॥ स्वात्मैः सुनवनीया वरुथसुनवादिनं॥ अर्द्ध
पाससंवावपनिपातिविषयं याग। कलदादिह वननं तस्य नासंयत्सुधी॥ एकद्विगि वरुथं वषट्ठिनानि विषयं याग। व
हवायुर्थादिनादाजायतं कलदासमान्॥ एकपक्षं विषयं सप्तदागाधिसमूहः॥ यद्वद्वयविषयो सात्सुदधं विवरु

२२

३६

वत्॥ यद्वद्वयविषयं सप्तदासे र्वाहिसुगिरिवत्॥ सामान्यकोलजानीयादनाश्च पुननूयत्॥ सामान्यसगतसूर्यकुलकचंद
मायदा॥ पीषनामातदा कालासुत्पन्नित्वया कानकः॥ यद्वद्वत्सीतवाजागसु स्याद्यः सफमायवः॥ सफसफं र्गिरियागसु
जाकंसमसफगः॥ सर्वसूर्यमार्गारुणसगतमित्त्र॥ कालं निवृत्तयदीमां सुधीमात्रिवरुद्धा॥ यद्वद्वत्ताक (हवायार्गति
नयप्रवर्तन॥ र्गवत्ताक (हपुष्टमवहां स्यान्नसहायः॥ आदौ र्गत्वादिना र्द्धसकलदिनमथाद्वनिहां यायदयगत्ता
दकाद्वयंचिदिनमथवरुवां सनाद्यायावत्॥ या (हवायार्गतिना यावद्वतिदिनपक्षं नूराससवादीनकसा

दिह्यममनुवदत विष्णुपदिवचकवर्ण ॥ पञ्चैवपंचवसादिवहगतिविहानादण्यं वृत्त्या तस्मादकार
 वाक्यं वक्ष्ये गुह्यकपदकां त्युक्तं यावदव ॥ योऽसमा समस्तु हायनहागिनः पदियुग्म च वागमासा रुहा निः
 हासागिथिदिहिवृगुहादिचवाजी विगघ् ॥ प्रियुं वकुमालिख्यसफ्रिं हाहा चिगां ॥ आयुषः पाति वायाश्च विनाः
 लंखांकमालिखन् ॥ पंचासपंचविहान नृनां लघुवाहनाः ॥ नाकाषाठहा संख्यायुक्तां साधनमृग ॥ षट्सफाष्टनवाह
 नित्यदिवात्यनिलकुमा ॥ गुह्यपापचतुर्विंशत्यनेव ह्युवत्सवेः ॥ नृदाककामसंभार्यादिनातिपनियानितः ॥ गुह्य

२३

पापचतुर्विंशत्यनेवत्सवेः ॥ षाठहा दंतथा सकदहा दंवा गिमा नृतः ॥ अष्टदहा दमकालविंशतिवदिवंकसा
 नृ ॥ गुह्यतां दिनन्यूनांदवतिवर्षाश्च मालयः ॥ अष्टकंकालकाला यंसममगिनहां हायः ॥ एकदिगिचतुर्विंशत्यनिक
 म(हायदि) ॥ गुह्यपापदिनेवहिताठषमासनामृगि ॥ प्रियुं वकुमालिख्यद्विंहाहा दसंयुक्तं ॥ तगाश्च सागवां वाच्यः
 संख्याकसंमालिखन् ॥ कालेनानि समालादिमृगालिमादिसर्वथा ॥ विधिं वृद्धं नमृग्यायदिष्टुहाध्वतंपदं ॥ नादीसंसा
 धनं तावकूर्याद्ययं विष्णुधयन् ॥ प्रत्येकं कमसायागी नवयित्वा पुनः ॥ पिधायिकाठिका नखासमाकृष्टवयः ॥ अ

वाक्.

धिका निष्कः सहिः सहसा एकविंशति ॥ अक्षयवत्सलानां स संख्या नयकमात् ॥ मादृष्टं वदन्तं वा नृणां नाथ
संख्यः ॥ कुरु कुरु या स नृणां सर्वकार्यवनात्कुरु ॥ अक्षयवत्सलानां स संख्या नयकमात् ॥ वायव्यकनक्षत्राणां मकर
द्वेष्टानि कुरु ॥ मादृष्टं धनधान्यादिलोकार्थं सङ्गकान्क ॥ वा नृणां कनक्षत्राणां सर्वसिद्धिकर्मात्क ॥ तस्य यागवत्सलानां स संख्या
सत्त्ववशात् ॥ वायुसूक्त्या रगवात्सलानां स संख्या नयकमात् ॥ वायुसूक्त्या रगवात्सलानां स संख्या नयकमात् ॥ वायुसूक्त्या रगवात्सलानां स संख्या नयकमात् ॥
वनस्य स्य यत्पुनः ॥ अक्षयवत्सलानां स संख्या नयकमात् ॥ विषादिद्वयं स संख्या नयकमात् ॥ विषादिद्वयं स संख्या नयकमात् ॥ विषादिद्वयं स संख्या नयकमात् ॥

28

सुखात्सदाशीकनृणावलं ॥ कृपात्मकमुसंगममननिदवनकुकिषू ॥ रुदनैरुदनकर्मदासुयागपुहासुत ॥ दयात्मकपूनव
जीसंददजनकारवत ॥ हुरंसंददसहजुलकयबाहुवायुवित् ॥ गदृणात्तायदानाथकलिसुयद्विपृक्त ॥ कालायाः
त्यालहागस्यसुखेसुखेकनिरवन् ॥ यगनिकुक्तिननाथीगदृणसुयसुपृक्त ॥ तस्यसुवार्थसंसिद्धिद्वयसुसंहायारवन् ॥ कायद्वयं
चनाथस्यजानीयात्यवनात्मता ॥ प्रविहाधर्मकायसंसिद्धिसंभोगविगदः ॥ निर्यानिर्माहाकायाखरुक्तिकाययामतां ॥ धर्मकायहुर
सर्वसंहायाधर्मविगदं ॥ निर्माहाविगदः ॥ यथाएकस्यात्मतापिवा ॥ प्राणीयामह्नितायागीयंववृद्धखरावतः ॥ वामदाक्रिहायाः सु

वा.क.

वज्रवा नादिक लोमहातक वा ऊ वन्दसु यादिहान वक्रयथा ग वरुर्थः यटलः ॥ ॥ ॐ ह्याहर ग वां या गी आ
ह्लासि डिं प्र वरुकाः ॥ वाक सं व वरिडा म म न्य वा नादिग रुक ॥ उका श्र या गी ग रु वृ क र्त्त प्र स व सिद्धि दं ॥ आ ह्ला व क
पु था (ग न सिद्धा ग नान्य या ग वा न् ॥ पु ना रि स व वा म श्र या ण या स व ॐ वृ आ स ना ख लि न्द्र ड म (हा विदि (हा रु क वी ३
ॐ ॥ प द न ॐ ॥ विहा ल ॥ द म् न ड दी वा धा म रु ॥ सिं द वृ अ ॥ व अ म रु फ ड वि ना य क वि ध ल ना म् ॥ ग ऊ नृ अ ॥ ग
म रु स स रु वि क र्त्त क ण प्रि ला अ उ द न ॥ प ड व न ॐ ह ध ॐ स अ ल उ म् रु ति ॥ स म् रु ड ल अ व ग ह रि नि प ड म् रु ॥ सा ज न्

२१

द उ म रु स म उ ॥ हूं रु वा न् रु वा ॐ नि य ल अ ॥ वी न दे क ॥ हूं म रु प द क र ड अ रु ति ॥ य ड रि नि अ रूं ॥ उ अ सं रु प ड म रु स क र्त्त म् अ
ला अ ऊ न रु म उ अ रु ति म रु हा ॥ ॐ अ थ ह र ग वां व जी ह न रु मी ख र व क ॥ सि डि क र्त्त प्र य थ क स ल व रु नि ग ल्य दं ॥ पु ना य
लि न्द्र मा गं स वृ ड व रु ध वा न व ॥ मा या का म श्र या या व ला ला रि प ल्य व क ॥ हूं दा रि नि म हा प स वा अ ल ॥ म उ स स व ड
॥ या ग य स व ॐ रु म का सा नि वृ अ नि ॥ वा ॐ नी ला अ वा व ड न ॐ प ड वा ॐ नि ता ला आ स रु क र्त्त हूं रु ट म रु प ड रु अ द स ॐ अ
ॐ ॥ रु क का स न ॐ प ड गी थ णा न स अ ॐ ॥ उ अं स रु स रु प ॐ रु डि अ रु क म क व ॐ ॥ ॥ अ थ मः संप व अ मि ह न रु

मिसुमिरेव ॥ पनार्थथागिनीवकुलुगुणंयविकव ॥ सुश्रुतिवेववायुमादुदवावृ (हागथा) ॥ मलुलसुतुसंवावंलकथ
 वविचक्र (हा) ॥ किपुष्टिवसाकृष्टिमावनावादनंरथा ॥ कस्यथागनजा नामियथागसायविधम ॥ अग्नयनरुवसुत्वा
 वाक्यवनधकृय ॥ मादुदुदुवडाहंवावृ (हा) नधनार्थद ॥ दकि (हा) पसनाधुहंरुहकमलुलंनवग ॥ वरुवधुमिदंयकंपम ॥ २६
 नाथस्यसंववग ॥ नामांनसैपंवाधुवायुमलुलसंस्तिग ॥ दवितस्यामसंकाहं कर्मनाथस्यसंववग ॥ दंदस्यपसनाधुहंक
 नकवधुमन्निरे ॥ मादुदुमलुलंवेवनलनाथस्यसंववग ॥ सुसंयपसनाधुहंकुलवावृलमलुलं ॥ शुचसुटकसंकाहंवरु

नाथस्यसंववग ॥ सर्वधुहंसमलुलसुत्वावा (धदिवाविहि) ॥ वेवावनमदावाया ॥ सुतकायादितिश्चयग ॥ वायुगलुंनजा
 नामिसर्वकर्मनसिद्धयग ॥ गार्किकानपुजायकवायुसर्वगगारवग ॥ वायुसुत्वातुपूर्वनमलुलंनसुत्वाधयग ॥ पाहलुगुमसुत्वा
 नांवाग्वाखा ॥ सर्वकर्मकृग ॥ विस्मनवादतंवेववृहलंपदमात्रयाग ॥ वदस्यं सर्वगलुसुत्वाययंवाधिकावलाग ॥ पुननूवा
 चरगवात्मनूयववस्तिग ॥ पक्षवदलुमकेकसुदवेर्मनुवृहक ॥ द्वादहाकमदायक ॥ कथितममवल्लग ॥ सर्ववकर्मि
 कंयकुंवाय (हा) ॥ सदकावयग ॥ एकेकलुमदावकंरुयदिपृथकर्मग ॥ ल (ग) द्वादहाकदवीसाधयत्साधनायकं ॥ पदकासववा

वाक

अरुणां यदनु॥ सुरुकुडानदगाप्रतापदनु॥ सिद्धविशयदखनिमनु॥ पपासुडवीडाहखहिन्दुविचडासनापु
॥ विरहिअ ॥ पपासुडुडुरुअनाहुंरुवाहीसावां सुरुड ॥ अमरुनाहिअसुडुविहिनासधनाडासदकअड ॥ अउ
थातसंपवक्रामिनाउवकं यथाकुसं ॥ दासकनिसदसाहिनाउददानगाहवगु ॥ नाउकाउपनाउनाकषांरुनसमाउिना
विंहाकनवहागनामनाउिपातसमयक ॥ नाहीरुनंचपी० वरुविंहायुनाहाक ॥ कषांसधयथानाहीआहुयनिवसर्वगः
॥ पल्लिमलयसिनगितखदंरवहाहिगा ॥ जाबंधनहिखासुनकहागामसदावहा ॥ उठियातदकिहाकहुनाहीवरुमलवा

२८

हिनीं ॥ अर्वदयसुवसंगिताठी^वकवादिनी ॥ गगावनीवमकहुनाहीवायुधवादिनी ॥ नामध्वनीरुसाधुअसुवदगिस
वदा ॥ दवीकाडुसुगावहुनाहीवकुवादिनी ॥ मालवसुधयसुननाहीदयवादिनी ॥ कामदूकवथासुनवहुवदगिसव
दा ॥ उठुसुतयगनाहीवहासदा ॥ नाहिहिंहाकुरिसुननाहीहुरुसदावदा ॥ कोहालनासिकाविंरुमकुमालावहाहिगा ॥ मुख
सुनकलिंगसुहावहिसदाहिगा ॥ लंपाककहुदहाहुनाहीउदववहासदा ॥ काग्निगुदयसुनयूनाउविमव
यवादिनी ॥ हमानयमयसुननाहीसीमारुमधगा ॥ पगाधिवासिनीगांगनाहीशुष्यवादिनी ॥ गुरुदवगागुरु

स्तनसा मान्यपूयवादिनी ॥ सोबाहू उग्रयुगल ॥ नित्य कसदावसा ॥ सुवर्णकवचाख्यान नाडी पखदवादिनी ॥ नगनपाः
 दांगुलीहृया नाडी मठसदावसा ॥ सिद्धोपादयसुस्तनशुर्वहतिनूयिणी ॥ मन्मसंगुष्ठथाः स्तनखटकं वदति सर्वदा ॥ कुल
 वाक् ॥ जातानुवस्ति लावालसिंहानुवादिनी ॥ कषांमध्यास्तिगानाडी ललनामयवादिनी ॥ दक्षिण वसनाखागा नाडी वक्रवादिनी २०
 ॥ सवृत्तामध्यासा गवहस्तनानुद्रुमश्रगाः ॥ कदलीपूष संकाशा लंबमालालक्ष्मणी ॥ गेली वंजिनिवादी कावाधिविह
 सदावसा ॥ सावधूनी गिविहया सहजानयदायिका ॥ प्राधान्यसाः सवीजानां ललनाया रुनाडीकाः ॥ अग्रववाहयमंन्या

गंगासिंधूपनयिणी ॥ ताववयागिना यस्तः प्रकीरणाः खगनन ॥ सहागकायनूपासाज्ञानी यादहमाशिना ॥ हिमः
 प्रियां प्रधनाया ललनाया अनाडीकाः ॥ ललनापक्षखरावननसुतापायनसंलिनाः ॥ अवधूतिमध्याद ॥ गमाकागदत
 वरुणा ॥ ललनासहागकायाथाः वसनानेर्मादीकाननः ॥ अवधूतिधर्मकायस्यादिनकायसममं ॥ पतानाडिठुकास
 वंजिनी बहुरवादिनी ॥ गस्यासमसंजाताः पिच्छुदवनासकं ॥ नूपाकी गं वति हं पिच्छागीतं वदवनाः ॥ गस्याः
 दविंशया गनतथगामयसर्वगा ॥ यनयनपुकावहा पिच्छागीतं पदलिङ्गः ॥ गनकसमतां याथागी वृद्धलनाप्रयाः

वाक् न॥ अथ वाचगवान्काष्ठिकाद्यादौयुतः॥ वीजाद्वनश्चुर्विंशत्पुल्लानादिरुविशितः॥ हनुकवज्रवानादीनरु
 विष्णुर्जसामनुस्यसामर्थ्याकंकाटिसदसकः॥ गन्तुनरुवीनवृत्तासावसमन्वयत्॥ अन्यगंशकमनु
 साधनं॥ जूजाफासंक्रनककज्जानूयाध्मात्मनागथा॥ समन्तादेवहाननसर्वसिद्धिगतायनं॥ प्रवहकावस्वामरुमात्रयत् ३१
 र्वभाकवं॥ निष्कासकालगह्वरागृह्येतिःसर्वथागजं॥ स्त्रिकालरुथागद्यतद्विर्गद्वद्वक्यकं॥ स्वासवाववज्रवानादी
 मगमवालयागिनी॥ अरिषकंयक्षिष्वाध्वचुर्वेःसदगत्तहिःपत्रिपावितामसायानपय्यसुपुकाक्षयत्॥ मधुलंव

रुयसर्ववादीमथद्वकाः॥ प्रह्वप्रवहायकुरुवृकंयामथाययात्॥ अन्यरुकरिषिकस्यनद्वोदिनदनयं॥ अव
 धूनीमधुलकुर्याहानयंवस्वरावकं॥ हानाकानाध्ववादीरुयालिग्वेगीद्वकाः॥ निनगानेद्वपिधीवृत्तमुखद्व
 कटः॥ रुज्ज्वादहाहियुकेगम्योकाकसुरेववेः॥ पञ्चमूलादिमावेमुपुलयागिनिवप्रकाः॥ दक्षिणवज्रकर्लि
 पत्रह्रुत्तमवृत्तथा॥ विष्णुननागवर्मकृत्वामपाह्वेगथेवव॥ वामघश्चकपालश्चवामश्वदाकृत्तुं॥ मूककक्षा
 ध्वनगाध्वमृष्टमालारुधानिका॥ हृत्तगानावलेयुकांशिलःकपालमालिका॥ मयननागवृत्तनश्रुधवाहद्वकः

वाक.

ननु। दिव्यगंधानुल्लङ्घनीयेष्वकयुनाचिता॥ दिव्यध्वजामरुषिचक्रपदचक्रवर्जकं॥ ललाटवसदाधार्युष्यालिंदप
दान्विताः॥ कालामालायागिनीपथमगणः॥ हनुककुसुमं नारंजयमकुटसागुणः॥ वायुवर्मनि वसनं पञ्चमूलावि
रुषां॥ कपालमालामालिन्या विष्णुवर्जार्धचक्रं॥ उन्नतं सुकलालं वदनासंयानकं॥ रुज्ज्वादहना विशाहार्धमस्तु
रुषिः॥ यक्षापवीणरुग्मंचकालामालाकुलादिभिः॥ यानिमूलादिभिरुज्ज्वलानादिविधाषट्॥ यदि हनुकनायकमुदावना
कादिभिरुज्ज्वल॥ यानिमूलादिभिरुज्ज्वलानां चर्मयनावृता॥ हनुकस्य दिदरुषुदकिचर्मकुक्षानिकः॥ उपायपुष्पमकथागंसदा

३२

न्या

सूखदिव्यमदनं॥ दयाकस्तुिकक्षेत्रवनिर्वाहानूपकः॥ हासवकुसुमागिजाकिन्यादिव्यधुमं॥ दारुणं सर्ववीनाश्च खलुकपाल
मनुविन्॥ प्रककस्यापिगुरुयथावदनुपूर्वः॥ ललना वसना नाडीपुष्पायाश्चमनूकः॥ आधामावधूनीयात्समनसंयुक्त
गः॥ शिवकुंठिगुर्लदयाजाकिन्यादिव्यधुमं॥ हनुकं वज्रवा नाकारुजालक सदसकं॥ दिरुजादिमूलावादिभिरुज्ज्वलानां यानितानि
व॥ चयविमज्जनदिस्तदु॥ ननुज्ज्वलं सुदस्तदु॥ सुदयपवृतामृगश्च॥ अजाकउन्माहपमत्तपविस्मामटिकाकावया
गकृत्॥ बीजस्य हदिवीनासु नक्षत्रादिकं मधुलक्ष्मणीयपूजायापदहानादिकं॥ वज्रसुखं वरुणागं सुवज्रसुखं सुखं

॥ सर्वनामविधिर्न्यायसमयलक्षणं ॥ उपायिकाज्जायं सर्वलिंगेन नरि सुन्दरि ॥ वलिं वदाय यत्पुण्यं यत्पुण्यं यत्पुण्यं ॥
 वाक् ॥ मरुजायश्च कूर्चिकुम्भकवज्रालमरुवे ॥ वधुलीरावयत्पुण्यं कलिकादिमर्चमरुवेः ॥ वदत्युर्ध्वमुखानां गीतगानानां कजं ॥ जाकि
 न्यादिममसं नदयति स्नान नहिमका ॥ विह्वलं लालनां याकिदम्भ ॥ वरं हरी ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्रवनादिनायकी ॥ सर्वथा
 गी समायागद्वज्रसत्त्वयनसुखं ॥ ॐ ह्रीं वज्रवनादिकस्य सदा नरु नरु वज्रवनादी उल्लिख्य नरु वरु सल्लनामयं वसं य
 दल ॥ ॥ अथार संय वक्रा मिथ्या गीनां यथादिकं ॥ यागिनी यागमाहि यगि विध्वं जायगद्व्या ॥ जयानन्दजिनाडी वज्रु

३३

शदिवा

र्थसद्वेषण ॥ तत्समासं न्याख ॥ उवादादल मथ कथा ॥ पूर्ववादसहि दद्ये न वसिंदं वृद्धकावक ॥ उल्लिखिः पूषादित्य वली दिकां
 पालवादक ॥ वाक्काश्च सकदवावा नादिनूयिनी ॥ रुद्रकमु वल वधुर्लु रिते नाना कजिका ॥ दंष्ट्रावोद कला वयं वस
 दाहिधनली ॥ जवानूदमरु कक्षा यत्पुण्यं ली उयदा चिना ॥ कपालमालिनीया नादिक ॥ लकलिधविना ॥ वाभकया
 लखदांगसु वसंदा वविगदां ॥ माधु मल्लुल ह्युत्पुसफि ॥ जम्बूवावक ॥ दागिं नरु वददयं वावादी सदसं पुट
 ॥ उं गी उं वज्रु रुद्रादिकि नूनी नूद हं ग हं की रुनी जा ॥ संस्वादा व हं हं रुद्रादा ॥ मल्लुलया दवी नामा कव वजि

कंमं॥ वावाकायं रुमथनी कूलं नादिपुस्यता॥ वावादी ह्यनमासायथा गिनी कडगिष्ठि॥ स्त्राणा यमूखादिहो संफण्डा गिदवता
 कायं स्वद्विधा कयं ह्युया सिधायथा गतः॥ सुफण्डा गिदवत्तु डत्ययतमदा सुखात्॥ अधिका वंता किनी यस्मात्पुता किनी कूलं स
 वाक ॥ एहमादंता यास्वामि कथमत्ययतमम॥ गाखयित्वा दुरगवं वावादी सुखादायकः॥ हृष्टुमिस्तथात्यहिन न ह्यसकित्वयं॥ वाका २४
 वंगुक्तं वावाकादलु कालदलु कं॥ हवीन नूपकं संम्यक् विषयं चि य नूपकं॥ वाधिविहसदा विदुगुलं कावसं ह्यं॥ या प्राणिना
 तिव कं दुगत्या गतिमदा ऊक॥ काकनक नूपकं च वपुता स्वना निर्मिर्मिं॥ कर्मना नां सर्वदवानां वाजा वाक् सदा र्विका॥ वक्ष्यामि वा

नकं रुममावावाटनादिकं॥ संवा नकाल गह्वरा डत्यहिनः स्ववदीयतः॥ पुष्पापायसनायत्या ह्यत्या क नूलात्मनां॥ या गदुपुव
 गगन विहसुक्ता दिसुक्ता गः॥ ननु यकुरु सत्त्वार्थ कुर्यात्वा धियथा गतः॥ गिमादमुमदा सादसु वरु संववगपु रः॥ गदुदादहा खं
 पुष्पातिस्त नूपनायकी॥ लयता धिका कालेषु संववहिन मदर्जिका॥ विह्वया स्वासजा वदुदया युगं हा गधा उहा॥ हा गेन ह्यदहा १५
 हा संका गिगति कथन॥ वादहा वक्ष्यामि लयदादहा किं कमात्॥ लग्न कुर्यावर्ह कलाका वं नी वसववत्॥ एके वधूनि वि
 ह्वया हा गार्धन रुका नकं॥ गिरिः पश्चादहिनः सत्य कृज्ज्वा वागं हा दुजनं॥ नववर्षु समारणा गाजूका वाया रुका कका॥ गुहं पूटयहा

वाक्य

दाहोऽपि गुह्यमसदृशमसदृशं ॥ तद्वद्विषममाद्यातामृद्धलज्जाकिनीमिदं ॥ खवनीरुवनीमृत्पातालपूववासिनी ॥ विविधादिषु यागिः
न्याकृष्णमकुसुमसुखयं ॥ यावद्यस्याधिवासं वसतस्तदस्य तस्मिन् ॥ वक्षुक्तसमाश्रित्य विद्वत्कामथागजं ॥ वक्षुक्तपूवंगवसुतस
पञ्चलानवृषिणां ॥ अशुक्रं यत्तद्वज्रलक्ष्मणसूतं ॥ वपाः ॥ वृष्ययथविद्वत्कृष्ण ॥ एवं गुह्यमयाचार्यः सर्वकर्मविद्वत्कृष्ण ॥ नि
मन्त्रिणां तन्त्राचार्यद्वयवाचार्यवदुक्तं ॥ गच्छादकं यथायायपादपद्मान् ॥ वक्षुक्तकल्पितरुक्थानपद्यस्य वास्तवस्थित ॥ अशु
कतपुत्रदत्तआचार्यपूवंगवसुतं ॥ दूर्ध्वं नम्रजदं काविगुवृत्तलक्ष्मणवव ॥ अदिक्कर्मस्य पूजनांदासीदासंगत्येवव ॥ नपद्यस्याकथास

३५

२५५

मयसाधकसिद्धिमिदं ॥ यत्तवां यदिपवक्ष्यसिद्धिं नृपवर्त्तन ॥ समयं दाक्षारुवदुःखं कायिकं मानसं तथा ॥ सत्तजुंसात्रियाद्
वज्रानादुःखापयद्गुणं ॥ वर्जनीया तथा ह्यत्वा संगुदे ॥ तव वं ॥ अशुक्तनिष्ठरुदनपूजयन् विधीनासद ॥ पूषंधूपं वदीय कृष्ण
अदनविहासक ॥ आचार्यवाल्लभा कर्षध्वज्जुष्टुदासागिणं ॥ पूढयद्वगवाध्यानपुरुर्मनसापिणं ॥ ज्ञानिपूष्यथा कर्मपुष्टं
सिसिद्धरुद्रुग ॥ यथायथा हि कर्मस्य तथा कर्ममनुष्ठयत् ॥ माधी ॥ गमनीयथा योष्यथा रिषा पुष्टोक्तिं ॥ शुविज्ञा कर्मनिष्ठरुद्रुद्रु
दाविवर्जितं ॥ सर्वसाधनं दंष्ट्रिः कर्मवगिषकत्वाय ॥ खानपादां तथा पयंगामूवंदक्षणा तथा ॥ उत्संगज्जुदातपस्यामधुलंबपूव

वा. क.

सुवां पञ्चदशसुवावेः कर्मवर्गो विवकलः । एथ मंसमयसंवादादं कृष्णं सह संयुक्तः ॥ गताः समस्त यत्रिपूर्वमाचार्यनाथ
धिसुयत ॥ पी० पी० कृष्णसमलाम्भानवासिनी ॥ वीववीववनी सर्वरुक्मिणी ॥ यक्षमास्यदं ॥ दयः प्रमाणां समयप्र
माणां गृहकं वावव वं प्रमाणां ॥ एतन्मस्यनरवयुवगा दद्याममानुषदत्तं रूपाः ॥ दानपलिकप्रवक्तव्यमलुलं वयनं
स्मनं ॥ कृतां कलिददिसंधार्यपुलिधनकुपुमामिना ॥ एवमसमसं गता ॥ संकल्पसंगाः स्वमिव सकलरावंगा वगा वीकता
॥ गुणवकवृक्षां रूपाः विरुपा वनाथा ॥ कृत्तकृत्तदद्यामस्तु कीवान्कं पाशागमृते कवपावहुड विरुपी भदिदु

३०

॥ हासनेन विबुद्धदहं ॥ पी० पी० म (श्ववमसुलवकनाथां वदसदागुवृववं विवसानन ॥ काथेयादिमहावाक्त्रयस्यामरु
समाफिमं ॥ वदगां वज्रवादी वक्रसुचवनायकां ॥ दद्यावलीरुषितददवला विवेसदा वाजिरसर्वगं ॥ वक्रादिनाथं
सदजासवं वंदसदासचवसानां ॥ एका नाकृति सावहुकृति वयपस्य गमे वं रसाश्ववदंसकृदधवलवृत्त नसर्वोत्तमं ॥
सर्वरुद्रविबुद्धनिवयंदयालयं सुदवं वदंसदजासवं ववकिंसदजादयं नायकं ॥ एहितागुहसमुत्थयथासखं वयमासयन् ॥
यथासखं मनात्मानं किलिजालीमदात्तवं ॥ नानाकृत्सुमावर्तनंददं सुग्यामाला विरुषितं ॥ मदिनात्तवसानवं वज्रगातकुपूत्रितं ॥ नृणा

वाक्य

त्यवमानदमडासकुहासायतायाथांकुनययेनित्यंयटदेदमनुनादितं॥हृक्कारुहृक्कादिरिधोस्वेतानावायमनादवे॥अहिन
कसमावीनवासावववयागिनी॥नतःपञ्चाङ्गक्षकदागानुहविभितं॥यागिनीयागिसंमील्यअहिष्णुनययका॥स
खसम्यक्तिसंपन्नआवाग्यहुरुवतसा॥कामभाकादिसंवाक्यसिद्धिरवकिसंपदं॥सुवहसंमृष्टपलाकावसंदार्यविधिनादि
तं॥उत्सृष्टवलिंसंदार्यरुतड्डुषादाययत्॥यो०कृणुनिवासनीयागिनीगलंयुक्तसकाषक॥अगतासर्ववीजानांगहृतांवस
हासुखान्॥ॐदंष्ट्रत्वामसागीतंप्रवृद्धवानादीवकुक्कं॥साथापमंजगत्सर्वेष्टववादिउजंगमं॥दृष्टमानंमहाविचंलीना

३१

काहासुवकुजं॥दयेवकमदायसदजायानिताहिकं॥धर्मकायंवनिर्मलंअदिवृद्धस्ववृयकं॥वावादीकल्यमासायथागरकु
षूपुत्रयं॥अवार्थविक्रवयश्चमध्यमानयागाववं॥लघुंरत्नयदहीरुमहामध्यमवकक्षं॥सिद्धाकगववामानंप्रतिपे
अप्यगववं॥सिद्धाकपुत्रकाहानंसासायश्चानमानन॥हृयंगुवृमृखात्सर्वसपक्षिगवृद्धगववं॥वालजगिनविह
नंअगववानिर्मलिकं॥ॐत्यादुरावास्वामीवृजवावासाकासर्ववीवसमायागद्वजसत्त्व४पवंशुखं॥॥ॐतिगीवृज
वावादीकल्यमासाकुरुवाजवावादीउत्पलिलकहासुखसंवालकर्मरत्नविधि४पटल४षष्ठम॥॥अथाग४संप्रवञ्जा

वाक.

मिसंथायातुयथास्थितिः॥ पूर्ववृद्धेयथादिष्टं मया युका स्यामिदु॥ वरुसम्वनरगावांवादीयागसम्वनः॥ सांथाजातु
समृद्धिं पमसम्वनकर्मकं॥ वरुवादीयागिन्यागथासमयसम्वनं॥ श्रीमादनीकुदुकीवनलसम्वनकंविदु॥ पृथुगुस्ययंसाः
थाकथं वजादिसम्वनं॥ कोरुद्वनंममस्वामीवरुसमयं तथागतं॥ यमवकं तथा वलं वरुवादीयकथंरवतु॥ पूजाकृत्वा तथा वरु
दुष्टादंसमुकाक्षयतु॥ वजाबंधाशुतंज्ञानगत्वाठिरिववरुकं॥ सम्वनं विषुवरुषु उत्पादं वरुसंवनं॥ समयं सर्वनाडीनां ह्यं
मार्गततायिनां॥ सम्वनं सर्वसहावंथागसम्वनवमम॥ पमावधूतिकीनाडीषड्भुजनिववासीनी॥ सम्वनकषु वरुषु पमसम्वन

३६

नृशका॥ वरुसो गगमार्गवृद्धिद्यादृष्टुमार्गिकं॥ सम्वनं वरुषु सम्वनं सर्ववर्धुता॥ नलमसुकावरुषु महीरिलाचतागता॥
सम्वनं पाक्षविद्वत्तुसम्वनं मंगं॥ ययदक्षकहिरुकि सुफमाह्वानसम्वनं॥ काकाक्ष्यादिषु नक्षत्रायाकाद्यलक्षणा॥
नवसर्वसमायागं कासम्वनदाकयु॥ वरुलीहालगतित्यं प्रणिनात्यं वधूरिकं॥ ज्ञानजकं गगायुहिविषयका नष्टविक
क्षात॥ वाधिविरुवं यानमध्यातुपवमगुक्तनूपकं॥ वरुवाक्षगथाख्यागागमगमाक्षरुमं॥ अकस्माद्गतेनात्म्यमहामायाकु
नूपकं॥ यागसाविरुविरुवं यागीयास्यलक्षं॥ वरुक्षासिकं नूपं विदुसर्वथाजितं॥ लक्षकं कर्मसांभो वजागि सर्ववर्धकं॥

वाक्य

मीलनं वा नाकिकं हानं व सुखरावकः ॥ समसत्त्वं ते विद्यं इत्यहमिदं नानाः ॥ रुवसर्वगं ह्यदि वरु नाय सज्जकजं ॥ स
र्वममाज्जनामरु विधसागतिमार्गयाग ॥ वागमाया सदा वायं यमदाकः स्वयं पर ॥ नामाक वगथायागं म्हासहजकामिमां ॥ वंममा
नं सदा सल्लिदी पवरुषुजककं ॥ एवं सफ विधवा रुसफ विहानलकलं ॥ अविश्य वरुदीया अयु विहानलसदा र्हाव ॥ पंचविंशतिर
त्वात्मा वृद्धा कुरुतु रुदुना ॥ वरुवाजादि ह्यन्यानां पुकृतिं यन्म कथा ॥ पुलाखनं सर्वनाम कर्धर्मधरुसलकलं ॥ माकं वृद्धगथा ह्यः
नं वरुसत्त्वं मार्गकं ॥ धर्मादयं सदा यानं गुह्यमरु नय विरु ॥ सदृजं समाजवेगलं धीवानादिकल्यकं ॥ मदाकनूला पकनेना

३२

त्मा सर्वसत्त्वा अहं यं पुनः सुखरावकं ॥ तस्मा धर्तुवत्समं सदा समुद्रनूपकं ॥ आसमनाय नयल्लि सत्त्वा वृद्धगुला स्वयं ॥ नचरेन
वकाकमूयथायनिष्ठमं गुरुं ॥ वरुनात्सर्वकल्याणां प्राप्तिमाया सत्त्वं कलं ॥ सदा मरुयात्मकं सर्वजनिता विह्वकं ॥ संगाधर्मनीकः
अमदुर्लभा वरुनारु ॥ दयं नामा सत्त्वा रुष्यमदा म्हालकलं ॥ त्वा मासलकलं रुमीयथा वदनूपूर्वसः ॥ आनं दीमदनानात्यु
विह्वया सर्वथागिनी ॥ नामादि सर्ववक्तृत्वाती मार्गान्गमिनि ॥ अथवालागि सदा माया सत्त्वा पिनी ॥ नासिद्धस्य वा नवसंक्राकिव
विसंखया ॥ वरुवानादिदवी कुरु सचनं नामयल्लिगं ॥ ह्यमवर्धु निरादवीः सायासाः ॥ षष्ठ्या किनी सत्तिरं ॥ रुद्धा विधवरावप

वाक्

सर्वगुणविस्मिता॥ वज्रवानादिबुद्धगुणगणकूलानगा॥ (६) षष्ठकं यागिनावीनाथ सर्वसंहरा॥ दयान्वज्रमधुवि
नादिवर्षं षष्ठकं॥ समरागवज्रगालखावज्रपद्मवज्रस्तथा॥ खड्गवत्तकठिकादुमालाहयासदाकृता॥ वाक्काविष्णु
कर्माश्रमस्त्रावलीवसर्वग॥ हांयाकनकूलालियागिनीयथनायिका॥ यूनानूपासत्तार्थमुनिधानस्यलक्ष्मीं॥ रुद्रकल्पस्य
मश्चवक्रगुरुविष्वादिनी॥ गलानगाहयादेवविपत्तानवदीपक॥ लघुजंबूदीपवायिभूषिणाकूलानगा॥ (७) षष्ठपक्षदीपा
नांरुथागणकूलकृता॥ गलालामाजगत्सर्ववृद्धकाटिपदाहुलां॥ मागावसर्वपातनांसत्वरुद्रकवत्सूटं॥ रुद्रनक्षत्रक्षेत्रमायसा

४०

माकर्मकं॥ ज्ञानानामवायुच्युनाठिकी॥ ज्ञानवत्तकवास्त्रेवक्ष्यमानन्ननद्यति॥ वदहायागीन्यामासक्षान्धवायव॥ स्य
दकिनाठिनाठिषुठल्लिंबवयागिनीं॥ सर्वनाठीसमूहगुणांउत्कर्षणिकक्षान्॥ स्वरावक्तुविहयाद्वसादिगुणारिःकृता॥
केसुविष्वादिनायादंक्रमस्तनकंवहू॥ ठीसमूहगुणांमूकर्षणिकक्षान्॥ यागिनयकलावक्तुहांयानिर्वाणलक्ष्मीं॥ निर्व
हांयामाहंवद्विष्वाद्यनामकं॥ नजानामिकथंकरुमयावयसंरुक्कं॥ नवृक्षानववाधिसुधर्मकायादिवक्तुक॥ ॐदीयानां
पसादपूजसर्ववद्विजातिकं॥ ॐद्वियंवत्तसत्तुक्तयावरुणिसत्यव॥ कित्तिद्वियादिरावत्तंश्रयापूजसत्तिरं॥ रुद्ररावस

वाक

ग्रीवारुस्यपदार्थयत् ॥ पूटीरुदार्थयत् ॥ कुशिलस्यदार्थयत् ॥ सुनंदार्थयत् ॥ सुहीनाकस्यपदार्थयत् ॥ मदनीदार्थयत् ॥ सुत्र
कंठस्यपदार्थयत् ॥ रुकटीदार्थयत् ॥ सुहिखाकस्यपदार्थयत् ॥ ललाटदार्थयत् ॥ कुकीठरुदुक्कनकु ॥ वामनयागियानाडी
आकिन्यावामनसदा ॥ वामदसंपरासीववामदस्यपराकिनी ॥ सुहींदस्यपरासीवसमयीसाविरीतक ॥ सुहींदवार्थयत् ॥ ४२
र्याकुलवीर्यप्रजायत् ॥ कुलक्रियानराजतिजयतिस्वकुलविद्यांसंलिख्यतयदाहिनः कक्षपनं कुर्यात्स्वहिनां वामपा
निनां ॥ स्वविद्यांसं नक्षत्रस्यधकविषयादिना ॥ गणेशविदूकवापिनाहिकायांकुगाभिलिं ॥ किर्यगृष्टिः सदात्ताकः स्वविद्यांव

विनीकयत् ॥ सहावंयाक्रियागिन्यासमर्थखलदलरा ॥ कयात्पनहुरवदाह्वजवकुंठुवामलं ॥ हांखलिहलं वसंयकं लि
खहृगृहनमं ॥ सद्यमासप्रिया निखंलजादयनाहिनी ॥ वानादीकुलसहृतासदजामिति कथम् ॥ द(हाय)हाकिजायकथमि
नीनांसधत्सदा ॥ पी० जयपी० कृष्णपदपृष्ठदापदृष्ट ॥ रुमलायकायमलायकं ॥ ह्रमहानवापह्रमहानं वज्रचूदीपयवस्मिता ॥ पी० ३
जागंधवीरथा ॥ आठियानकथापी० पी० मद्रुदभवव ॥ गमजवर्यपी० ० स्यात्सुथानामह्वनामयं ॥ दवीकादादिभानं वमालवंवापपी० ३
कं ॥ कामनूपीजयंकुमाजारिधानकं ॥ लिहाकृत्वायकं स्यात्कोहालं वापकृत्कं ॥ कलिंगलं याकयाचं डादं वगथेवव ॥ कादिकांवा

वाक

पदंदादंदिमालयविहावग॥ प्रगाधिवासनीमलायांगुददवतभवव॥ सोबाहसुवर्धुदीयवडपमलायकदयंमलानंया॥
टलीयुहमलानंसिंधूमवव॥ मनुकगादयस्तुनमयमलानकथन॥ वाक्यपी० गथायागासश्चासंददकथगाखदद
नडिकानूपपी० नामतिकिर्हिगा॥ गदुपंदवताकांनंगनाश्चासयवसिगा॥ गगनाखिधुमयंददंसर्ववृद्धसमाश्रयो॥ ४२
पी० पुमदितारुमिनूपपी० विमलारथा॥ कण्ठपुलाकनीरुमिनर्वस्तुत्यपकण्ठकं॥ रुद्रादरिमूखीहृयापदुद्राद
सदुर्ज्ञया॥ दूतंगमतिमलासुदवलाख्यापमलका॥ मलानसाधुसगीवेवधर्ममथापमलानकं॥ हृमिपी० दिसंजु

द्विकथयामियथाक्रमं॥ पी० अयपी० भवार्यानिर्मलारवगिमानव॥ रुवनात्रिमिर्लसंनकनिर्विकल्पनधीमगा॥ नानानू
यविनूपिष्ठाद्यालारुदासलकयत्॥ स्वाधिवदवगथा॥ गनहूकावसर्वनादिगं॥ सिंदवदिवनयागीसर्वलंकाविवर्केग॥ दहं
नंमर्जनंयायश्रीघुसिद्धिपूजायन॥ लूलादरुगवानस्वामीवज्जकगथागन॥ सर्वदीवसमाथागाद्रजसत्व॥ यवमुखं
॥ ॥ गिगीवज्जवानादिकल्पमहागुरुनाहोयायाहिलकलमरुनासमदकसुलावलकलपटल॥ सफम॥
॥ ॥ अग॥ पनंपुवकासिस्त्वानादितकाम्यया॥ दौमादनियदस्त्वित्वावादिस्त्वयंपर॥ वदुश्चकसाजयूनाडि

वाक

हातं विंहाति। तन्मयायं यथानामवकनकलकातं॥ माधवकी कलिं गवः शुकर्षुकी सद॥ सनीसो नारु मलीय वंग दव
डीव कलिं गकी॥ माव वीरु मदा लवी वनदी काम नूयिणी॥ जदली रविदही वरुता वाव मागधी॥ गिल मूदि दय वली नेयाली न
समासिनी॥ नायक नी वंगली खाडी वदलिकलकी॥ सुवर्षुदी पि सिंगली वडामडी वकर्ण वकी॥ सिंधुदि मालयी वडी कनूनी
धनी यथा॥ ऊऊ वनी वनूला वडादिया नलपाकनी॥ जालंधनी अर्वदी वकलानी कोहालांकनी॥ ऊयं गिणि हाकं वली वदनी पून
नादिका॥ मूमनिकां हाऊकी चरुंगालिकी गृददवनी॥ यरायूनी वरु नयल वधा पदलवी॥ ममहा ननी डय ममहा ननी मसादधिठकी

४४

खली। मूदी व सर्वदहा की दवी वरुष्षिक माग॥ हाहि वरुष्षया गिगा विरुया कल नाठिका॥ सयं वक्रतथा अरुधुगिका सर्वग
मिनी॥ यथा गदवी काट्ठ ऊयि विरुया कल नाठिका॥ काला मूखी सिद्धि रूमि मादनी कोमानी योविकी॥ एवं सर्वददि सुनमा
याका नमूकगिणी॥ कलवकं वदवी वरुष्षिक वननायकी॥ धोरा हो वमहा रागा ऊं रूला वाउ होयूरा॥ लका हाका मऊस्यदाग
धर्ममा साहि वसायूया अरुसयं रूव विरुय विरुष्षिका॥ वदसायये यागुहि सदवादिनी॥ मरुक ममसा दवी वक्र हा विंहा नालि
का॥ हागाऊ ममू सर्वग सधि मरुगुगा॥ कल कनाली विरुदी नदिगीगा विनायिका॥ वामू छी घाल नूपा कुड्या दवी सवसगी॥ रदका

वाक

लीमहाकालीसुलकालीपुत्राणि ॥ जयावद्विजयावेवजयंगीधावदूनीव ॥ नृदिचलीवतुपाथामवासिनीनोडकीकंवाडीजीवी
वकुलीसांगीवासीदीसुडीका । नाऊपूनीमहादीपिदियामदपूत्रिका ॥ नृदिवंनडीवकुडीमादनीपगामिनी ॥ कथयन्तुममस्वामि
किंमयाउपपन्नमिनी ॥ धातुसर्वहानीवकुडीमादनीमरुतावया ॥ रूपाएवतुजानीयाद्वहारेनारुत्यकतु ॥ खलुंखलुंगगधकुवृथ
वायहायानतु ॥ उकालंशुविगागनजुष्टगरैषूलकक्षक ॥ आवायगयविल्लनंयादक्षायधकुसूअलयकवियानीयाकर्मजीमा
दनीध्वनी ॥ दार्यमानंमहापायंमानक्षसर्वधकुकं ॥ गेयसत्वाधिगडीवकुडीमादनीसर्वकर्मकंनावकीववयागिन्ध्यासुसंजाकाधिनी

४५

पवां ॥ मीनवायकालकुक्रामारुल्लुलकवनासुववगजवलीदीयमहावागसुगवनी ॥ नारावकावकीयवीसूईपायदमाशिगा ॥ स
फणिंक्षात्मकमधुउत्पयकिस्वमकुजां ॥ उर्वैवजवकुडीमावकुडवावदिजकाजयकीहंयदवदुस्वामीदायहंहंरुदुस्वामी
॥ नृदंमकुपयागनमकुलंसर्वकामिकं ॥ एकेकस्यादवीनांमधुवतुशकुजां ॥ उपायपुल्लसकंसर्वधर्मादयेषमधरा ॥ वदुर्वावस
मायूकंशावलेनविरुषिगंखायमानंमहात्मासुखेववानादिनादिगं ॥ दडीवकुंडुक्षमात्मजकिनीदकिमात्सकं ॥ वावादीसर्वमांसं
वसमयंसर्वयागं ॥ मकुसर्वगाल्लानमकुदववावकं ॥ सर्वसत्त्वपूयहाकंरुजागिनिकल्यकं ॥ यदिजुद्विकंमकुलियगानीव

वाक

संनितां॥ नाठिकां ध्रुवं ध्रुवस्तु साका वरुसहकं॥ मरुजातु विहं हिजापादा रुनिवाधना॥ दहादहा सुसंवावं मधुवागता न
॥ रुफिः कुर्यात्स्वयं कुरुषु देवता वयावयत्॥ यरुखासन किल्लुया मयघा वक्रुः वरुमाया मयमानु मदिग्य द्यपीठ यत्
नववावं ध्रुवीजरा वयव्वीजादिना॥ अथ वा सर्वनादि मरु न्या समिदा क्रवेः॥ मकटक्रम सोमवद्युगमा मकाठा टरुनामाः
किदनसनाटि वंसादसुसिजापक सिदिवुक्रुजपजावडालं जाजकाका कंजगि वंलपूमकां रग्य वपउस्मउमखला॥००
किना रिः पुददुद मजालिमाका ०० गिदिद यवस मखमवना मगायुं सुविमृषिलन ॥०० गिकष्य व॥ रुकरी नमी

४०

गिवा (धा) उसरु मसुज्जा विज्जना ३०० वक्रु गावोका ठा वंमा वासुन ॥०० गिमरु कवक्रु ॥ अथ वा मरु यादिनात्मकं॥ मधुवायक
वंसवा दयं पुरु कवक्रु ॥०० दंयसु मदाधी मां पाहा वायु विधाय ग॥ वक्रुं कसमसु यका वक्रु यमदला कृतिं॥ वक्रुनाका नसवक्रु पं वसु
गालिया टयत्॥ मसुषा ठहा वोषष्टि हा किं हा मसु कं मगं॥ कर्षुका म्हा नमा सायु म हां पाहा हाकि रिः॥ या वदवधुगा वायु म्हा वयक
वाद्यान॥ यदि वा ये वक्रु विग मरुं गी यगि कालिकां॥ धनिः पाहा ममाकी र्धु नवनाठी गुवाधनात्॥ नवनागं कनाय सुं नवनु निया मकं स
या॥ अवसादि मनें गम्य नगा धिं मवला ककं॥ पं वमलुल नावाध वा सयत् सर्वयक कं धा रु नायत नाना दिरु कयद मरु या गवान्॥ नक

वाक

वर्धुसंस्तुता मादया यादुजु नृपकां॥ अथातं सप्रवक्ता मिहानिकादिप्रयागरा॥ यनलिखितमायं साधकसिद्धिमवाप्य
न॥ कंकुमेष्टनैर्मिश्रलिखकलगाप्येयदा॥ सजानवकवकमालिख्यसगादनमरुयाजिगा॥ वाकावजावलीवसामथः
ग्रामविदर्हिता॥ नयहुविकल्पद्वामृथवासनागदषासंपूठलि॥ गायिकं कर्मसुखसुखलवषयम्॥ पूर्वोरिमखगिरवः
सुसिगपृथगज्ज्वयम्॥ पुनरग्यमुमलुलापविसंसाधं दृष्टुसिगकललोच्यदामृगादकविपूनिरेवलिषिष्ययम्
॥ अथ सजाकनसकुंजिसंधमविसंकिं॥ हानिस्वस्ययनंवदसंवदीर्घायूरुवगिरकलं॥ कनवपिदं ह्यवामदसुम

४०

शवयम्॥ वदनेष्टलिखकं सुवधूपेष्टयम्॥ वल्यदकथागिरिकं साधजायगरा॥ पूर्वोरिमखगिरवः
न॥ पूर्वोरिमखसाधकयाजयवविवकलं॥ यममरुवनं ह्यष्टं हानिकादिवनकमं॥ कंकुमेष्टनैर्मिश्रलिखकं
न॥ सनवदयलिखकलगावदनविदर्हयम्॥ पीगसुखलवषयम्॥ उरुनारिमखगिरसंधकुरुपीगवर्धुचिरा
वयम्॥ पीगमलुलवकलं साधं दृष्टुसिगकललोच्यदामृगादकविपूनिरेवलिषिष्ययम्॥ उच्चनलोच्यचिरुननिर्विकल्पनवन
ता॥ अमृकस्योष्टिकं कुरुखादा॥ वावसकुलविदर्हयम्॥ धनधान्यं समृद्धिं वलक्रीकसमागमं॥ यतस्त्वयथागमपोष्टुर्वगिरा

वाक

न्यथा॥ नक वद न नानक ता मिकानक मिजयत् ॥ कर्णटुर्कपुत्रवा द्वयं वक्र समालिखत् ॥ अमस नाव संविंत्त सा कान विदर्य
॥ नक सुष्ठु वा षि लानक पुष्पेर्वयव स ॥ घृत मधु मा ध्य सु वक्र ता वा र्य मू संसृष्ट ॥ पान्थि मा रि मुखं न कं वक्र वरुं चिरा वयत् ॥ न
क मलु ल मा ध्य सु सा ध्यं न कं वि वि क यत् ॥ ऊध मरु मा वि वि न स फा क नं स ना दि गं ॥ वि क ली रू पा द याः प गि रं सि द्य ग च वि वि रु यत् ॥ य
दा व सं ना द्य दि घृत मधु न हि रं ग म व म रु ख दि न म वे स्ता य यत् ॥ दूरु मा सु र मा र व गि य स्य क स्य चि ता न्य था ॥ म म न व ल क न रु ख वा
कर्ण ट वा ला कान स स म चि रं ॥ द्व य व कं स मा लि ख ज ४ जां का नं वि द र्य यत् ॥ मृ ना वं की क पा लं वा वि लि ख च क सि द्य मि ॥ न क सुष्ठु वा षि

४६

लानक पुष्पे वा वयत् ॥ सा ध्य सु द द यं मं कं ॥ वि वि भा ग ल क पा ॥ न व न्च यत् ॥ य स्य वि वि क सा ध्य ना ग द कि क दा व न ४ ॥ स्य दि ना न ल का
वा ग्नि ता प य क ति ग द ॥ न न ग रु ल अ मू का क र्ष ण ४ ४ का व सा ध्य मा रु षि पा दा क र्ष ण मू रु मं ॥ अथा ग ४ संप्र व आ मि सु रु
न वि धि मू रु मं ॥ अ स्य सु ल्खा स मा या क उ न यं वा ण का षू का न् ॥ म ॥ अ ग था द ण का रु रु ह न्य दू र्या दि व क ४ ॥ को ना का ना न व का ष न व का
षु व रु ४ का ॥ ल य व ति ग ४ ॥ रु वे का ॥ ल व स र्व व ह न्य का षू का व यत् ॥ दि मू ख म रु स मा था क लि ख म म न क र्ण ट ॥ द नि दं द नि ग ल न सं सि
हं द य व क रु सं लि खत् ॥ सा ध्य ना म रु वा दा य लं का व द वि द र्य यत् ॥ अ स्य गं ग स म व लू स ना व सं प टी क रं ॥ स म नू य नि मा द च म लु लं व

वाक.

साधु संलंका नं रुगं विरावयन् ॥ विष्वक्कला वलुपी गसुखा वषयन् ॥ दिरुजदि मखाका नना तस्य दं विरावयन् ॥ दक्षिणा रिम
खया गी नक वलु विरावयन् ॥ साधु मवस (सं) मवसा का कलावयन् ॥ गगाप निविष्वक्कला का नाप निविरावयन् ॥ स्व
स्थान वरग ४ कला हा फलां मुख सुकनं ॥ सुकय सर्वसे बकुदय कु सुकनं ॥ ॐ सुकनिसु सुहं रू लंद वद सु सु य ४
॥ ॐ गृह गृह रू रू लंद वद सु सु य ४ ॥ ॐ गृह पाप य गृह पाप य रू रू लंद वद सु सु य ४ ॥ ॐ ज्ञान य सा रू ग न वि
या वा ऊ रू रू लंद वद सु सु य ४ ॥ ताथे व पूर्व कर्माणां लिख वृ कं सु नि ग्या जू र्व य गृ पी ग पथ ग वा क सु सु न मरु

४७

मं ॥ वक्र दयं समा लिखा इमं न कर्पट सदा ॥ साधु नाम विदर्शं वं का वं मुख वधनां ॥ साधु मवदय प्रवक्ष्यामि ता वि
दि कयन् ॥ माद नु मलु लम (सं) क नु व सं पटी कनं ॥ जय लु म विरु नं सु कि र व नि नि गिरं ॥ अथान्य ग म सं व क्षा
वलां विधि नि गिरं ॥ नाजिका ल वल कुरु ले वि चय नं विष कथा ॥ धरु व वि गा ज्ञा व ग रू नि का न क ला वा ॥ य ग व सु
म सिं क ला द क्षि ण रि म या ग ४ ॥ का क य क सा ल ख सा व क्र दयं समा लि खन् ॥ साधु नामं ग गा रू रू का वल वि दर्श यन्
॥ का (सं) धा न ना द न प्र ला ली ट प द न वा ॥ सूर्य मलु लम (सं) क ल्या ग्री व वि रा व यन् ॥ नी ल वि क ट क वा ला सं रू का व

वाक्य

कष्टयुनिनं॥ विकृत्य कष्टल्यसं वल्लभानां गमनमध्यगं॥ यत्कृत्यादिसंस्तुनसां दृष्टविवक्षं॥ मलिनं जीर्णं दुर्बलं
विविकृत्यं॥ सर्वांसां सुद्विदयवाक्कमकुविधा विकृत्यं॥ साधयवास्तुतादसास्वददुपवक्षयं॥ ज्ञान्यगुप
मिव दृष्टमात्रेणं विविक्त्यं॥ सुलयत्काधसंघादानां गमनां कृत्वा यत्कृत्यां॥ खलु खलु यथा कृत्या कृत्या कृत्या विवंति ५०
व॥ मकुञ्जययत्सगं पिवन्ति नृधिनमवव॥ खलु दलु सुबलकु कृत्या नवकु मूनं॥ नादयकु दयत्साधं॥
गधद्विद्यमानकं॥ काकालुकगुधं गमनादसुगकिनी॥ गवां कुधमाननवकु दयन्ति वपिवन्ति व॥ मकु

वजाययत्सगं हंरुट्कानरिणं॥ मान्ययकु संघा नानलु यावका विष्ठा॥ अज्ञादिमानलं कर्मसा नलं नवमानलं॥
विकल्पमात्रं संमानयत्साधमानसं॥ गत्येव वकु दयं लिखत्कानलदिदरुयं॥ साधना सासदाय लिखत्संघाया जिः
तं॥ अज्ञमदिषसमानुत्साधं दृष्टमात्रेण लिखत्॥ कपालं संपूटास्तुनी लसुगलवक्ष्येत्॥ सध्यां ककु नविकननागं कस्य विष्ठा
षगं॥ वकु वकु वकु यत्सगं गमनादमध्यगं॥ लिखन्मास्तुपयजायमर्चय विधिपूर्वकं॥ अज्ञमदिषया यज्ञं विधुषं कूनगं क
हाकाधकाधं॥ एवपक्षायुज्ञो कृत्यामदात्मना॥ अन्यान्यं कलदं कृत्या विधुषं वरुति नान्यथा॥ गनवा विधिना लिखत् हंरुट्कानवि

मानं ब्रह्म कर्तुं माया लक्ष्मीं ॥ त्रिविधा नृपकायं वकाय वाक्किल कक्षं ॥ गला मन्त्र नृप नृप कर्तुं नंदर्यं लभं ॥ यथा विधा
 दुक स्त्रि लोका विधेः अन्य विधेः ॥ विश्व विधेः प्रणि विधेः संस्थला कक्षं ॥ संवा विधी नाय गाली वडया ययू नृप कर्मणा ॥ अद योसे
 वाक्. पत्तां संकृतं नय क न क नृपिणी ॥ नृपां विषया विधा गषू लक्ष्मी नृपिणी ॥ दिल कं लक्ष्मी यल कं लक्ष्मी मानू यल लक्ष्मी ॥ नलः ५३
 कं (ग) वन सापिल कक्षा सापि मा वलः ॥ यथा काचित्स्वप्नं य (ग) सुत स्वयं वप ध्वति ॥ यत्न मान व कं द कि नृप गाल व नृप कं ॥
 एवं सर्वं लक्ष्मी यत्न सत् स्वयं मन्त्र मन्त्र सत् नय व व मन्त्र मन्त्र सत् कं ॥ मन्त्रा विधेः यं सत् विधेः सु व न जंग न ॥ एवं नृ

पंयथा पूर्वं सहावल कक्षं ॥ नाकिं कान पजा य कि जग मं वाल या गितां ॥ या गिनी वन लक्ष्मी जग न कि दे व जग नि ॥ वा दिसः
 दा व लक्ष्मी नृप सापि जाल लक्ष्मी वि ॥ जग लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥
 तो ॥ या गिनी पति गायि जाल लक्ष्मी मन्त्र मन्त्र ॥ वी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥
 लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥
 नः लक्ष्मी या गिनी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी नृप सापि दिसा नृप व लक्ष्मी ॥

वा. ॥ उदानमदानधामासर्ववधागतं क ॥ वेवावनवलसंवनागाभाघासिद्धिकंभूकायनावनारुक्तंमामकीपाशुलवासिनी ॥ ना
 नानुपवकावहादगन्धवससुधा ॥ स्यर्जवधर्मधालाखांकिगिरारखगर्क ॥ वरुपादिलाह्वनं सर्वसावनक्षरदकं ॥ मश
 गोमंथययं वयमस्यवेनीयल्लनकं ॥ पमाककविघ्नोक्तावलानीलदलुकं ॥ टर्किसदावलासुननाजालीषवकवर्णिनी ॥ ५४
 कूटीपल्लुहावनीववजसल्लु (हाषकं) ॥ ल्खवंगुनामश्रुयायरावलकलं ॥ पल्लनल्लखयंरुंल्लखरावसदासिद्धि ॥ वाधि
 पाकि कधर्मसुविनस्यदान्म ॥ कल्यादादिकालसुगममन्युसंस्थितं ॥ खलुकपालादयावीनानामंवाकायनादय ॥ रा

वरावषपयायंकुलवानकसंख ॥ संवाविहीयदमाहितुवीनखवनात्रिहृत् ॥ नूपरवदपंतीयतसचनंसमं ॥ अथागसंय
 वक्रामिमकुजायल्लकलं ॥ मलुलंवरुयन्यर्वप्रादवनात्मकं ॥ गिरिगकनकंरुषमदादधिठनमृच ॥ वरुषाथमलुपल्लन
 क्षमनवमनानम ॥ पूर्वाकविधिनासम्यक्पूर्वसवादिकानयन ॥ लोकिक्लाकारुनासिद्धिणीधंरवतिनानथा ॥ गकनवृ
 कसंकीर्णमलुलंवरुत्तदा ॥ साधयन्मकुंविहितमपहृदयंसदाजयन ॥ पर्वगिरिस्थनयिजपहृदयमकुत ॥ उंसर्व
 वृजजकिनीथहंरुत्सादा ॥ लकमकंजपित्तालुदक्षाननकुसामय ॥ लोकिक्लाकारुनंसिद्धिणीधंरवतिनानथा ॥ ग

वाक.

दिलिका॥ वेसावमासविहृयाहूमिपंवमीमगा॥ द्वावनिवासिनीद्वीकासंरुधमधाहुकी॥ द्वितीयधर्मकापक्षसं
रागजुसमुव॥ स्थातुनिर्मानकायदिनारिकुत्कलमनसाकथबंधवत्ताविदिरुयाकाकावगुयावकीका॥
अशिवानंसदाकप्रादिनासाधयनकक्षग॥ वागनामाकर्षणवर्षापक्षकुरुमन॥ धर्मधनुमेदावाधि॥ स्वराः
वासर्वथागिनी॥ धर्मसंरागनिर्माहंमिनीसूखवांछया॥ मनुसरावकर्मासाकाकिनायकगान्धुनि॥ वज्रवानादिक
त्यक्तुगतास्तुनवुकाकिंक॥ उरुगाध॥ दंसकुंसफलिंहागिथागिनी॥ उंवनजनाकारुकागम्यावयनकवीहंनहंसा

५१

रुयगहंरुस्वाटसाहंउंस्वाहंसाहं॥ निदीर्घजस्वरदषूप्रहापायस्वरावकं॥ जस्वपायस्वरावदीर्घपुल्लारिहायग॥
कमुवधुमसाधाना॥ अंजकिनीवसन्निहं॥ वाधिविरुद्वयस्माकदाकाकीहुकर्मगा॥ काकवज्रमत्यांका॥ वायूनार
किंकाकया॥ कमरकुक्रमयस्माहमाददूडइस्यः॥ काकवनावाहनंदृष्टगगाकाकवृद्धीपक॥ गगनामहासोखमनूर
वकिंकाकथाः॥ कर्मगाजायगपुष्पाद्यागिन्यायकमानवे॥ जूयूस्वकुगधागजवककुकाकखलुकं॥ पानमितानया
नाक्ष्यानयावमिगास्वयं॥ अदरुदाननवकांकाकवक्रकिंसादा॥ गणवकर्मकावेकुयववासियगस्वयं॥ कमन्नेकमग

वाक्य

त्वात्पनस्येवयदंखयं॥ कूर्तमासस्वरावषुडानस्युल्लक्षणा॥ कृतीनागसमानक्षुजाताथदवदहकं॥ धनंजयमसात्मान
प्राप्तवायुदिसंख्यकं॥ दुर्वलाहानिकंरुयंनदनागस्यरुफिक॥ तस्माद्वैपुथकुरुयाति॥ सर्वात्सुर्जयम॥ यथावादहारमी
वृषथमासदादहा॥ दहाति॥ साहुविह्यादहारमीधनंयगा॥ एकहमिस्वरावाहिर्महावक्रधनंमगां॥ दानादियावमिगां
यानूससंवाधिमदया॥ अकृगंरुषसर्ववक्रधात्वन्नीपनां॥ उकानूकं वयनिकिसर्वंवाधिसुखयकं॥ पुनःकाकावदवी
वक्रगकानलवृषिणी॥ कानहांकाकृस्थानंस्खिलं सर्वनाडिकां॥ अर्वायादिष्वयगां॥ गुनगोत्रवतां सर्वयाधिययन

५६

रुलखगां॥ हृत्स्वक्रामिसर्वरुद्रकसुप्रस्यलक्षणां॥ यनस्यग्विधाननसिद्धागनागसंहाय॥ स्वर्धुवक्रगंतासंवास्वटिकहां
खादिमवव॥ यजयहानिपुष्टिनुगुलिकाहागनाकिक॥ अक्षरुवहागंगुलिकयुष्टिकर्मपुहास्यग॥ नाजहाजपलंकुशीस
म्यहिसुधासवं॥ कंकुमादिगंधादिप्रवालनकवदनवीजकं॥ पर्यकष्टिपथागषूपंवाहांगुटिकासया॥ वृदाकविगवीजकुनना
स्तिरुगथेवव॥ दुष्टाखनमदिषास्त्वनालनखसुक्रय॥ नावनाच्चाटनंयाक्विधवाहागनिगुद॥ यथाकर्मविहाषहाअक
सुखंवाकानयत्॥ गदंशुक्रहोसुकाकपकक्षमिहिरं॥ सुक्रनाच्चाटनंकर्मगस्यसुखेहागष्टिरं॥ यदमदिषकहानविधवा

वाक.

अस्यस्यक॥ममनकनस्यस्यननामनमिषिगं॥कस्यस्यपुषाकवकनकर्मकुयाजयन॥कमानीककिंकस्यस्यगुकि
यकुकर्मक॥ममिककननीन्यस्यस्यकमस्यसदा॥अनामावस्यमिष्यकंययनाशिवानग॥अंगुस्यदवतानूयंसर्वकर्मव
याजयन॥अर्दकगुलिकासर्वधर्मधुस्यनूयन॥समादिनंजापरावनस्यकस्यविषयग॥कगपूजयदक॥गतायां ७०
दिगुलंजयन॥कयवगुलंजाकंकलिकापकगुनुं॥जयस्यकुमविदिनंवलानामकुनूयन॥पुत्यासामिदंजाय
मकस्यजदिसंगुदं॥उपलंरुदवतानूयंस्यनस्यसंदवसादिक॥अगतागरिसंविगंसांकनमकुगलन॥जयकाटिविनि

मकंरथतायावमार्थिकं॥परावांसकुजायस्यलकस्यविधिमूयन॥क्यादुरगवास्यामिदजठकस्यथगन॥सर्ववीनस
माथागवजसत्ययनस्यखं॥॥किंविदजवावाहिकल्पमदागकुवाजमकुजायाकमालापासात्यलिलकसांन
वम॥पटल॥॥अथान्यलकसंपुस्यलकासादुयल्लं॥कथगकावसंसम्यकायंवसर्वसंधिकं॥मिथूनंकि
वंशस्यसमायागो॥समासिग॥उल्लाहानमासायनानीपयथगमिनी॥उगनजाकलालीवहानमागदियरुमि
कसां॥ललीयंसदासायादवासादिजकवान्॥काकुवागनगदकियादांगुषाकदादहं॥उल्लासायनाममकुवडः

शान बंधु मकुव ॥ लयूली व सलया ख्या न सुसंमति कउकं ॥ का काम नूपसे वदुसर्व कउि यं मतं ॥ सर्व कउं रव तमं ॥
 लिका का व मखा तुकं ॥ सर्व कउं रव तम ॥ ध्रियया ॥ लाय मय हं कं ॥ पं वस्य नारा व कं या नि ह नारि क ह म रुक ॥ गुक्ष व सर्व ना ॥
 वक. ॥ नां थानि पं वा क्ता म क ॥ अक्षु जा ख क जाना नु न ना मू डो पया दूकं ॥ वृद्ध गुल्ल म की सत्ता पं व जा गिय स रु नान् ॥ उप दी य नि ॥
 सी व सं स्मि ता ना य क नू पि ही ॥ म रु मा ला प य ना ध्व स फ रि का त म जां ॥ डी व म ऊ दा उ लू क लू त्या का अ स्मा गि य सं क वि हूं रा हूं य रु
 रू रू स्वा दा दा रू हूं स्वा हूं स्वा ॥ ॐ ह्य वं म रु क ता मा प्र ह्वा पा य स रा व कं ॥ द वि र व लु म दा मा ना ॥ हा वं ॥ ग व ना दि स नि रं ॥ म ध्य म ॥

७१

लुल कं ॥ ला ह म ह्मा न वा सि ता द यं ॥ सं वा वं सर्व ना नी लां रु लि ता सर्व ॥ ग व वां ॥ ॐ द मा जी व मा धि ग्य पु रा स्त वा का न ध र्म ता ॥ उ वा ट न
 क र्म व या गि नी ला क ना य की ॥ क र्म नां नां स्त स रु मू ड का सर्व रु का न य ॥ सर्व वां था ग मा पू रू दं ग रु मू ॥ ग व वं ॥ कि रु क स र्व
 या ग क पि लु नू प मि दं व व ॥ प त्या दा व रु थ ध्मा न ॥ प त्या या म रु धा व ॥ अ नू स्म रि स ता धि ग्य प्र दि धा या ग ल क हां ॥ प त्या दा व
 रु का का ध्मा ड लू का ध्मा न मि श रा ॥ प त्या या म स्मि ता स्त ध्मा ना धा व ना या रु स रु वा ॥ अ नू स्म रि स्मि ता धू रि स ता धि दा ट की म तां ॥ उ
 वि ली पा दि नि र्द हा म थ नी सर्व रु ला तु जां ॥ सं सा वं म रु मा न रु वि ध्य ता था प म स्व यं ॥ स्त धि स्त न मि द लु मं व रु जा प स्त ल क

वीक

हां॥ विहनिधिं संवाधिं वयुगनवायु (हावकं)॥ निर्वा नाका वस्यं रूपा॥ तादृहां विहसुखतपह्यं कासुयागिरि॥ हाविनालः
कहां समुगुयन नाडियं जलं॥ उष्णीषामसिपयं रुसंधिगच्छिद्विधाना॥ पादांगुलीमाहो वरुमध्याकथवाह्युयु॥ लिंगः
मूलाललाटाकां वरुपादांगुलीद्वयं॥ नाडिकाजान्ताह्यं पादांगुलीकां वरुपादांगुलीद्वयं॥ पादकलाघदयो वनाहिरुपुष्ववसकमुठना
त्येव विहयापादसंधिमुजासक॥ गच्छकया वरुवापिमरुवकककद्वयो॥ हस्तसंधिपाह्यं वरुवाहसंधिमुनोद्वयो॥ सिंहा
संधिसंधिगुपिहलाकामलिद्वय॥ करिसंधिगुलवापिललाटाह्यसंधिक॥ वरुपुष्ववमूलगुडवृद्धयसंधिः

०२

३३

मग॥ असनावद्वृद्धवज्रिकायां नवनासिकं॥ कथागालकजिकायां बालकको वरुद्वयं॥ एतमादित्यनकायां नाडिकासं
धिसर्मषु॥ पीठयस्त्वस्ववा नववाधिविहसदात्मनां॥ गलयागविधाननरुगुमृसवाकया॥ नासिकिथिर्या नृगंतिथिमूलः
नाडिका॥ गुक्पुतिपदासुयावकुरुसुवाकिका॥ ह्यवाधिमहा नाडिउलकां मुखवाविही॥ यादृहां सुखकस्य तादृहां
गुलिमृदिकां॥ स्वासं तु तादृहां कुर्याद्वाकां वापिसिकर्मकं॥ अथवा सर्वनायां तु पीठयद्विदहादिकं॥ सर्वं च सर्वसंधीनां
यथावदनुपूर्वह॥ गच्छकयलं स्याली वरुमापातु सर्वदा॥ कस्मादकावा मुखं च वरुनं कल्पकल्पित॥ कथागतास्वसकं

वाक्य

कुतश्च नीवकल्पनात् ॥ यनयनदिवश्चकनालिकाभादमादतां ॥ मूढयष्टितानां वाक्शं अस्मिन्माकमहापुत्रः ॥ कावहां सर्वरु
मीव्यनं विव्यज्जकवः ॥ तस्मात्त्वष्टं सदा मागं पूर्वकर्मकृता यया ॥ नष्टा किं दमाकम्यज्ञासनं वृद्धमात्रया ॥ अथागं संयुक्तामि
दवका मलुलादयं ॥ नदसंयनभवं म्यसर्वसिद्धिगुणालयं ॥ सर्वकामगुणाकी ॥ लुप्तमिसंलक्ष्यत्तथा ॥ पंचस्तन्वाद्यदंकावदिरु
जद्वकथागवान् ॥ दिवश्चकुपाकावश्चुर्मखमकुम्वयन् ॥ अंसुक्तनिसुक्तं रुद्र ॥ पूर्व ॥ अंसुक्त २ रुद्र ॥ उरुव ॥ अंसुक्त
कापयगृकापयहं रुद्र ॥ पश्चिम ॥ अंसुक्तनयदागवान् विद्यानाजहं रुद्र ॥ दक्षिण ॥ अंसुक्तकांदापयदिह ॥ दूरमावाक्यगोत्र

७३

नं ॥ हंकावंहदयां राहस्यदस्मिन्मालिकां ॥ तस्मादहावटपुनरागुनवृद्धाश्च वन्द्ययन् ॥ पृष्ठाधूपादिवायूश्च मापयदन्तुनां ॥
वत्तययहं गच्छाधिविलं विरावयन् ॥ यनदिरविका मकुपनमदुखविनाहाकात्रिणीकनूला ॥ यनसखनस्मिदितायनस
त्वमपराकापका ॥ अंसुक्तावहुजा ॥ सर्वधर्मा ॥ सुखावहुजा हं विविकयन् ॥ विरुमाहनुवेकिष्ठाविलं रावने ॥ अंसुक्तानां
हानवृद्धसुखावात्मकाहं ॥ आधनाधयहं नुवेकादिविविरुयन् ॥ यंकावंनीलवर्णं हं धनं वायूमलुलं ॥ तस्यापविद्वंका
वमग्निमलुलनूपन ॥ नकवर्णिकाहं वृद्धां किं रुद्रिहं ॥ तस्यापविद्वंकावं विरुअग्निमलुलं ॥ तस्यापविद्वंकावं वृद्धवम

वाक्य

समस्त सुखनगसदा ॥ ठाकिनीरुगथा नामाखलुनादानृपिणी ॥ नमस्तथादिसंस्तुनसर्वसिद्धिः सुखादयं ॥ कृष्णसुखमकरनका
वर्गोनवर्द्धितमरुजा ॥ दिव्यजातकवजातुखवांगककपालिणी ॥ दक्षिणवज्रवर्द्धितव्यालिनंदयदनागता ॥ मूककक्षाद
ष्टीकलालवदना ॥ यंचमूडाविदुषिगा ॥ विदिकुववलावाधिविदुषिगा ॥ पूजयत्यंवा मृतंयुक्तं नृत्तगीतसुखास
वं ॥ वरुधनिष्ठिगादवीरावयदवतासदा ॥ पूर्ववन्नरुकाकास्यानीलादिव्रजावत ॥ उन्मत्ताख्यारुवदवत्तमावमूककक्षिका ॥ व्या
नास्यादिगथावकायश्चिमदानसंस्तुता ॥ मूकनास्यारुपीगादिव्रजावत ॥ आगयवेवनेमत्तावाययंनकादक ॥ १॥

७५

यमजगीयमदूगीवयमदृष्टियममथनिका ॥ विदिकस्तुनृगथादवीहोदिवृयोमनादवो ॥ यकासनमदाधाना ॥ यंचमूडाविदुषिगा ॥
वासकपालखवांगमादक्षिणवज्रकर्द्धिका ॥ यगवांसर्वथागिन्या ॥ सर्वसिद्धिप्रदायका ॥ नगकववदयं हस्तानवकंगलरावय
न ॥ समयवक्तुमावस्तुमूजामरुक्षयागिन ॥ अथकववदयं वक्ष ॥ उं हृदय ॥ नमः दिक्षि वक्षि स्वाहा ॥ हं हिरवा यं वा घट्ट
दस्तुचदय ॥ हं हं हावदुदय ॥ रुद्र रुद्रं सर्वांगवक्तु ॥ पथमं वज्रसत्त्वनिदिगीयवेनावनथिगा ॥ हृणीयपमनृत्यस्ववदवदुथ
गीहवृकाश ॥ पक्षमवजसूर्यगिषष्ठमपनमास्वनं ॥ घट्टिकववननक्षिगं ॥ उं वज्रवेनावनीय ॥ दांथायामिनीय ॥ जीमं मासि

नी ॥ ह्रीं संवा विही ॥ ह्रीं ह्रीं सुका सिनी ॥ ह्रीं ह्रीं वल्लिकायां ॥ सर्वा गवमु ॥ नो ह्रीं दितथा वकु विन विखा सुभव ॥ अंथा गः सर्व स
 र्माथा गहुडा दं ॥ वामदक्षिणा विखां सुहृदय न्यस्य कमल वदिका ॥ ह्रीं ॥ हृदय मूलादिद वस्य मरुता किनी जालः ॥ गुडा ॥
 सच नं ॥ १ वंथा ॥ गव न ॥ ६ सुंद वना था मं विरा वय ॥ धर्म सहा गनि मो ॥ ६ मदा सुख वक्र था जिगं ॥ वदुर्वि विना ना बी क्षा ॥ ७
 नी गहुं व ॥ ६ ॥ रिगं ॥ वदुर्वी विना पी ॥ १० नद दसं धि दुधा वय ॥ १ वं थि लु मयं वी नं सर्व वृद्ध समा क्रमो ॥ अद या का न था ॥ ग
 न्म विन्य दय हना ॥ विना नू कल था क्षा वय लन मं पदं ॥ ७ ॥ दरा गवा च जी वज्ज क कल था ग ॥ १ ॥ सर्व वी न समा था ॥

गा वृज सत्व १ य न सुखं ॥ ॥ ७ ॥ विही वरु वा ना हि कल्य मदा गुरु वा ज ह नू का दय नि र्मु य सं धि वि धा ना त्य रित्त क ण द ह ॥
 म १ पटल १ ॥ ॥ अथ न्य सं म दा व कुं षा ना स्या ददु र्द द ॥ १ ॥ थ न वि ह्य ग मा गु धा गि नी सि द्ध मरु तां ॥ स्या रु ख स गि था
 था गि न्य १ क म स्या कु म गि ख यं ॥ सर्व काल षू स फा व जा ग र सो र्वा म दा गु णं ॥ नाना स्म न गी ता रु सु खं वि द्या गि या त्म नां ॥ ६ गं दि द ह ॥
 धि कं व नि नू कि द ह्य ल क णं ॥ १ वं षा न ल क णं वि ह्य या सु ख दा य कं ॥ आ स्यं पु सृ त्ता रं षू प म र्म स वा नू द ॥ १ ॥ ग रा गं म द रु
 गं गी त वा दं सु स फ कं ॥ १ ॥ ह्रीं व सु रा व ॥ १ ॥ व पु षा दि ग ध कं म र ॥ १ ॥ प्रिय दर्शन मा गा दि मं द नी लां तु वा कं ॥ १ ॥ वृद्ध पूजा दि सर्व षू पि

वनिसूत्रपातया ॥ उद्यातं वापिका नीव विष्णु कंगमनादिना ॥ हृदि संज न ॥ हृदु गुनवाक सहासखं ॥ नवनानीषुं गानादास्य
 लास्य क्रियावया ॥ पशुता नाकुसं नाना ॥ वृद्ध धर्म संघं वपूजना थंदनादिना गुन ॥ नवनानीषुं गानादास्य
 वाक् क्रिस्ता दानवांगना ॥ ॐ श्री वाय (थ धर्म धूप वृत्ति सर्व कामया ॥ विध संतं वादिनां वृद्ध धर्म धूप यथ ॥ या गिनी याव ॥ ११
 शांति वस्तुलंका नद्यादना ॥ रावना दुर्घम त्याग द्रव्या मलना मऊ ॥ दानादि पात्र मिता नां कर्म सा सौख्य मिषा नां ॥
 मेरी कवृत्ता मदिगायका सर्व (हा व ॥ १॥ हृद न विष्णु नवा दं व सधमन यस्तु यना ॥ ॥ अस्मा सदान सर्व धूप या वा ॥

दविवावला ॥ दहा कृष्ण लकर्म रुया ० स्वाध्याय कायना ॥ वाधिसा र्गति धर्मा स्ववीना वाद यदर्शना ॥ कामनि
 नय कृष्ण मधुनि वासिनां ॥ ॐ हृद वा वस्तु मक कुदिनी या कथ रायि ॥ वृद्ध धर्म संघं वपूजना थंदनादिना गुन ॥ नवनानीषुं गानादास्य
 डा कथ रुआ लाय या गिनी नाकु वासनं ॥ धर्म संघं वपूजना थंदनादिना गुन ॥ नवनानीषुं गानादास्य
 नना नकं ॥ माया संघं वपूजना थंदनादिना गुन ॥ नवनानीषुं गानादास्य
 गाना नस्तु नस्तु त्यादना ॥ पुनर्मा र्गि संसा नव क सधमन यथ ॥ कलिय ववनं गृह्णाम कलिय का वव ॥ ॐ

वा. १०

कर्मकोमानीदय।।कर।।दोहलोमदिगंयनअसकुस्तवकसा॥नतनागयनवृद्धिजायकदूःखमाप्नुयात्॥दसिगांसकगिवावां
कर्वयूयगिगद।।असाधकवगवागंजीविगमुनसंहायः॥नादयकिपूजयकिवदिगंनयनंदयं॥कर।।नमवहांवाकं
ह्लागयंसाधकसदासंमुखीकर्वनयुग्मंयुग्मंयुथकयुथक॥कलिरवगिसर्वकोमानीमयकसदा॥पृष्ठातिनीकयशानदक
मूनखसंकिपू॥पूनरवगिकर्मादिनरुफामानसकला॥रुदक्षंवगसंरुष्टिसकुपानंवसर्वगः॥अकस्मादागमत्यरिह
सुवाघाटमादिदं॥गीतवाककगंवदंसिगवमरुमरु॥नाजबोवरयान्नाहकोमानीनकयधध॥नवकिमधूनापीत्वारु

यारुयाअनेकधा॥मदावा।।गरवकवांयूजाकालबूलकयग॥रुदक्षानिसर्वादिदिहिलाकयग॥अनावावकगोदोये
नाकुष्टोदवगांमम॥अन्योन्यकुक्थावृकाअन्यान्यंदसिगयेदि॥कियाकिउंसविहंयाकोमानीसुवयत्यरा॥रुदक्षमाभकगं
हृदिमृत्यादवागसुवक॥गहमानयदिपृष्ठनागकयदिसुचनी॥रुयकर्ममवाप्रागिदीर्घवागंवजायग॥पादंघर्षयगरु
मोस्तनत्यागार्थकाबहां॥यूजाकालकुक्थावृकाअन्यान्यंगदमयग॥गहदिकानुदिगंपूजयानसजितकक्षंयुगं॥कस्मात्पूजाय
यत्ननसाधकालकयसदा॥पूजयद्वजवावादिसर्वकामरुलपदा॥ॐवाहरगवावजीवजुजाकसुथागग॥सर्ववीव

वाक

समायागद्वज्जवादि कल्पकं॥ ॥ॐ॥ तिशीवज्जवादि कल्पमदातु नरुसखायवस्तुद्वज्जवादि पूजाविधिनिर्देशपः
टलः प्रकादहाः॥ ॥ अथात्र ४ सूक वास्या कथं न लघुविस्तृतं॥ पवृत्ति सर्वसत्ता (र्थ) निवृत्ति गदमुशि॥ सूक क
नीस्तु कर्मवृत्ति न गति दानकं॥ सूखीवज्जमखा वापि सुख वस्तु सर्वगामिनी॥ वाधिविस्तृतमदान दकनामृगकदनी॥ गत
यं सर्वगदि दुर्यगीतमनकनां॥ अष्टाष्टमस्य दवीगर्हायुत्या कलकदां॥ प्रथमं काकवदी जंयति रं माहुयप्रक॥ एक वाहि
वृद्धनय्या उल्लूक सन्निशं॥ मासमकथितत्वा रुखा नास्या सुवचना तथा॥ सूक वास्या रुसाखा सादा दीयानि विधाना

११

॥ इतीवा नमृगं पश्चादंष्ट्रिणी कर्मस्यारुनात्॥ मथनीवाश्चंगमादा सर्वसिद्धिरुलादयान्॥ सम्यगायान्तरमुश्रुत्या दहामका
दिनात्॥ पवृत्ति सर्वसत्ता वा विहिसर्व (गा) वनात्॥ द्विपटवृत्त ददीनां शाया मांग विक्षयकी॥ निवृत्ति गदना नित्यं हे दं न स्यर्क्षन पिच
पीतवर्णमदानोदी॥ ॥ ६॥ वं वृत्ति सन्निशः॥ वज्जमलुलम (धु) पुष्पा या यस्व वृत्ति की॥ ॥ ६॥ ६॥ व (स) कनामयदीयनिवा
सिनी॥ मंत्ति ताहुदवीनां स्वस्वक्षणा पकठिणी॥ ॥ ॐ॥ वंदं जं सुक वा लो वा स्या मथ हं रीरुट्टवट्टा दयत्त हं स्वा हं स्वा हं
टट्टादा॥ ॥ ॐ॥ तिस्रफठिं ॥ स्मकं नायकी ववया गिनी॥ मलुलसुहनाया मुला पिताथो गमारवी॥ सुखदयं मदाय

वाक्य

अक्षयप्रतिष्ठसुखातिशु॥काक्षसदयंपात्यकीलकानिहु॥मापयन्॥दाहिंहादययात्याववक्तुस्तुस्यर्धन॥वकासुलागिध
कंदानंनारिपमनुक्तसमं॥जिरागिकंचरुयंकर्षिकादलयाध्वन॥गदकहावांजिचकंमखलायातुतावयन्॥कतिरु
गिकमाल्यकवजुपमनुचकजं॥आलचकषुमाध्वषुदीनादवतुस्तुलकं॥गक्तुनिसर्वतादयाश्चसुनुतिषुचककं॥गान
हातिवानानिर्युसावानरागिकं॥गदर्वदिकावारिःकपालपदकासुथा॥धावलीप्रतिकाश्चनुतुलनावाध्वपट्टिका॥कमनी
षनुतुदंनमुदानीयत्रिकासुथा॥सुक्तागनिर्गतासुवीविध्यवक्तुमदायुक्ति॥किंकिलीजालवक्तुश्चपटाकायलनादिकं॥३॥

तदाहापुसर्ववननकादिसमालिखन्॥विध्यवक्तावलीकण्डालावलीकुमवन्॥गदासुवक्तुवायक्तुस्तुनूपनारुव
ता॥कर्षिकावलिययासुसुलुयानांगेवव॥गहययसवास्तुनुतुलावलिममालिखन्॥समक्षनासुकांलिखातुवन्ता
मादिसमकत॥वीजविन्त्यासकंकुर्याकर्षिकासर्वसक्तुवा॥सूथवाकार्यादिकेश्यास्तुनैसवमलुलं॥गथायिमटिगा
कावेवीजसलुलमाहूजन्॥यमदलषुका॥हावयंवास्तुनकवाटका॥कलाभायनिदयातुसुफट्टिगानिकावयन्॥कालसुक्तु
नदिगनुलप्रातुसुवगीविका॥मकुयुगमंवसं॥हायसुवलादिनोषधी॥गाध्यादकपलवादिनंवास्तुनपूवयन्॥वलिमर्वषुक

वा.क.

मेषुहावनादिसमकताः॥दायथत्तुवज्जयवीनांकुजयालादिकाधवान्॥यंवाभृतादिसर्वोभ्रसकप्यथाकादिकानयतानिर्विघ्नंरुवतसर्वजः॥
ग्राकर्मसमानशत॥नानागिर्यमखादवीसफ्रिंहानिभूयिका॥कर्मवजाविरावत्तासमाधिप्रयथागवान्॥वासफ्रिंहकवावीडासुवक्षस्यद
(होयतां॥मलमुखंस्वकनास्यानवगिर्याध्वत॥कथापनिसमासफपंवाहिकंरुस्ययत्॥दक्षि(हस्तान(गमायमाऊनंयाघसिंहकं॥शमं १३
वदकिहुवगाःखनंवेवयथाक्रमं॥वाममदिवह्नीवकद्वयामकन(हस्त॥गलुक्कमवमऊंवयथाक्रमवृत्तयत्॥अदिना
लकुकनाहुडाडमुखंकपिवलक॥गनूठगृधकाकमुडलकवकसनकं॥महातलीचकवाठंसयूवतासवृत्तकं॥पानायतमुः

सर्वपांसुहाववर्तुमिषतां॥मलुलस्यवदुक्तवावेसुहावरुधुधुषू॥सफ्रिंहानुलामावपुक्तयंविधायत॥कथापनिविधिम
खंगतिंकाधिकतासतां॥वन(हस्तसुगवृदक्षुआकाकवक्षिमध्यगां॥दक्षि(हस्तसुवृदक्षुआकाकवक्षिमध्यगां॥दक्षि(हस्तसुवृदक्षुआकाकवक्षिमध्यगां॥
अकामश्चवृदववृक्षवासुकि॥मदिनीगलपतिमुकायवकप्रवर्तनं॥चवमसुदक्षकावसुसाजातुमंजुकं॥धायमानसुवि
रुतदयाववक्षवृक्ष॥दक्षि(हस्तसुवृदक्षुआकाकवक्षिमध्यगां॥पनूठकदिवाहक्षुलरिनवसुनलं॥वृत्तमव
दलिकादलुवकिष्टिपालकं॥हंखवालकदक्षिकामयूनपिदकारुगा॥काकपदकविकावज्जिगुलुपर्वत॥लगुठ

॥ दर्पणवीनाकुगुलमागिनुदुस्ववं ॥ अगुगहनिगदकुदुडिदूरुखजालिका ॥ कवसंधसंधजाले लंवरं नववृपकुक्रमागु ॥ वाभयं
 बा. ॥ अखटदकमुखपाहाकपालकं ॥ धनूर्खवाङ्गपूकुकुपिकानिगर्हनीववः ॥ घंघनमालाहंखलं हिलारुहमहा नधूलिकं ॥ राक
 काउचर्मववविगवजत्रिका ॥ वाभनविकलावीवः सिलाहनिगुमरुकं ॥ कंकालंदकि कावेवमपुगुगु वरुकां ॥ गनिश्वनंकी ॥ १४
 लकंववीजपूनंकनपुसूचिकुकायकर्मक्षमघवृष्टिवृकाहिकं ॥ एवकमकुविहृयादासफगिगंरुमालिका ॥ अधिकमूकवायांचदं
 निवर्मविनृदकः ॥ उधुदुकगजावृदंहाठिगाविघ्ननाहनं ॥ सर्ववर्धुखरावारुअथवानायकवर्धुवर्धुवर्धु ॥ मधुमालादिसर्वक्षवः

॥ स्नाहवहानिकायजां ॥ एवंसम्यग्वायामत्रविहृयापवितिकां ॥ सम्यकस्मृगिसूयपरावरदादिदात्मकं ॥ समाधिजालनापूजयरास
 वसवलीनगा ॥ गत्वावृहसमाप्रागिनानागिर्यागिजंवां ॥ सुखरावयोधर्मक्षद्वयनित्ववृजं ॥ सज्जनडां ऊर्मदिज्जडासदृजुस
 दायंरुगुसना ॥ पूजुसंसावदृदृखनहाजियससां वृद्वजना ॥ ॥ अथागः सम्यवकामिद्वजयागिनियाविगं ॥ वाक्यागिनि
 संयुक्तपीथमहाहाकग ॥ अथादिरुगवान्त्वामिपागलकलमरुमं ॥ मृत्ययंकर्मजक्षेवकांसकंतामुनादजं ॥ समजंनूयजंवापि
 हुकिजंहांखजं तथा ॥ नालिकलवलं ॥ हृसंमथा न्यकाक्षनसमृवं ॥ गृगहवक्काकायंपावागकवि ॥ हावगः ॥ कखडुदिवखडु

वाक

लुचिखलुं बहुपक्षभवव॥ खटखलु सफतं ह क म स खलु पुकीर्णं॥ ब्रह्महा क प्रिया वेष्म ह्रस्वास्ती वलुं जा कथा॥ (स्वत न क सि त
 क्षमपी ग पि क्त ल भ व व॥ र ह म व लुं वि व लुं क्ष न ना व लुं क्ष की र्णं॥ दी ना धि कं वा क नू प ना ना वि धि स म क्ता॥ दि पू टं ग ऊ पृ षं व व
 ऊ का क प द क्ता॥ म्या म द क क्ष पी ग क्ष रि न ऊ क्ष वि तं र्था॥ अ ग त्स र्व हि नी क ण प रि का क्ता का न य र्॥ स स मा व ह्ना द (हा थि ल पां णु
 म थ पि वा॥ म कि क्ष सा ध य रु ण प र न क स ल क्तां॥ द क्षि क्ष रि म्ख व क्तां॥ ग घ य क रि ने का त्यां॥ व नू (हा व लुं दी न क्ष वा य य म क्ता द
 नं॥ उ ल वा रि म्खे श्य र्था सी क्षा न्यं म क्ता सि दि दं॥ आ चा नी व ग्ता वी व आ॥ त या त्या प द न कं॥ वो व म्मा धा म्खे व म्मी ड म्खे व र्णं॥ पा ३

१५

गर्भपि गी वा लुं वि लुं या पा ल क्तां॥ अ क ख लु न पी ० म्या दि ख लुं म व लुं॥ वि ख लुं सा ध य सि दि म क्ता सि दि व रु क्तां॥ हा ३
 कि पू षि रु प क्ष म व ट ख लु र क्तां क्तां॥ स क ख लु नू वे ष्य क्तां अ क ख लु क्ता व क्ता सि दि सा ध क नि र्ण लं॥ अ का क्षा त क्ता व क्ता दि क्षा
 णं क्ता रि या र्ता॥ वि क्षा त वे ष्य वि लुं या व १ (हा क रु म्द या १॥ अ (हा रं व ह्ना (हा र्ता व क्ता नी या वि व क्ता १॥ म्ती क या ले ग्ता या व लुं र्ता
 वि (हा र १॥ दी न द का वि द का श्य र्था व स र्ता स व॥ क्ष म द न व ह्ना क्ता क लि क्षा व प द न व॥ दि पू ट न र्ता व दि क्षा ग ऊ पृ ष या वि र्णं
 था॥ का म ध नू व रु नि म्ना म थ द (हा रु द ष्य र्ता॥ पू न क्ता द या नि म्ना वि का म वि मि रि म्तां॥ हां ख क्ता लु नू व लुं र्ता स नि म्ना वा व द र्ता नं

[illegible]

नातु वासवं ॥ धर्मसंज्ञासदा र्थमूकालसंज्ञातु वासवं ॥ षड्गिः पदानसंज्ञात्वागवाधनत्मात्मकं ॥ मायासंज्ञापदानार्थमूकालसंज्ञा
याकर्मनासखं ॥ पितृपुत्रगतानास्त्वकुत्वांवादिगमनात्मकं ॥ कृष्णसंज्ञयनित्यागमज्ञानत्वत्त्वस्यपादनं ॥ पूतमार्गकिसंज्ञावद्वज्रवा
वादिकल्पिका ॥ ववनंगुक्तयनित्यज्ञात्मकल्पिकां वदं ॥ नृदियात्मासर्वदृश्यस्वराववाद्यगेष्व ॥ सद्वज्रसंज्ञागनिर्माणाध
र्मकायवर्मेष्व ॥ संज्ञाजागुतुसर्वात्मायात्मकायहवाधुवर्ग ॥ हाषवत्वालिकंमोखंप्रतिधातकनादिषु ॥ कृत्तयुगस्वरावजं
मोखंवद्वज्रकतंवया ॥ सत्त्वातुंषुसूक्ष्मांविद्यगेष्वदुल्लजां ॥ द्वापन्नज्जसोखंवकालिलंसम्यक्स्फुलनं ॥ सर्ववृद्धगुणाः ॥

वाक

नानानिर्यादिऊकवं॥स्वस्वरावयाधर्मैक्यद्वयनिस्वगायकां॥सम्वत्तुगुमदिअडामसुऊसदा॥पुष्टुसंसा
वददृखवहाजियसमा॥वृद्धरुऊना॥अथाक॥संपवक्तामिपंवामृगस्यसाधनं॥यनसम्यग्विधाननसर्वसिद्धिरुलादयं॥
वाक्काहागर्हसंजागृह्यथदिगपिगं॥तस्माद्येवावनंनामप्रख्यानासिद्धिसंमगा॥स्यामवर्तुसूरपांगिरुसुगानकवाचन॥
तस्यावतकलीपाफासाधयत्सुदगापिव॥संपूर्णकृत्तगायकुसोरागीकनूहायमिनी॥खाद्यपाननसंपूर्णसर्ग्यदत्ताविवद
हां॥गल्हाकृद्बूकार्येअन्यान्तुक्रुग्राहयत्॥तस्मान्नटकूलंनामख्यापितावकथागगा॥पूर्वाकंवविधाननसंपूर्णसि

गले

द्विजायग॥आदियूयपुहासुखाडाऊकीर्तिपुकीर्तिता॥समथयदिसंवायमागंगीसवयत्सदा॥मांसमद्यंरथावकंशाहयत्स
विवरुहा॥यंवाकूहायथापाफंदनसंशुष्टमिसाचग॥यदिसंवायसंग्रहसाधकसिद्धिकांदिहा॥गमासंदयमांसकद
सीमासंगथेवव॥नवमासंकूटासासंग्राहयदुविवरुहा॥पक्षुपदीपमाख्यागंवृजसंत्वववायथा॥दहमीपक्षमीपा
फभगदसुमयीलयत्॥सुगंधादिशिर्गाऊवदस्यनरुकावयत्॥गुटिकांकावयत्संम्यक्साधयनरुगपिगं॥गल्हा
नरुसंपूर्णखानपानंविहायग॥गहमाधुपनिष्ठरुपश्चात्कर्मसमालयत्॥मरुकापकथाध्यानंसर्वकर्मरुलादयं॥वस

वाक

यननारीवस्यसिद्धिदं वनमाकृव॥ गुणिकां सवयन्नित्यं सर्वकामरूपदं॥ सर्वकर्मपथा॥ गवसिद्धां गववनीपदं॥ ॐ ह्यादरगवांसा
मिद्वजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥
नमस्तुलगावक्ष्यादिगुथादक्षपटल॥ ॥ अथागैनेकालास्यादुक्तथगतवृत्तिवत्॥ पवृत्तिमवसत्ता॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥
४॥ कालास्यासुक्तकर्मवृत्तिनगिनिदाननं॥ कालवक्तुसुखासुपिस्तुवत्सर्वगामिनी॥ वाधिविहमदानन्दाकंकालासुक्तकट्ठी
तस्यं सर्वनागादिहृयागीरसनकवां॥ यथावृत्तिद्वीवगुणायुत्यादलकक्षं॥ पथमंकाकवद्वीजं पथिगं मातुपमक॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥

वृ

७०

विषयं दनपञ्चालकषसन्निरं॥ मासमकस्तिगत्वात्तुस्नानास्यादुसवचनात्॥ सुकववृत्तसाखात्ताद्वीमकादिना॥ पवृत्तिमवसत्ता॥
वान्निवृत्तिरावगावनां॥ द्विपदवदुष्यादानीनां यायासांगविक्रयकी॥ निवृत्तिगद्वीनित्यंदर्शनस्यर्धनयिव॥ वक्तुवृत्तिमदानो
डी॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥
सुक्तशायकटिणी॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥
कं नायकीवजवादिनायकी॥ मस्तुलगावक्ष्यादिगुथादक्षपटल॥ ॥ अथागैनेकालास्यादुक्तथगतवृत्तिवत्॥ पवृत्तिमवसत्ता॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥ ॥ ॐ गिणीवजवादिनायकी॥ सर्वथागसमावात्रवजसत्त्वसुखायदं॥

वाक

ह्यकीलकानितुमापयत् ॥ द्वात्रिंशदयपात्यमुवमसूययाध्वनः ॥ वक्रासूरागिकंदानत्रारिपमनुक्तसमं ॥ त्रिरागिकं
वक्रगुरुयंकर्षिकादलपाध्वनः ॥ तदकरावाकित्वकं सखलकुचरुमयः ॥ त्रिरागिकंमाल्यं वक्रपमनुवक्रजं ॥ अ
लवक्रकुमध्वनदीनादकरुसूलकं ॥ सुफानिसर्वगादया दसुनुप्रिवृवक्रक ॥ ताननांतिगुलंतिद्वानाकियूलादानराः
गिकं ॥ तदकरनवदवारिः कपालपद्मकसुथा ॥ धावलीपरिकाशर वलदानादपदिका ॥ कसलीवक्रुगदईकुसुमवी
कासुथा ॥ सुफागतिर्गनासुविचिह्नवक्रमदयुक्तिं ॥ किंकिणीजालवसेधपटाकाघषनादिगं ॥ तदाकाप्रंचसः पविः

८७

वृषुवनटकादिसमालिखत् ॥ विष्वक्कावलितुष्टः कालावलिवशिगा ॥ तदासचक्रवाठुदुष्टानूनालिखत् ॥ कर्लिकाव
लिनयामुसुष्टुपानाकाधेवव ॥ गर्हपयस्यवाकितुवलावलीसमालिखत् ॥ इमंनानासुकांलिखादुचधुगादिसमनकगवी
जविन्यासकंक्रया कर्षिकासर्वसकृवान् ॥ अथवाकार्यादिकाश्वेव अकनेः सर्वसकुलं ॥ तथापिमटिकाकावेदीजमकुलमा
नूके ॥ पमदलषूकाध्वनपंचामृगकनाटका ॥ कलाक्षपविदयनु सकृंछानिकानयत् ॥ कालक्षुण्णंनदिरक लंबासुनू
चशीदिकां ॥ मनुयुगमककलषू पकवलादिनामधी ॥ गान्धादकपलवादि पंचामृगषूपूनेयत् ॥ वलिसर्वषुकर्मषूलावना

वक्र.

दिसमकरु॥ यापयद्वरुदवीनां कुरुपालातुकाधवान्॥ पंचामृतादिद्वेषेभ्यः समकर्ययवाककान्॥ निर्विघ्नरवतसम्यक्, यथा
कर्मसमावरु॥ नानाकियकसखादवी, सफ्रिंहासुनूपिका॥ कर्मवर्जीविरावित्वा, समाधिप्रयथागवान्॥ दासफणिकनाः
नोदां, चनक्षसादाहोर्युग॥ मूलमुखं कालास्यानदनवगिदिपाध्वथा॥ तथापनिसफसफ॥ पंचाधिककुशापयन्॥ दक्षि। हासु
वागमायूमाज्जालयाद्युसिंदकं॥ शीमच्छदकिन्नरगंखनंवेवयथाक्रमं॥ वाभमाद्विषीतीनक, रुपासकना। हासुग॥ गलु॥ म॥
वर्जयथा, कसमूलकथम्॥ अदिनालककनंरुद्रामुखं कपिरल्लक॥ गनू॥ उगृहकाकमुडल्लकवकसनकं॥ मदासलीचकवा

८२

कंसयूवगसवृत्तकं॥ पागवगसुसर्वेषां, सुराववर्धुमिषातां॥ सलुलस्यतुक्त्वाधे, सुरावयस्यधातुम्॥ सफ्रिंहासुनूपिका, पुरुगयः
॥ सन्निधायग॥ तथापनिसफसफ॥ गिंवाधिकगत्सनां॥ वन। हासुगवृद्धकृ॥ आकाकवकिमध्वगं॥ दक्षि। हासुनूपिक, वक्रादिः
सुवक्रिकं॥ रुद्रवायुश्चनेमलधनदमुयथाक्रमं॥ वाभयमध्वकामध्व, वृद्धवन्हावाहुकि॥ मदनिराहायतिमुकाकं, वक्रवर्धनं॥
उवंमहादहाकावंससाज्जुगसंजकं॥ धार्यमानंस्वविहृनदद्याववहाकुरुधृक्॥ दक्षि। हासुवृद्धं, वजासीकुरुनामूलकं॥ य
वहुकहिन्नवाहं। हूलंरिन्नरुमृज्जं॥ वक्रुमनू॥ विकादु॥ रु॥ शिषिपालकं॥ हांखकनकल्लिकामयूवपिठकागथा॥ काकयः

वाक.

क्षत्रविकावज्जुमिकुलुयवर्त॥ लगुरुदण्यलवील्लगुल्ल्याहिरुल्लुं॥ अल्लानाहतिर्गुरुदार्दूरुषजालिका॥ कवधंहाल्ले
लं वरेववपुंरुमाकमान्॥ वामघष्ठावददकं मुखलयाहाकपावकं॥ धनूर्खदांगमसुसुयिल्लानिर्गुनीवव॥ घघुवमालाहंख
लं हिल्लाहमल्लनधूपिकं॥ ॥ हाकल्लुका॥ उच्चमवसुविगयानिका॥ वादनविल्लिकं चिचसिलाहसिदुमसुकां॥ कौकंनदल्लि
कावेवनरुवुकगुहावरुकं॥ हानिश्चवंकील्लकक्कीजपूवंकनपउव॥ सविदुकायकं मक्कमघवसुवृकाभिकं॥ एवंकमः
सुविहयाद्वासफगिरुनाजिका॥ वाधिरुषुकनाह्यंरुदकिवर्मविन्नक॥ रुधुकागजावुहंहाजिगाविघ्ननाहिकं॥ सुवर्धु

७३

सुहावाकुअधवानायकिवर्धुवत्॥ मल्लमालादिसर्वक्कवम्लारुवहानिकावयत्॥ एवंसंम्यक्कायामवविहयापगिविचकं॥ सम्य
कसुगिसुवृयल्लावयदियदायकं॥ गावदिविधमाख्यागंहीवीवंवध्वाल्लयि॥ उल्लवनासिकावाववुवावकमानरु॥ आयनंपाह
सूर्यस्यजुवधूनीवावुहमान्॥ यंकावंनविगंहाहमकावमध्वादिली॥ दकावदकिहागदशानावददकिमध्मा॥ अकानासिगिमा
प्रागिवंदनाकाहल्लमिनी॥ नाडीसर्वसुखात्मानज्जाठिकावरुसंक्षिक्त॥ समयायाकवंपक्कमल्लुल्लववनात्॥ एषुवावाह्यम्यलि
विद्याकालल्लुवंवनात्॥ एकमकपूषंविदयीजादिममनादिक्कं॥ मल्लनामविकल्लायनीयगखवनीपद॥ वल्लुदयंरुवदकुकाः

वक्रु
 सुमिपनिगुदं कृत्वा ही मां प्राका व व च यत् ॥ पृथिवी वंका न जायी गां क न क क व हा धा नि हा ॥ पुनि ह्य द कि (ह) रु क ह्यु नि कृत्वा रु
 या ऊ यत् ॥ हा कि रु ना सि तं द वी अ म क म ह्यु लं लि ख न ॥ पृथ धू पा दि ना पू ऊ अ र्घ्य दत्वा वि व द हा ॥ रु ग व न्का ध स द र्जं स
 अ म रु न्ता ग रं ॥ अ ह्य मि लि ख नं ना थ म ह्यु लं स द र्जो द यं ॥ वि ष्या णं म नू क न्या र्थं यू ष्या कं पू रु ना य व ॥ क भ रू क स्य रु ग
 व न्य सा द क र्तु म र्द सि ॥ स म न्ना दं रु म हा वृ द्वा ॥ य वान्म म रु द व ना ॥ द व ना ला क पा ला अ रु ना सं वा धि ना सि ना ॥ सा स रि न
 ता ॥ स र्व थ क वि व र्ज व द्वा ॥ अ म रु न्या म पा दा य सं वि ष्य व रं ग य म ॥ म ह्यु लं व लि ख या नि व रु वा दि म रु मं ॥ पं ऊ ह्य ना
 व

८५

चितं सूर्यं प्रच्छ विंहा गिरा दि तं ॥ व न य त्सु व न्या न्यं स र्व ध र्म स्व रा व र ॥ हूं का वा च्चा न य था गी प ऊ मृ ग न ल पि तं ॥
 व कं दि गु णि ना दी र्घं वा न विं हा गि र्वा णि कं ॥ पि ऊ का र्थे रु मृ च्चा र्थे ना रा ध्या र्थे नि मृ सि ना ॥ य सूर्य पा ट य डी मा न्, ग (थे) ना
 य ॥ य सूर्य यत् ॥ न व न सृ नि स प मा न न वा नू द्वा ॥ सूर्य हा सूर्य यत्वा ह्य ॥ स द र्जो द य म ह्यु लं ॥ अ र्द्ध रु क स मा व र्ज हा ना द रु
 हा का ष कं ॥ रु ना ष गु ण ना म न्, का ष म कं प सूर्य यत् ॥ पु न व रु गु त का ष, का ष म कं प सूर्य यत् ॥ रु ना ष दि गु (ह) ने व, का ष म कं
 रु सूर्य यत् ॥ रु ना ष रु गु ण ना (ह) न, का ष रु सूर्य यत् ॥ पु न दि गु ण ना न न, का ष म कं प सूर्य यत् ॥ रु ना व रु गु ण ना न न, का

गृहसूत्रम् ॥ विल्ली वल्लिका सिंदूर मुखयाद्य मुखवर्णि ॥ सूर्यो गाम्मुखदू ॥ खन्दूरा विवमवल्कके ॥ कंकानल्लरिनालवाद्ययचाद्य
 यं विव ॥ काकलङ्कनूकचश्च हाउ मधुकैधनानिरीषलानि ॥ अन्नक सिद्धि विद्याधने ॥ समथावावयागयागिनीगलो ॥ यदवगावः
 वाकसादिशु ॥ मदाकिलिकिलायमानानि मदासिद्धि निद्रिसंयाफ ॥ आचार्यगल्लमल्लामाधुपूया ॥ ॥ नूत्यादरगवान्स्वामिव ६॥
 ऊवादिनायकी ॥ सर्वथागमदावीन ॥ वज्रसत्त्व ॥ सखायवं ॥ ॥ निष्ठा वज्रवायादिकल्पमदागुरुवाऊमधुलस्यपागनयव
 स्मृत्युक्ति ॥ लक्ष्मण्युद्धहायटल ॥ ॥ अथ वज्रवायावज्रकणनमृत्युवहांगन ॥ वृश्चिवृहदुसंरुंकार्त्तिकरुडयायुगं ॥

॥ वसन्तविषयकालदुष्टुनीलशिलकटां ॥ यमसासूचनीदवीसामृत्यवक्त्रवक्रया ॥ द्वादशाकालमदावक्रयनिवर्त्तयिकालयत् ॥ पंच
 त्यपंचविष्यत्तु लिखिदिहं वयावत् ॥ पुनर्वायकाष्टपूणिधकश्चसम्भत्तनं ॥ त्रित्यनिधन्मासाश्चतिथिदिहंगथा ॥ निधव
 वामवक्रमात्यश्रादद्वदिमादिशु ॥ दिनमकायदावापुंनिधवववनाकविग ॥ वसवसावाधिकमात्सफणिसासकंनूटं ॥ प्राणिकिसु
 जानीयादकाष्टविंशतिस्तथा ॥ अकानविंशतिपूनेक्षुनामकामगक्रिया ॥ समसफरागसूर्यऊमसकदुवन्दमा ॥ पूर्वकालस
 माप्रातिवक्रवाववदत्तया ॥ अन्नमालदिनाक्षवशाउ ॥ वदुसंखया ॥ वर्षकमलसंक्षाश्चसफगिबहुक्रमात् ॥ तस्माच्चादृगि

कितीदवीलावयलमलुलात्मकां॥यस्मिन्नादित्ययथाहासुस्मिन्वाहयदिसंमग॥उर्ध्वसारखापूर्वमूलंरसासकृत्वागुगुफकां॥सर्वेष्वस
 वंसंधिसमयंकालकर्तृकं॥समश्चक्रकानघंसकावंसर्वसुखिकं॥अध्वार्धकयकंकृत्वातुवंक्रिक्तकलक॥वागानिबवदूपाया
 वाक्॥तिरस्यनिकर्मनास्त्रयं॥दानदाययकृत्वागामहिवादिमानकं॥वाधिविरुताहुरुस्यदनीलांपिबगग॥हांगिकंवयिबलुरुमात्यकं॥६७
 दाप्रियवदु॥रुक्मयकीवज्जाल्यंसमकदूरुषादिकं॥यदिप्राप्तिमदावकंसंगमवयगिस्त्रयं॥पिबगसंकयावज्जल्लिप्तिगकस्य
 पिबवत्॥अथवाहूम्यालथवध्यावदनिस्सुखयंगग॥कीवाहावंकगंसोख्यं॥अथवाहावलातिव॥संवद्ववसे॥संरुशमात्मानंस

रुवामदकिहामधकां॥अयामववलावपूनयमकवमगं॥दूरीपददयंसंज्ञवदनीवायपदं॥एवंवरूपकानाहुलकयददव
 द्विमान्॥किंवदुनारुमूकनदानयावमिगादिकां॥वावादीपूजनंकृत्वावीवालांकुरुगावर्जनं॥थायमवर्थथसंम्यक्कषूवेदापथरु
 ग॥॥अथारुसंप्रवक्रामिब्रजावार्यविधीयग॥विनिगणामुसर्वरुसर्वसत्वरुयप्रद॥मरुतकुपथागस्यकपालना
 स्वयाविद॥मादूर्यवाक्सर्वेष्वसर्वसत्त्वेष्वपुवत्॥दानादिरिगानित्यंथागध्यानारिगत्यव॥सत्त्ववादिअदिंसावकावध्यादि
 सावकावध्या॥दितवगस्यासमगाविरुमूजालुसत्त्वानांनाथहृगके॥सत्त्वसयविहाषंवज्जनाथनरुवांधवा॥॥द्वियदसंप्र

वक्र.

गत्याहिसमायुक्तं हि साक्षात्वाधिवसयत् ॥ दयादिपदं का कृत्तुं विमानादिविधियुक्तं ॥ वक्रसूत्रसदावकावाहविकाविः
हासगः ॥ धीकानमनुसंयुक्तं कृत्तुं कस्यापदापयत् ॥ कायवाक्किरुसन्वन. गतसवनिनिद्वयत् ॥ मधुलंपवणयकृत्तुयुक्तः
धपदवष्टितां ॥ पृथक्कावसंगुक्तं दृक्सासदसंयुक्तं ॥ पूर्वजन्मादिपायस्य. निर्वायमधुलदहनं ॥ कल्लंशं नृतिपृष्ठसूत्राः
गादन्तिडकवान् ॥ समयादकपथं व. मधुलपृथक्कपनं ॥ यद्यत्ययं यतिगंतु. गह्वलकृद्विद्यति ॥ उदकमकृतं वज्रयं
अनामातिषेककं ॥ पंचगथागतान्मिकं हाव. वक्रशाकनलमवव ॥ अत्रल्लास्य सर्ववर्द्धादयाकललसंरवान् ॥ कृत्तुपी० चवे

२०

यादिकृत्तुयुक्तं संयुक्तं ॥ आचार्यातिषेकसंयुक्तं. द्वितीयंगुक्तमूलमं ॥ पृष्ठाहानं रुणीयत्. चतुर्थं रुपुनसुथा ॥ अनातिषेकसंयुक्तं
नासमयीसाविधियत् ॥ दृष्टपृतिष्ठासमयं न दृष्टा कृतमधुलं ॥ सर्वपापेर्विनिर्मकं रुवकाद्येवंसंस्तिगं ॥ अयच्छहागतं न का
सिद्धसमयसम्बन्धः ॥ सर्ववृद्धे समाप्राप्ता. अल्लपवतासाग्यति ॥ प्रक्षिपत्यगनातिष्ठाद्यवर्णं रुकिवत्सवं ॥ कृत्तुयुक्तं कविशामि
यथाह्लापयसिद्धिरा ॥ गतमुगुनृदवत्ता. गथागताकृद्विद्वत् ॥ नानालंकावद्वत्तादी. स्वहावीनं विहासगः ॥ पृथक्वितावदयदं
पुनःपृष्ठसापूवयत् ॥ अल्लरिवकलारुनृत्तुगृत्तुमसायहा ॥ अयमसंरुलंजना. सरुलंजीविगंवम ॥ अयवृद्धकलजाताव

वाक

इपूजासि सांप्रतं ॥ कामं व पूव यरुह दया संपय रुजनं ॥ गल वज्रं तदा दया दीनानाथं च तयं यत् ॥ यथा पद हतं यथा सुमया ॥
वानर तयना ॥ रुजन रुतिसंकात वकायि राव नाक मे ॥ संमय गम संपना सिद्धि रवति ना न्यथा ॥ ॐ स्वा हर गवान् स्वामि वज्र वा ॥
नादि नायकी ॥ सर्व वी न समा था म द्रु सत्व ४ प व स र्वं ॥ ॥ ॐ ति शी व र वा ना दिक क म द्रा त रु वा ऊ अ रि ष का त्य रि म त्य ॥
वचना दि व क रा व ना प द ह प व द ह प ट ल ॥ ॥ अथा म ४ सं प व क्ता मि क थ ग हृ ह सां प्र तं ॥ स त्वा ना वा स ना धा वां ह य दा
स्य कि प ऊ लं ॥ था यं क र्म पु क र्वा क र काल व ध कं म ना ॥ व रु ना डी ति ध र्मा वि यं ग रु सि ना ति वा ॥ अ म्ना श्व व का य कि शु रा म थ

मल क हां ॥ अ ह रा मृ स सं दं हा म र्म व ध रु ल क हां ॥ अ क सिं य दि काल रु वि ध्व ति गाल क रु यं ॥ त या द त त दा वि शा मी य त ना रु सं
य ४ ॥ या द गाल का वि विं डां ना सि कां य दि वि ध्व ति ॥ त या द त र व मृ त्यु च ह्म पि ना सि सं हा य ४ ॥ कू हि पु मा व का ल रु सं द स रि र व य
दि ॥ त स्मा न व रु व ला यां व र्ष सी य त भु वं ॥ पू र्वा क यं व वा स वं म्ना क द ह कं ग था ॥ अ य वा क्क य रु क रु अ र्च ना रुं रु मा स कं ॥ अ ग सिं
न व का ल रु हं दि का य दि पू र्व व रु ॥ का व नि य म जी व न र व र ना रु सं हा य ४ ॥ जि का श द र्शनं द वी रु या द म व र्णं र ४ ॥ अ व र्णा ग
ता वि ध्व रु मृ त्यु मा स व रु मृ त्यु ॥ वा म व रु वी प र प ह्म क न रु द र्शनं ॥ स प्रा द न त दा मृ त्यु ४ क थि तं पू र्व रु मा नि ॥ ह रु य ति प दा

नि। थो। जं। यद्यसिंहरवत्॥ घघासनसमृद्ध्यागमयत्तदित्युक्तं॥ सथागालिङ्गलिङ्गस्यदृष्टितवस्थानतः॥ यदिरुवरुदायाकियं
 वत्तमासमवव॥ घघानादन्निमिलेषुकर्तुयास्यामृत्सूटं॥ पंचमासनसंज्ञाय॥ यदिहाकारवदन॥ एकस्मिन्नेवकांतुयदि
 वद्विवाक्यो॥ विश्रुतियस्यसर्वमासमकंसजीवति॥ दसुवन॥ दसुसंधिनांकटिषांगुलं॥ एकविंशत्यस्यसामकंविधि
 ध्वं॥ आयुयनविश्वक॥ यदिसामर्थ्यदंगर॥ ववत्तंगुष्ठयादावज्जुनंतुवद्वयं॥ गद्यीवजीवनयावदप्यतसदाहका
 ॥ घटमासतदामृत्पुदिनूदसमारवत्॥ हृदिमाध्यामसर्वमाजपिकक्षागावत्॥ त्रिपुनरुवत्सुत्तानाविवावागावत्॥

पुनविश्रुतिर्गोष्ठागुदकगादिपुत्रार्थवत्॥ सद्यमृत्पुदियानीयाकथितगनीपञ्चन॥ कर्तुमूलतथाविश्रुतसंघामृत्पुविनिर्दिष्ट
 त॥ माध्यामवत्तथाविश्रुतकक्षासमवत्तवत्॥ नासागुरुवद्वय॥ कर्तुमूलतथाविश्रुतसंघामृत्पुविनिर्दिष्ट
 दं॥ यस्मिन्कालरवबंधरस्मिन्कालंरवत्॥ वधस्तुनंसूटंलक्ष्मिर्दयदहामूलया॥ विष्णुनामकंलक्ष्मिर्दयदहामूलया॥
 तदा॥ नासावेवावनरंलक्ष्मिर्दयदहामूलया॥ सूर्यवस्मिन्विश्रुतवृजसूटंलक्ष्मिर्दयदहामूलया॥ रावयथागिनीवत्पुथागलुवमसत
 हा॥ यमदधुस्यवेकदुसमश्चस्यलक्ष्मिर्दयदहामूलया॥ दक्षिणायनकारुण्यदंकावत्सर्वसिद्धि॥ वंधविश्रुतविद्वानदक्ष्मिर्दयदहामूलया॥

वा. क.

टलटलायमानरुपुष्यबंदययादिकं॥विहयासर्वसन्निधयधनामृत्युवंचक॥ॐदियानीसर्वकवेयानसेवकठि॥नवं(ध)उद
यंपाकंदुंछिकात्रसंरुया॥समाधिनाममरुमुखावर्गदियसाधनाग॥मणिउष्टीपगावेवकूर्यामृतालरुया॥अष्टविहान
नकुत्साशवयस्यदवादिनी॥सागंतुसर्वगानीलायमस्यदस्मिपागन॥नीकावंशुविगणेनसर्ववधविनाशनी॥वष्टुवकंतासंवा
वमृत्नाशनवाधिगा॥अयधंवारवरुसखलुहोनासुधयागिनी॥वज्रमधुलम(ध)सकजींमिमिकाचन॥ॐयाऊद्याम
किउमनादंमस्त्रिवंनीलयधकनाहूंयहूंरूंरूंरूंरूंरूंरूंरूंरूंरूंरूं॥प्रक्षपायसुखावयलुगमधम॥अस्वमापूजमासंववदुव

वृषरुलाय॥अयकनधिननदु॥अकिमानातुवंचनमृत्युवंचुरं॥अन्यमनंदिगणवकूर्यादिवष्टुसूटं॥अन्यवंचनमृत्युवंच
रुयाशनवकका॥किरुसर्वहूनापदंरुत्तागुनूगाधिननदु॥अथानागमसंवअमृत्नीष्टुयलकहां॥सुहावीवववाकचनिमिरुं
लक्षयस्वधी॥पादयागालकाविद्यानारोववदरावयग॥यदिवसयनादूर्ध्वयंकत्वंगदुगगदा॥कृदिपुवहायाकालहुत्यकालव
हंदिगा॥तस्यामवदिवलायांमृत्युवर्षशनधकि॥रुगलिंगसमायागमध(ध)वदंदिका॥स्याञ्चुत्यंगदामासंमवहांरुवगिनि
धिनं॥हृत्कषमधयावंध॥हृत्कलंयदारुवग॥पदुयनमृत्यु॥स्यादिधननसंवयग॥वामाकिपूकनीष्टयांयानयधनिदप

वाक्य

॥ ६॥ सफासमयनूनं यदि स्यात्तु प्रतिक्रिया ॥ कर्तुं मूलरुद्रामाधनसूजा ॥ यध्वधयत् ॥ वदुसंधिगतवधः सद्य मृत्तुतदारवत् ॥
॥ अकस्मात्ता यतस्तुलः कृपः कृष्णरुयाकल ॥ यकस्य मृत्तुवर्धन यदि धर्मसवयत् ॥ कृष्णयदिरवत्तुलुं कृष्णयां पतिपति ॥
॥ पतिमासकदा मृत्तुनादिगंयाधिसूत्रकं ॥ वदुषीष्टवगनितुं दृष्टनूपापिविगमः ॥ दयः ॥ ६॥ लिलवापि स्वकायाकनयध्वनि ॥ ना
॥ गविदुधरुपध्वनिवानकमलुल ॥ अमद्यविद्युतः पध्वसूत्रनिदकिष्णानि ॥ ६॥ दिवाकायापं पध्व इत्कायाः पतनं तथा ॥ दं
॥ सकाकमनां वाहादकमलकं ॥ वदुदयं दिसूर्यकृष्णानि कलनतथा ॥ राधर्वनगनं पध्व इत्कायाः ॥ ६॥ पध्वत्युतपि

॥ ६॥ वादिदृष्टान्तसैनोराषणात् ॥ यकं यत्तु अकस्माच्च मृत्तुवदुषीष्टक ॥ ६॥ पिध्वदकेकलस्य मृत्तुमासावधरवत् ॥ कवकवादिगं वं
॥ दसूर्यवस्मिदिवर्जितं ॥ नाशोसूर्यदिवा वदुषीष्टनगलनतथा ॥ नासूत्रमृत्तुमागच्छसमद्वनदीमिव ॥ मृत्तुपनायाः कृष्णतुल्यकालं
॥ पतिगिवत् ॥ पकमकं रवत्तुलु यदि धर्मनसवयत् ॥ कृष्णपिदिवसयध्वकायायां धवन्नूपिणी ॥ ६॥ निनादं नारुस्य मृत्तुस्य धर्षः
॥ मध्वगः ॥ पृथरायाविनाहास्यादामपाध्ववदर्शनानात् ॥ दकिष्णदंष्ट्रापिहृत्तार्यादीनां मदीयासां ॥ पंधवा नारवत्तुलुं वा मावर्तनविगं
॥ धिव ॥ अज्ञादितुं वमृत्तुसूत्रस्य समध्वगः ॥ वानूकारुध्वनासिं वदिवत्तुलु वयस्मिदवत् ॥ स्वप्नाकयानि वादकि मवर्तनपुर्ववत्

वाक् ॥ गद्वाननानुदृष्ट्वा लीकया सुनादिव ॥ यानिनादिनिस्त्रपाने दवादिनीयतां ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 वाशिरुमाक्षयागद्वयनमदहीनं ॥ सुखकाकलासायुषः ॥ अक्षयतपिष्ठावकं ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 वस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 वीयतमृदुक्तभनजीयननव ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 वकंथागांक्षाधयदसुखलं ॥ नानानिमित्तसंपादकं ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव

२५

गतनाडीपवनकनरुपवक ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 हांकार्यमन्यतयावगमिनः ॥ अलिकालिसमायुक्तं ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 वायुवीजकदधारागद्वयनमदहीनं ॥ सुखकाकलासायुषः ॥ अक्षयतपिष्ठावकं ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 विक्रमः ॥ विज्ञानवायुनूदृष्ट्वा वायुदावंतुवगसा ॥ यनयनदिगद्वयनमदहीनं ॥ सुखकाकलासायुषः ॥ अक्षयतपिष्ठावकं ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव
 रुक्मका ॥ नारिकामिकसुखगस्यविन्दुना नूपददिनः ॥ रुक्मवस्तुसुयानानीकालीकामयननव ॥ काव

वा.क.

वनं॥नीयकहसिवजाख्यामहापत्रधनीयदा॥चकंगुलविनिष्ठपूजंकूलकल्लंनृणां॥महाधनपदंयापि॥समाकप
हालकल्लं॥प्राप्तसंचारंलक्ष्मणमर्दनासर्वकाचर॥यक्षकुरुसदा॥छिन्नंमनहंयागिरि॥सदा॥कदाविरुपयुधवसा
त्याकायागिनीक्षतं॥कुरुकषमदानात्सादनामृत्युवंचन॥रसाचयागिरि॥कुरुयागिनादुपूजनं॥गारिनुष्टुल्लसक
महावज्रधनपदं॥अयंनयतिथामृद॥सिद्धिंरस्यववाहमा॥अवीवादिमदाननकारकषष्टमचगा॥किंकननक्षत्र
पुष्पकिंजानीयासिगतया॥यागिनीनांसदार्कि॥कुरुंमूर्च्छमादिना॥वर्धुदयंदुदवीनांशुवनिर्वाणस्वरूपका॥महल्ल

७८

घनमध्वरुवावयविंक्षयामन॥स्वमहाकुरुयागानसकपिंछागियागिनां॥उत्पलिसुसदापायनसऊथामाधरुधुक॥उंवमऊ
हामधुममामंधकात्रीयवदंरुहृषारुदरुहृदस्वादाहृडांरुहृदा॥चवंसर्षपमागावयविंदमथीका॥दययादिकवक्षुष्य
याश्चमनसंयुता॥कंन्याकूर्मसमासंवदुदवगवद्विषीनी॥ससुर्थकुरुकुरुवसमहागाधिककावनां॥वानाश्चानिर्मिगांयांगुडलनरु
वनाहिनी॥रुगवजीमहायागप्रविष्टंसर्वदेवगां॥महावक्रवलिगावाभिर्मिगंसर्वकर्मकां॥सहजंदवगिगदासंवद्वलमाससंरुका
सराववलनदकावकथंरुष्टुजायग॥मायाजालमिदंसर्वज्ञमायाननहृन्नागां॥संनगात्मकंशवंवृद्धस्वामीसमीपं॥रुहृगादिगु

तमाहृष्टाष्टकं कल्पयन् ॥ अष्टाविंशसदसाहिलक्षं सफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ
 तद्वयासन्निवृत्तसदसुभवव ॥ द्वादशाहिलक्षं सफदक्षानिव ॥ पञ्चदशसदसकं ॥ अष्टकल्पसमाख्यातं सत्त्वार्थमुविदक्ष ॥ १००
 वाक् द्वापनयासंधिसदसुसंधिधीयत ॥ दशसंधिसदसाहिलक्षं नष्टो न क्षाहिलक्षद्वयन ॥ पितृणां सर्वज्ञां सुसूदायनकल्पसंख्याया ॥ द
 यनकलिसंधिश्च त्रयानिसदसुभवव ॥ द्वादशाहिलक्षं सफदक्षानिव ॥ वत्तानिलक्षविधीयत ॥ कलिकनयासंधिश्च त्रयानिसदसुभव
 तं ॥ अष्टाविंशसमाख्यातं सिद्धांतनामसंख्या ॥ कथं श्यामितनाथं त्रयानिधीयतावता ॥ पूर्वविदक्षुल्लुन कुत्रो ज्ञपनामाश्रय

निमवव ॥ अष्टाविंशसमाख्यातं सफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ
 दयं ॥ अष्टाविंशसमाख्यातं सफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ
 यकी ॥ सर्ववीनसमाख्यातं सफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ
 रावमुखवंतनादिसफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ
 यत ॥ सफदक्षानिव ॥ दृढमानसमाख्यातं मगधां कल्पनाश्रयं ॥ दृढ

[illegible]

साकं कावदकं तथा ॥ नहावपुष्यं च वस्तु मायसूत्रं ॥ गीतं कपुवदतहावना सर्वजं पूना ॥ द्विदिसूर्या कमश्च वृहानवी ॥
 जंस्वयं रुवं ॥ अविबस्य येनावर्तुमाकाशपुत्रिगं तथा ॥ हानजकिनि वृषितीरुजालकृष्यस्य दवतां ॥ गगाक्षकृदमाक्षसं ॥ स्वयातां
 जगतः परितः ॥ पूजां कृत्वा मृगायेष्वसौमसूर्यादिनात्मजा ॥ यापादियक्ष्माक्षत्वाकृत्वा याममन्सुनरा ॥ नून्यतावस्वरावं वयागधुजावि
 तावयं ॥ पक्षवीजस्वरावकुरुतां गानविनिर्दिष्टा ॥ दुरुवजधवयथाभनूमश्चपविस्तूटं ॥ स्वगवर्षुचरुनासं ॥ शिनेरुजदाद
 हां ॥ प्रह्लासंयूटयागात्मादानारवसंयुतं ॥ स्वगदनिगवकृष्णीतावर्षवामरा ॥ मुखजगमकूटं विविधवजाईवन्द्यक ॥ सन

बाक

सकलालासं सयसंनानसदा॥पीतवक्रकमनरुसुपातुहंगमनिहा॥उष्णकलालरीषक्षसुधाववाकवसकग॥रूपावास्तुकायवक्ष
गानासुयथाकमात्॥दक्षिणर्मदिरुव्यागिमृदागथापनात्॥वक्षसिहृदिगुलं वदक्षिणयंयथाकमं॥पनहुक्कलिं वक्षं वक्षं
नरुमज्ञवं॥वक्षमेतं वक्षलिकावदक्षिणयलिका॥मुखंकादलदक्षिकायमयनापिविकागथा॥कावपक्षं कं विकावमृगिकुलुपवक्षं
लंपाकपालकं॥धनखंदाकपुलंरुघुध्वमालांखलाहिलांमनधूलिका॥शकदकां वक्षसलं विगकक्षानिका॥नादनं विनिका
षीवगुहाल्लिमककंककालनादिकावेवनरुकंकुवर्लिका॥गानिश्चनंकीलककुवीरुपूनकपुलकं॥वृद्धिमुकायनामां वक्षदवृद्धि

१०३

वक्षसकं॥नवंकमने विरूयादासगिकनारुकं॥पक्षमृदाकगारनखं वक्षमृदायनरुषणं॥गगक्षमंदमालावेवकपुवनोपनायथाधुव
मानिवहनं वामाक्षलिवगणकं॥कस्यागगामदादवी वक्षवानादपुर्ववर्ग॥प्रक्षपायसवायं वक्षसंधिषु विगुहात्॥नानागीदवका
कावेसविष्ट वक्षविहावयगा॥नायदमालारुसर्वेषां गिनानां कानयदगा॥पमदलवृष्टादिश्रुतनाकनथागिनी॥वदुर्विगिसया
नाशकिन्यायावृष्टकं॥पूर्वादिउल्लवं वक्षशकिन्यायावृष्टकथा॥उरुनायापव्विमारुक्ष वामायावृष्टकं पुन॥पश्चिमायादकिनाकं
खलुवासादिकंकुलं॥दक्षिणयापूर्वाकक्षनूपिष्ठावृष्टकं गग॥शकिनी नूपिकावेव वृद्धिकारुपनावृगा॥सर्वालिकानुवर्लिवक्ष

॥ शुद्धकान्तिलाङ्की ॥ नामाया (रा) ध्वनी रङ्गं कृष्णालिनी कं कालिका ॥ नामावर्ण्यद्विगाई नकाईरुक्मनां चतः ॥ खलुना सदात्मज्ञानी वविर्दुः
 वा. कृ. कृन्कली वव ॥ नृपतिमहिमाख्या कं नकाईरुपी गसन्तिरा ॥ नृपिष्ठा रं ववी सखा खलीजटिव नृयौद ॥ पीगाईरुक्मनां चतः ॥ वरुणा वस
 वा नादीका ॥ अकनवपुदलानी व. पंचासुतक कानिवा ॥ पत्थालिंद पदवेव कया नमाला धानिहि ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ १०४
 गदाध्वरुवकं वलीलरुक्मनां चतः ॥ गदिना वगथानामा खलुना सदात्मज्ञानी वविर्दुः ॥ पवभुक्तो दीवेव प्रहमती सदात्मज्ञानी वीनमगा
 खर्वनी वलंक ध्वनी रङ्गं कृष्णालिनी कं कालिका ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ वरुणा वस
 वा नादीका ॥ अकनवपुदलानी व. पंचासुतक कानिवा ॥ पत्थालिंद पदवेव कया नमाला धानिहि ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ १०४

॥ शुद्धकान्तिलाङ्की ॥ नामाया (रा) ध्वनी रङ्गं कृष्णालिनी कं कालिका ॥ नामावर्ण्यद्विगाई नकाईरुक्मनां चतः ॥ खलुना सदात्मज्ञानी वविर्दुः
 नावलीका रुसवसती ॥ नृपतिमहिमाख्या कं नकाईरुपी गसन्तिरा ॥ नृपिष्ठा रं ववी सखा खलीजटिव नृयौद ॥ पीगाईरुक्मनां चतः ॥ वरुणा वस
 कक्षादिगं वना ॥ पंचमूलादिगा रुक्मनां चतः ॥ पत्थालिंद पदवेव कया नमाला धानिहि ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ १०४
 यादिकं तथा ॥ एकमावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ पत्थालिंद पदवेव कया नमाला धानिहि ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ १०४
 वदादहा रुमि विषय ॥ एवं सर्वेषु लक्षणेषु कथा रुसवसती ॥ पत्थालिंद पदवेव कया नमाला धानिहि ॥ नामावर्ण्यद्विगाईरुक्मनां चतः ॥ १०४

वाक

लंयागिनीनांस्वरावका॥ वक्रवाउषसत्वातास्यपायमल्लकमात॥ तस्यपूनरवर्णिगाराहनाय॥ हाकुक्रमायतु॥ ॐ गिवजव
कं॥ ॥ अथान्यमसंवञ्जवादीयस्यनिश्चयं॥ वानादीकल्पमानं कथंनगुगुक्रका॥ वानादीकल्पमाख्यागंसाउहाका
टिसंख्याया॥ मदायानस्यपृथ्क्कृणंमृहीनिकाटिमृशत॥ यंवाहालककाटिम्ब॥ पानमितानयमवव॥ एतानिसर्वादिउकानिस
निदानिप्रिकायमएवान्॥ अथवाद्यतावञ्जदयवक्रयामिदंपून॥ नक्रपीनवर्णुषवक्रकालयममध्यत॥ वक्रधनीमृक्षा
स्तु॥ देवावनीवत्तविका॥ यमनृषमाद्यावतावनीमामकीवतु॥ पाछालातावावृपं वक्रहादगन्धनसस्तथा॥ सार्धधर्मधाम

१०५

उक्तावरिगिरास्वगर्शका॥ पाछावलाकनाथातु॥ सर्वनीसमकंपुरा॥ नलालकीनेनात्तावरुक्रटिपलुसात्रिका॥ यमानकीपुल्लककी
वृपमानकीकुविद्याककिं॥ अत्रलानीलदक्षवगकिनाऊमहावला॥ उल्लिषाहुक्रनालीववर्णुवक्रदुयामगां॥ हावंचवक्रवक्रपूवक्रादिस
वत्तकृणं॥ उयपी॥ षुदवीगां॥ स्त्रापायनविकयत॥ प्रत्यालिटपदनापि॥ विहायंसर्ववक्रक॥ नृपधातुविमलायाकृदीपंपुथमकमरां॥ ना
यकीकुविज्ञानीयाल्लयदवकीमिषगं॥ यमदवकीलगीयंचनथांकाहाकंमगं॥ रेनंचपंचमदवू॥ षष्ठमंददवकीमगं॥ सप्तमहालदवकी
कीअवष्टमदवदवू॥ नवमल्लनदवकी॥ दहामविलदवकी॥ एकादहावाकवानास॥ द्वादहाकायिकंमगं॥ द्वादहामसहागुक्रद

वाक्य

नूकीनान्यतनुगः॥संस्तुतंयादृष्टं॥शिवकथागिनीद्वन्का॥वर्तुचस्ववक्रपू॥लक्षयद्विमानन॥नानासूत्राकामसारापवाधिः
सत्त्वस्यदहना॥यागिनीकल्यतनुस्यनदस्यं वृद्धागवन्॥मन्दपुष्पानिसत्त्वानांदयात्मकंवदहनां॥धर्मसंलग्ननिर्मासमहा
सूत्रविरावना॥पुष्पायसमायागं॥गीघं वृद्धत्वमावदक॥नृतिरुयवक्रद्विगीयं॥गमूथान्यतमसं वक्रगुहावक्रं वि १०८
धीयत॥पूर्वाकवक्रात्मयन॥आचार्ययनिकल्ययन॥गद्यस्यसर्वकुलमवक्रकुलवक्रकं॥वक्रावमस्यगादयाप्रतिहृद्विकान्व
नां॥वाक्कलं॥कविगीवेष्टा॥हृदीवकुललिनीसुवी॥अनारकपालिनीकेवर्हा॥वृद्धमनगी॥हांखिनीगुवापीवक्रकुलीका॥कानिक

मानिनीगेनिनी॥पीका॥कालीवधूरिणी॥दुर्गागत्रिका॥नीचकल्वानीकुपनी॥वाजहृदिर्गदकीवगथावविक्रयावदु॥सुव
र्तुकाविलोदकानीमसकनीवदनिद्रावकील्लय॥आदिनीजीवस्तुवगकृषीन्॥वर्मकानीगीयागिनीववर्तुचक्रपू॥व
सर्वकुलसुखायथाददयष्वक्रक॥कणमकुविजानीयाकामधुसंकलान्मका॥दिगीयदीपकमित्याह॥पुष्पायायात्मकंस्वयं॥प
राकनीरुमिर्वेवयूजनीगुनव॥स्वयं॥स्वनामाकनकमं॥हृदयवक्राप्रकीर्ण॥हृदं॥हृदकालान्वसर्ववक्रपूकानयन॥गद्यव
कुलंदयाकविलषाकृणीलकं॥धानागवगवधीवस्तानाईदान॥आरिगा॥पूर्वदानवसुकनास्याह॥वर्तुलामादिकापना॥अग्नि

वाक

नेमत्यवायुवाहीनातकाहवाहिनी॥यमजगि यमदूतीयममथनीयपाकमाग॥घोषोवर्षुसनाकार्यामूखान्नूपगः
कुमार॥पूर्वाह्नवपश्चिमदक्षिणरुमयश्मदा॥रुनीलहरितवकापीतवर्षुदुकानयन॥समस्तवक्रकाकास्याजकिनीदक्षि
(हगमोडहउलकासादियश्चिमस्वानवक्रिका॥सदृजमधुलमवस्यांश्चक्रवदुसुयंयुगं॥धर्मसंस्कारानिर्माहंयश्चात्कुर्यायथक
सं॥दिनीयचक्रिलखंरुनीयंदुलखकं॥वसुधपंचलखासाहमज्ञानंसर्वकंकमात्॥वदुमानककंकुर्यादासादिरुमिकंमगं॥पंच
लवात्मकंवक्रंवदुका॥समहला॥गणसदृजवक्रस्यहमज्ञानानिवकथ्यत॥वल्गुगगकवंदेवहालांकूलंनंककं॥विहीयलश्च

१००

पूर्वादिदिक्चामनसंस्तिगं॥अदृढसामंलीहाक्षीवनरुनासन॥धालाचकावनेमत्यांवायवांकिलिकिलानव॥हमज्ञानानिव
ननूपाविदनाडरुसिवाववे॥अननक्रमदचरिसुत॥असृहमज्ञानानिव॥वृद्धादिकपालानागदृमधेडाश्चापुनर्कमात्॥ह
लीखाश्चक्रकंकालिनृक्षवटकुथा॥कलंजकश्चेवलगापकटीदिवपार्थिव॥नूदाधनदश्चेवनागदृश्यमाधिय॥नू
हानाथरुगासनकृनाक्षसंनिलधिय॥वाहुकीरककश्चेवक्रकोटकपद्मवव॥महायमहलूलूलूलूलिकहांखपालकः
॥गर्जिताघुहिनाधानमवर्णयनमवव॥प्राहावर्षलवल्गुमघाधिय॥मवदृ॥सर्वगुरुहमज्ञानंमववजावल्यांवि

वाक्य

दाययता॥ सर्वकर्णैव कर्तुं वा वाक्कायकर्मसंगं॥ घटितसकृत्पुनर्मदीनिवर्तिवाक्कार्थरुमिच्छाधनं॥ विगतं धृजपटाकानां॥
 ॥ शिरःसूर्यापनिगदं॥ संयुद्धं पुनर्मां वापुःकं पटकपापुवक॥ स्मिन् ॥ आकाशसंमदावकं पंचापवात्रसंयुक्तं॥ यथादिम
 र्वसुवर्जोऽसुषितदिगुसंस्मिता॥ समयसंमथादंशिरिदूवावयलुन॥ अनननथागतधिवारुमुक्तिर्युयादिवक्तवः॥ १०६
 न्तिकायवकपथमपूट॥ अथवज्जवावाक्कावकं नीलपंकजसन्निरां॥ षट्शिंहावकामश्वखर्ववाथागिनामिदं॥
 किन्नरीगन्धारीवहूटकीपावनीतथा॥ वीणावंतामूक्याहुमूक्यावेवगर्भनी॥ कंसासलाचिकिगीताकवजहमजायवा॥ नृ

त्यालाङ्गमूर्कागाली॥ सावगादूरिका॥ मादगतानियक्मामुमालवीवतथागंरकी॥ उमवीदूहकीवेवपर्वदापमह्वनी॥ रूतिकी
 घन्नाकिंकिणीघृन्नीगथकाकालिकाखयं॥ खात्वीधाषवतीवेवपर्वदापमह्वनी॥ वर्धुनानाविविहं वज्रथवावकवर्धुका॥
 उपकृणनिवासाकृणीयंवापिकापवा॥ खवनीकूलमायागिसंस्मितामरुदीपक॥ रूमीअवस्यगीमारु॥ खखपीडादिकुलिनी॥
 कदाविदमनूखदामविहावायज्जगपिव॥ खखविक्तारिनयाश्वकानयमुयथावृवि॥ मूकसर्ववज्जानांसाधियमुकावयता॥ य
 क्षपायात्मकायकूलीमात्सकूलीनग॥ हाषंर्युयायथापूर्वमावगातादिकचह॥ शिन्नगसर्ववज्जलादिगुधनधनमिति॥ अ

वाक.

नततथागताधिवासनास्यसुकिंक्यादिवदना॥ निमक्तनक्तिवानंवसर्वपक्षनशामयन् ॥ सुगन्धतेलनवल्कनसुनायथसमा
ययन् ॥ पुनयेहकनभनप्रतिमांस्त्रापयत्सदा ॥ यथादाकाहासंरुगवक्तंमलुलवक्तंतिमादियवनायन् ॥ दहाकर्मरुगकार्येयवत
वादिकंयावन् ॥ अक्षिणीडमीलयद्वजवक्तुमविनिष्ठन् ॥ पृथंधूपंगथादीपंगन्धनेवाद्यमवव ॥ सर्वकर्मवृत्तयथागुप्तमकर्महापू १०८
नयन् ॥ दवाअग्निमूखासर्वप्रतिष्ठाकावयद्वध ॥ प्रविष्टालक्ष्मणसंपादफुकितांगल्यकावयन् ॥ मृदंगारुयनिधधियथारुक्तुपूजय
न् ॥ रोजदानदकिष्णंरुगुसिख्प्रसिक्तं ॥ पृष्टिककुजनसोराग्यंसतांगल्याचवाकिकं ॥ अकिक्तदूषणंयागंनानादृष्टाद्युपदवं ॥

अप्रतिष्ठयथादवंप्रतिष्ठाकर्तुसंलग्नं ॥ विषया (असन्नात्तात्ता) कथापुष्पदुग्ध ॥ निर्विकल्पकवृषहाप्रतिष्ठादवस्थापनं ॥ दव
नालाकपालाग्निसिक्तंनयथा ॥ तथाचसक्तिकदवपूजायुक्तसमन्वितं ॥ ॐ किआकावकपथम ॥ ॥ तदाश्वायुववः
धुरुवनीनकं ॥ वजालमध्यादयायागीनीनांयथाक्रमीआकाहागर्हमयवन्तामसंल्लाहवृद्धिमान् ॥ गनूडीहंसीविशीचकाकीवलीः
तिक्तिविका ॥ मयूनीतासुवूडीवगुदवूलिकामला ॥ यानावगीवदुकाकीसुठिनीककपिठुली ॥ हकीमंगीसानसावगृहल्लिकिसुवदि
का ॥ काष्ठवकीवकवाकीवृकावक्षीरुकरकी ॥ कुलकाकीकविलाठीलीलगीविरुमालिका ॥ सनाकृमलाववाटिनीकाकरुंयकीः

वाक

॥सामालसपिष्टवेवदद्विभुङ्गानिनी॥पवंवागदिवकं ववहुरुवकयाहं॥अथवासासुगोहयाकुजाया॥श्वेवपूर्ववत्॥
पुष्पायायासकासर्वदंदाहवासनापना॥रुमीसुक्तं याहयाश्चमदीपिनीमगा॥अङ्गुजाश्चन्दककुंयंगुलपदकी॥आत्मकं
हणीयं वक्तुं संखदजव नूपकं॥वदुर्थजना नूनामवज्ज्यासकनामगं॥रुमिसाधनमकुलान्निक्छादिकानववत्॥अख्यं ११०
लसमानययावदसुसदसकं॥अख्यंगुलनिप्याटंदङ्गांगुलपोषिकगथा॥दादङ्गांगुलवङ्गाकशोवदुर्दङ्गाङ्गाकिमवव॥धाउ
ङ्गांगुलिकुलनकुलवद्विरिकालना॥अख्यकुलमाननयङ्गाङ्गाकुलवर्नं॥विंढपंलकुंलुनमनकावागुलानिका॥पगानियः

मकुलानिद्वयदशंप्रमाणा॥कर्मान्नूपरकार्यजानीयावविवक्तुः॥अक्रान्तस्यगिरिर्गोचिरागंखानितमववत्॥सर्वः
जितानिक्छानिसामानाधानाधानालकङ्गा॥कुलुस्यासुरागनउसुकुवकावङ्गा॥डासुस्यासुरागननमीककुवथाजयत्॥अ
थवद्विभुनमीवगथासुकवमवव॥गदासुवेदिकार्यं वयथाडासुप्रमाणा॥कुलुमाधुवजासमसककुविजयवत्॥
ह्वगयीगंवक्तुं वरुसुदविगमवव॥यथाकर्मान्नूपरकार्यजानीयाववक्तुः॥किरुसार्वकर्मिककुलुस्यङ्गाकिकुलुलहादुर्दङ्गा
विहासवत्॥डासुप्रमाकवानमीवजावलिवष्टिगं॥गदासुवेदिकादयश्चकुनङ्गासुप्रमाणा॥ङ्गाकिंकववाकावाहुरुपूर्वाननंरव

मयदं॥ वक्रवर्तुमहादीपं विष्णुनववर्षां॥ यागिनीविद्युत्वापिदवादिषूकलारुवां॥ दवीनागिनीयक्षीरुगिनीवरा
 वसायकं॥ किरुत्सर्वमिष्टादकथमदवकुलारुवां॥ दवीनागिनीयक्षीरुगिनीवरावसायकं॥ सागरायापिगामदीमाहुमागामः
 हीरुवांधवी॥ माहुगिनीरायावरुगिनीरागाद्यायिका॥ स्वमाहुमागारुगिनीरागीनयीस्यपुष्टिका॥ पिदुमागामदीशिः ११३
 पिदुवस्यार्यका॥ रूगितापुष्टार्यादुष्टार्यारुगिनीपूनः॥ स्वपिदुगिनीपुनीरुसोवदुगामरुजा॥ जगतायायायाः पुनीव
 पुनसोवदुगार्यका॥ दूदिगार्यारुहुमाहुः पुनसोवदुसुहुका॥ दूदिगार्यापुनीसमाख्यानाषड्विंशतिद्रुतिका॥ वक्रवर्तुसमाख्या

ताज्यायुधादिवपुर्ववर्तु॥ रुमिद्वंगमावेवषष्ठदीपनिवासिनी॥ मलापकसमाख्यानापुष्टायायात्तरावकं॥ हाकिंवकंसदाक्ष
 षाविह्यास्वारसुन्दरी॥ वक्रवकादिसर्वरू नूलासविलासगः॥ पूजनंकलरुक्षविह्यास्वारसुन्दरी॥ वक्रवकादिसर्वव
 वामप्रदिक्षिपाणिना॥ पहावः सर्वश्रुत्मानिदापयत्सर्वसंगगः॥ थयंतामाविधंदयाविधन्दयालेखनानात्वमवव॥ इत्त
 यवासनात्सुखात्पूजनंकनूवक्रधृक्॥ पूननागस्यवक्रस्यपूजनंदादहावृव॥ ॥ अथगः संयवज्ञामिअग्निवक्र
 सुलकं॥ जानूनस्यकनसुकोपाणीशुवंगिषावयत्॥ अंअग्रयस्वादिपुथमाहुगिर्दयापयत्॥ अंनमः समकवृद्धा॥

नाममूकस्य हानिकं ब्रूयादायतनं समादिता मन्त्री वल्लुगश्च स्वनाहलां ॥ लक्ष्यं द्विवक्त्रं सागुरागुरं तथा वक्त्रं निर्मलं
 वक्त्रं मयलक्ष्यं ॥ वंशं वक्त्रं विखाहला सर्वसम्यक्लिका निहा ॥ द्विहिखामध्यमं ह्यानिशुकं पाहामहला ॥ चक्रं विखासमा
 जालायुषिसे विहिवासना ॥ कन्द्युसनिहतिग्या नूपवेर्यसुखर ॥ निधूमा विमला वंकिना गमगायवृद्धि कृत् ॥ वदः ११४
 काकामलिपुलाशुसा वंकाय मं ॥ पूष्यनागनिशावापि सर्वपायकु नक्षत्रि ॥ वन्धकपूष्यसंकाहं जवाकूममसन्निरा ॥ सफट
 मन्दवर्णं रुद्राक्षं वर्यं वसुधं ॥ वमकाकायलाही चमलगीही रगध्वान् ॥ कर्णना नूला गंधिश्चरुं ह्नुना विपयं वं ॥ वीणा

वल्लुमृदंगमदिहं खकादा नमस्वन ॥ अतिगन्धी ननिर्धोषा अग्निश्चैव सुखावद ॥ श्रीवत्स रुद्रहं खादु रिहल कलहा कृति ॥
 ध्वजवामलसुदृजस्वसिका श्रगजा कृति ॥ निशं वददिक्ता वलिं वकपि उमदार्थद ॥ नरं सांस्वसम्यक्लिना वृवा नागसं
 पदं ॥ वं वलापि मखाहाला विहिखा वहुधूमला ॥ रुसकि ससूलिंगा निविह रुमाना नूजा कनी ॥ मद्रूपकं पिनाया मिमूहदं स
 तिनिधुवं ॥ मद्रूपमकि वामनमूह ॥ पुसकि मदिनी ॥ कृष्ण विद्वचि गोवासो वकि ॥ गायक्यं ध्वं ॥ नृपाना क्वाहा नाहं यदा स
 नापतवध ॥ विध्ववर्णा धूमरुहल रुहमवर्णिक कर्वद ॥ नृकपनाहने नारुं ॥ पिता र्द्विनाहा कृत् ॥ सवागा न्मादूर्गन्धाज

वाक.

पायात्मकस्वयं॥ अग्निदाहः॥ अंवा विद्याय स्वाहा॥ अश्वत्थः॥ अं वज्रलगाय स्वाहा॥ प्रक्षयः॥ अं वज्रयस्त्राय स्वाहा॥ उ
द्वनस्य॥ अं वज्रकवनाय स्वाहा॥ श्री नृकाणां॥ अं सर्वपापदहनवजाय स्वाहा॥ किलानां॥ अं वज्रयस्त्राय स्वाहा॥ अश्वत्थः॥ अं
लानां॥ अं सर्वसम्यग स्वाहा॥ मधुकः॥ अं वजाय स्वाहा॥ दूर्वाया॥ अं अग्निदाहवजाय स्वाहा॥ कृष्णानां॥ कर्मात्मकमलासः
नस्वदवगावीजनिश्चिन्तविज्ञवीजपनिनगं मधुलवकं विरावयन्॥ समयवकं हानवकमाकृष्य प्रवक्ष्यन्॥ अग्निजगत्स
॥ अग्निजगत्स विरावयन्॥ पादक्षवमनादिकं पूजास्तुतिः॥ अर्घ्यपायकपूजयन्॥ स्वदगावीजापनसामयद

११७

विसम्यलिङ्गः॥ प्रथमं दवगादयापञ्चाशत्थयः॥ अथ दयाश्रुयात्॥ अथ सफाधिकं यावत्सुखसहस्रमभवत्॥ दद्यात्तूयं अग्निवकं वि
वक्ष्यन्॥ अथादिसर्वदशषु दवगामि वक्ष्यन्॥ समिकुण्डादियुगमलुलरुक्मवतादिकम्॥ कसमहि वसिष्ठा लाधूपंगमं
दिपाकं गमय पापे नपायं॥ दीपमर्घ्यनिवशः पूजयथाक्रमं॥ यथा पूर्वाङ्कनविधानेन विसर्जयदग्निवकमलुलं॥ लो
किक अग्निवकसं पूज्य लोका रुद्रक्षमय यदि॥ दिनवलोकिकमग्निवकं नालोकारुद्रकथा॥ वावादीकल्पसं पूज्य स्वायया
नं विहाय॥ किल कीलीमहासादृशी गनृहसखासदे॥ कालमुखीदवीया गन अग्निवकं रुद्रक्षमयन्॥ पार्थिवदरिभ

वाक्य

कंकार्ये सिद्धातनासंहायं ॥ वृक्षाया लाकया लाघ्यानि दवा विधि क्रिया ॥ नृकिड पचकं दिगीयं ॥ ॥ अथ गदा शकं वक्त्र
संज्ञान वक्त्रं सप्तक ॥ विष्व वल्लुं पंदिं गाना सनी लांकूलक मा ॥ किला गिमा शि सखा वज्र पू वसा मक्षाना ॥ न गिन ताखा प
मिनी वसंखि नी विरुगजा ॥ मक्षानूपा वक्रा नी विला सिनी मखा ॥ पृथका मी क मदी वनी ल्य लला रु संदनी ॥ ना म रु म क्षाना ॥ १११
माक्षाना माखा मक्षाना मक्षं ॥ मक्षना मदन पीया वका मिनी व मक्षका मिनी ॥ मखा रु वा मख पिया व मख म गि मा रु पु मका ॥ सोरा
म म गि सोरा म म मक्षका रु पु म मखी ॥ या नी नू पी स माखा ना को ल मखी वे न ना यका ॥ य हा पा या मका सर्व वल्लुं नाना विध न

कथा ॥ लुजा युधं पूर्व वल्लुं या रु मि साधू म गि रु था ॥ मक्षानं न लारं वल्लुं यं रु मक्षका नका ॥ मक्षाना मक्षाना कायं व मल्लुं ल लु मक्षानि
हा ॥ वल्लुं लखा ठिका लं व वक्षालं व विरु डि ग ॥ पूर्व दि व व रु थ रु था गि ना रि य था क मं ॥ गो नी नी नी व गाली व च म ना वि न्य
मत्य न ॥ का ल वा सी व रु द वी पू क सी स व नी क था ॥ वल्लुं ली ला नी नी क मा गा ॥ वि रु था पूर्व वल्लुं सदा ॥ वा ना क ना मक्षान व क
मद्य क मल्लुं ल मक्षक ॥ वाल मल्लुं वल्लुं रु रु था ना युधं स व द हा वं वा मा व लो दि वि रु न वि रु य द व मक्षान रु पा धू मां व का व य
मि रु ला ला व व मक्षान वी ॥ वल्लुं व द न क र्पू न ला ना रु ला रु म न का ॥ ना ग हा न व वं प कं व क दू नू रु द व दा नू कां ॥ दि ग्या ॥

वाक

लादिगुलकवनविहीनलहने॥ हाविदूधगुनूवेवगुनूववितनो गथा॥ दिव्यहि नमु विहयासुखंदो नौकानयन॥ कालां
खमकुलिकावकुकखहिलानथा॥ विहना नानासुपातं कुर्याच्छमासानमभग॥ खमअनगुटिकायुयादलपनसायन॥
पादकानसपातासिद्धिं कानयद्वध॥ ॥ अथान्य॥ गमसंनक्ष॥ सर्वक्षमांगरुलं॥ क्षणवृद्धिकनीरुमिषकुलं ११८
॥ गदविद्विहक॥ सर्वसम्यहिकसर्पिः॥ समिहकाविवर्धिका॥ सोयाधिककुकनकासर्वनकाकन॥ क॥ ॥ ग॥ कि
कसिगमिद्वार्थ॥ प्रसिद्धकदूलासग॥ तिलपायदनंविद्याज्ञानधनार्थकर्वकं॥ मदावलकंसापंवायूवगंयदंयव॥

॥ आयुर्वृद्धिकनीदूर्वा॥ माधूमानागनाशनं॥ यहापदमधूकी वंदक्षनंसर्वसोखदं॥ लू सार्थसिद्धिदावकिर्त्तकिंदयात्ससद
वगास्रहसंकासानूयपहलूयं॥ ह्यादिकर्मकन॥ पाणीपहागुगायायासुखुषधयरावना॥ गगाविनिर्गंसायिमहाहा
नासुगंसतं॥ गनसंतपथदमिद्वकमात्मानसंवने॥ नवंकनागियाहानंचकंसोराग्यसम्यदं॥ ॥ ग॥ गिशावजवानादि
कल्यमहागकुवाहलूनवकहणीयपूठ॥ ॥ अथगदाकगावक्षविहवकंसिदंसूटं॥ नकवर्षुषणिकागंसर्वस
हावकंपनं॥ नागिनीयश्चिहीरुगंधीनांनकाविविनी॥ पातकीअनूनीवककी वयमक्रियासुथा॥ कालसूणीक॥

कूलीवतपतुषुगायना ॥ नोववीवसहानो नदीगेलयाकीधिपवनी ॥ धर्माभासावागावसदमसुनीरुमिका ॥ गीतकासवनाचेव
वकयनीगुदरिदका ॥ नागकाकवीगंणवपानीयषूकानीत्रिका ॥ असिनखीवगवनीकुवधानीववजिका ॥ कंरागुमहादवीव
लुवकस्यमादहा ॥ गुजायूधंपूर्ववगलूयायायसूनूपकां ॥ दीपहमगानकंगरुहमिधर्ममद्यंतग ॥ विरुस्वरावगुडलंसर्वगंव ॥
ककर्मग ॥ स्वरावंविषाकनेनात्मावककरुगुवावदि ॥ सर्वषामवविहयवकागांसियथाक्रमं ॥ धानपालावसर्वषांकुगुसुना
निधादहा ॥ एवंषाठहाविहयाहून्यागाक्विवकल ॥ हूनविहानस्वरावतान् ॥ हमगानरावनास्वयं ॥ मनिमगिचकषु

एय० का० (६) घृ० नाम० ४॥ अ० न० सर्व० मि० दं० प० श्र० क० द० यं० क० थ० क० ॥ न० न० सि० द्वि० प० द० म० क० न० न० व० लु० र० ला० द० यं० ॥ ३० न० म० ४॥ म० ४॥ न० वा० सि० न०
 दा० का० न० न० का० न० य० ॥ त० य० थ० ॥ ३० व० ल० य० व० ल० ल० ल० ल० ल० य० द० व० लि० जा० य० खा० दा० ॥ स० वा० य० गं० क० ला० अ० र्जु० न० स० वा० य० गं० क० ला० न० व० ऊ० प० या० व०
 दा० ग० क० ति० पि० अ० रु० गि० ॥ ३० वा० म० लु० धू० म० क० णी० वि० धू० ऊ० द० न० २० प० व० २० द० व० द० रु० मा० न० य० खा० दा० ॥ वा० म० व० न० न० न० न० न० न० स० म० न०
 लि० खि० त्वा० ग० स्या० न० क० न० का० (६) दा० ॥ ग० जी० ४० का० न० व० क० ह० यं० रि० ष० क० म० (४) म० क० य० दं० लि० खि० त्वा० अ० क० म० य० क० प० ग० ॥ व० णी० क० न० न० म० लु० मं० ॥ ३०
 व० ऊ० का० द० व० ला० व० ल० द० न० द० द० य० व० वि० धं० न० य० थ० स्मा० न० द० य० मा० न० य० हं० ह० ॥ वा० ल्मी० कं० म० या० प० क० रा० व० स० दि० न० या० वि० न० लि० मा० न० क० म० या० ह० किं०

वाक्

कृत्वा कनवीनरुलादकनसवयुगुनूधूपंसविदिनक्रिगुक्रवल्लिदयासफादनादकधावापागयकि॥यदिनवयंकि
सफमदिवसखलुखलुं कृत्वा यटकपुक्षिणनयांपवादयत्॥वर्षकिवर्षापनयनविधि॥उंगगलमूनिगमः स्वाहा॥
अननाप्रकालिगमुखलासंसफजायंकृत्वा कस्यविदिगधानेदावस्तुयथत्॥मुखवधरुकारुवगि॥उंमूकागिष्ठकिम् १२०
कःकाहगित्वागलंसूकानांमृगपूनिषहादवदरुस्यमुखवन्निःस्वाहा॥वलीवर्द्धस्यापकिगवसूयाइसंसुयथत्॥यस्य
कस्याविकार्यमुखवन्धवावदानपणिगसिद्धिः॥उंनमानिगारुनवायविलिशकिलागदूषलमृषिकानारुवर्द्धवध

मि॥मर्कटाङ्गावसयसकावनादादीनां॥उंनिवाखिलिस्वाहा॥उरुनसकलवकदसुनलासककाचकविंहागिवा
नंपनिजयगुदक्षवागिकायांवकुक्षाहलसंकंकपयत्॥निनूपदवारुवगि॥अथवाविषलवधवाजिकासर्वपमू
लवीजधनूकेनेनवीनमदाकालवीजंवा॥उगवांवसुसंयेअंसदिससूकवहंगमाहंनूधिनलालायवुरुदह्मांपि
पूषधूपंवलिदयारुत्पयादकिगसुनसंगुक्रवाभनकजनीकाधवाजनसदाकालानूलाय॥गयथा॥उंवलुपवल
ललालथदववलिंगास्वाहा॥सवायुगंकृत्वाअर्द्धवागलिंगहृदिवागावक्रुपयावदागदृगिपिअक्रुकि॥उंवामू

वा.क.

धूमकक्षाविद्युक्तिरुदनश्चवश्चदवदरुमानयखादा॥वामवर्तकलज्वकनसूमनूलिखितगत्याथकनका
रुद्राङ्गीकावदुसूर्यलिखितामाश्वसकृपदंतिखिदाकुसुमजयवर्णनहसूरुमं॥डोंदुकादवलादवतुदनय
दयवविध्वजयथासाकदयमागामावयहूरु॥वाल्मीकंमयापंवगवदसितयाविकसिमाप्रवाहुकेंद्रलाकनवीवह १२१
वदुर्विहतिरुपयगाहीमायाकाववचकगारवति॥डोंदोंदोंहूरुदविदश्खादा॥अननसकृष्णमयसरिमकापानी
यसूनपक्षिपदधिविनस्यति॥कवकययसूरु॥डोंवकखामिवर्दलासाधियतयकवृशरुदरुदयश्चनवागनिनिश्च

नालयश्चूरुद्राङ्गीखादा॥नेयवागुरुमार्जनमनु॥डोंअनूहूरुद्रादा॥उदकंपविजयनरुपकावयत॥नरुवागनालयगि
वलासूलंसफखलुंरुत्वासूनवच्चाकललोहायगि॥अपामार्गमूलवच्चावदुर्थकलनालयगि॥सफायलुंकासंगुदीत्वावानमूल
मार्गमाधनयत॥मद्यंविनस्यति॥उच्चगमाक्षर॥ ॥००॥गिवरुवकपथम॥ ॥अथवाक्षगाअन्यंचवाक्षकुरुकथ
गा॥वक्रमंजिस्वर्गवदुषणिंतात्मकंविदुं॥पूजार्द्रात्रिदालस्याधर्मविरुद्रुणवयगागृदविकाम्नीविकावअर्थविकाविधा
गका॥पूजविकारिषकावक्षानाहुमनुजापिकाङ्गीकावमानसकायसलार्थकनूलायमां॥वाजविकायवदादाहानलागय

वाक्य

नयन्तां मन्त्रानां कर्पटनामालिखन्तं दूतं प्रक्षिप्य कनामलुनकमुखं कपीठयन्तां मृगकण्ठवसुधयन्तां नमुखवसफज्ज
फनमुखनपुदनानां कृतादद्यात्तु मिगारवनि ॥ मनहिलाया वामदक्षपूरुनी कालिखित्वादीप खौहियांगाययन्तां वायु
यका ॥ मन्त्रं लम्पेलिखत्तु यन्त्रं ददस्य नामं लिखत्तु किं पिष्टु माध्वपक्षि यदृष्टं काकं दयाच्चातिमन्त्राटयति कृन्तुकाव ॥ १२३
स्यदक्षवर्तुतः मृगणं जनत्वष्टधिकसंयन्त्रिज्या उदकमाध्वनि नूत्वा ॥ ननस्त्वपयज्ञासिद्धिरेनोवनि ॥ अथ नानुमानेन
हमिदृशि ॥ सिद्धकनवापिष्ठकनवापृष्ठतिष्ठत्वा कावायकवर्षत्वा उपविवाञ्छेदकं यन्त्रिज्या ननां ॥ यतिमन्त्रादावस्यंया

वत्यादगलसुगुफां कानयन्तां गद्वपनिदसुंदलातं नामं विदधितं ॥ मन्त्रमकां लसासुं जहादवगृहे कद ॥ हारीरु यथित्वा उपवि
वाञ्छेदकं यन्त्रिज्या सिद्धं यन्त्रं पूजयन्ति नन्वाति ॥ यन्त्रं सर्वयन्त्रिज्या कानां रत्नाटकी गीर्वाणलना कानां रत्नाटकी गी
र्वाणलना त्वा ॥ नाना मन्त्रं गुरुमुखं ससुं श्रुयात् ॥ सद्यः अपस्मात् न मृयति नृधिवं रुदयति ॥ नवनवा नृधिवं वा मृयन्तां ॥
मन्त्रानां रत्नाटकी ॥ यन्त्रं तिष्ठत्वा दक्षिणादिमुखं वासपादना कन्यामकालिखनं कृत्वा ॥ यस्य नामा अक्षसदसुं श्रुयात् ॥ सद्यः
न मृयति ॥ नकनिलपियं गुह्यं कानां अक्षसदसुं श्रुयात् ॥ यन्त्रं मन्त्रं राग्यरवनि ॥ स्वर्गलीलस्वर्गलघुना कानां मन्त्रं

॥ संश्रुयात् ॥ धनधान्यसमृद्धिर्हवति ॥ सर्वगुणरुकिर्गं कर्म ॥ दकनदीवपूयादि ॥ दवदतकथा ॥ दसददविदं वपूयादि
 नृदात्रययोः ॥ नगः नृपलं वपमकहावमवव ॥ पियंगुहावपूयां वस्वगसिद्धार्थककथा ॥ निर्गुणीरुजकहाला गोवावनेतिक
 ॥ कुकं वाननीवीजमवव ॥ मनहिलापि रुलाववडहीलनिम्बपणक ॥ दनकल्लुवीजकदिगुरलाटकं कथा ॥ पंचविं
 ॥ गतिमगाः समलगानिकावयन् ॥ यथदंगुटिकां रुलाआदिसवपयाऊयन् ॥ डयवासापलरुलाकुसुम्यामिहावगः ॥ पूया
 ॥ दिसं संयुक्तनयंवगयनपीषयन् ॥ स्वसुदवगयावाक्यपदसुसुसुसुं ॥ नवंपूर्वावधाननपुतिषाहामंवपूऊयन् ॥

१२४

॥ गहानामंजुनंलयमसकपंचदाययन् ॥ नरुलासर्वदाघेमुस्यननरुसंजयः ॥ वालानां हिलसिलपंवालगाहेः पूमवाका
 ॥ दसगदधूपंदयात्यस्ययन् ॥ सर्वकल्लुषुहिवसिलपंनिकलारवति ॥ समामध्यविवादवराऊदावललाटकावयत्सऊया
 ॥ रवति ॥ कनवलपयन् ॥ स्त्रीवसारवति ॥ कन्याधनयत्सुरागरवति ॥ दसपहावानानीं शिथानिबूलपयन् ॥ हाघंपुस्यति
 ॥ सर्वकसुवागधूमासुहापुलपयन् ॥ स्वसुहवति ॥ मरुकालजगहाविहीनां पंचगयनसदापि वन् ॥ गहानिष्ठं निपुणवः
 ॥ नीरवति ॥ नकसुषुगल्लादकनपि वन् ॥ हूलंपुजायति ॥ वरुनागधूमसकलपयचक्रुवागं नाहायति ॥ विषदं हाकालः

[illegible]

कुर्यादुजायुधरुपूर्ववत् । प्रह्लापायस्वरावनडपपीलवसंस्तिगाहमिन्धिमस्किचर्यावदाहागदुवक्रका ॥ वदुवसुमिदं वक्रं
 निर्माहकायसंस्कृतं ॥ पंचलखादहादिरुसर्वलक्षलक्षिदं ॥ दिवस्यदीर्घगावर्जुनं वदुर्मल्लुल ॥ अस्मिन्महानां वानराणां वयथा
 क्रमात् ॥ पूर्वस्वदाभूजहयाठुठुनसंधानिका ॥ पश्चिमवर्जुनटीचदक्षिणं वडवाम्बा ॥ काहणागवदुर्दवीं ज्ञानादियथा क्रमा
 त् ॥ वक्रहालासखीदवी वक्रधकृदुटीमखा ॥ वक्रखलुवखलुवदुर्धुदिरुपूर्ववत् ॥ मलानोदकनाह्यामाहाला मालाविवाजिगा ॥
 वीनानां वलुनूपरुयथावसर्वथा गिनी ॥ मल्लुमालाधुना सर्ववीनाणां पद्ममालिका ॥ ऊटामकुटाश्वनवीना ॥ सर्वाङ्गहमल्लुग्धना ॥

वाक

उन्नतपीतयागिन्याकटववूठमहिग ॥ सर्वलक्षसम्यन्नात्रावाकलसंरवा ॥ वीनाक्षंसर्वनामानिप्रथमवकादिकंपनं ॥ वज्रवा
नादिगांविष्णुपमथानिककवलकं ॥ खलुकपालामदावकं कंकालककालकं ॥ विकटदंष्ट्रिसुनावेनीश्रुमिगारवज्रपुरा ॥ वजाह
कुलिकंवज्रजटिकंगथा ॥ महायागिनीवज्रवावाकेसुखीवज्रहृदकी ॥ महादवीविनूपाकी महावलननवज्रकी ॥ कालमूल्या
काक्षगर्भमनहवीवेनावनी ॥ वज्रसुखमदावज्रवावाके ह्यनजकिनी ॥ धैर्यस्येमाकहानायायंशिवज्रकी ॥ हावनामयथाद
वीलीलिंगानिउकावयग ॥ यदक्षानाक्षवज्रानां दानायापिगणैवव ॥ यमगर्भपूदवीनां स्वामिवकाययसुखं ॥ किमुस्वाम्यादयूव

१२७

कुरुदकल्ययथाजिता ॥ तवसर्वविशयकचतुनूपहसदसकं ॥ नामागुणारुदरिन्नानिर्माहकायिकीमकीयांयस्यावकस्यायातु
थागिनीप्रथमांगरी ॥ गयादादहाविह्वयासंवावीपीपपीठकी ॥ हावागथादहारुमीधवकाक्षादवाहिनी ॥ वजादीनामविह्व
यापूषकुत्यादिकालकी ॥ वीवध्यवाक्षंगथावेवहमहानवासिकथग ॥ दग्धंवपुपमंहुयांघनीयंवायदग्धकी ॥ हनीयंखलि
गंवापिचतुर्थक्षयखलिनी ॥ पंचमंहीषगपाकीषष्ठंवापिरयंकनी ॥ सफमल्लरिनरुडवधककुसुमी ॥ महानवकपाला
श्चक्षुहमहानकसदा ॥ सामान्यसाकटकाध्यालिजागन्धवीगथा ॥ आद्वयवाचतुगर्गरुहिवकीवपेक्षवकी ॥ नानावगावसंधा

३६० वज्रपूतनपिनादहं

वाक

वशागिनीया० वावकी॥ खवनीरुवनीलन्यापिसापिमद्विंका॥ नपिनृत्तं कितानंदानदासमाधिकावत्ता॥ कवन्धकधावका
न्यासिनदानाहुनृत्तकं॥ सूककापाददीन्यहुनिव० कंकावादिहुत्तुकी॥ चवभवनिमाधिकावयनकणदिकं॥ नानावर्ण
मांहुयावादनंयस्यस्यहु॥ निधनंमहुलंरायासंवाधिकावत्तासनां॥ यादहंरुलं॥ सर्वकर्माणिअनीगावीर्यमुखाश्रयव १२०
ती॥ काटवदं समाकथयविघ्नसूक्तदयत्तुन॥ नसमाहायनवजावसायनंकनूगविधिं॥ अपान्यतससंवक्षवसायनविधा
रुमं॥ यनविह्वलमायहासाविमोयायलकहं॥ क्षामसिद्धककुबीरेषकपीकवचनं॥ एथक्पृथक्मानतवाङ्गनामवः

हावंचनं॥ हासपंचकलायनामधभागागिसम्भव॥ सामान्यंशीरुवदानवृद्धसूक्ष्मंविवर्जयन्॥ नकवर्णसूर्यांगिश्च
सूक्ष्मवज्रवत्॥ दालिकासिधकहायासुगंधारुहृतावका॥ तस्यांपूषांप्रहासुस्या, सर्वाश्चिंतयंसिद्धिदं॥ हृद्गुपकपुसूर्याया
प्रपहासंजनादिकृत्॥ अथकागुज्ञावगुहसूटिकसंनिर्णं॥ प्रहासासमिगमनारि॥ स्यात्संगदकमुनीगुरं॥ दत्तस्यवलसं
हृत्संरेषकसंगदंवत्॥ क्षीनादिराजनायनंपीकवचनसंगदं॥ क्षीरंजनालिकाखारंमांसजंक्रिष्णघृणं॥ उरुमंजीष
जंसर्पिमधमंनालिकारवंअधमंसांसंयुक्तंनसायनविधिरुमं॥ वयूषपूषिकचयसुनूक्तसंज्ञापातयं॥ सुवह

वचनकतः॥ याधिधिसृगनारिम्याहेषजंभक्तिकाननं॥ वरुःसमारवतित्यंप्रहृषसवरसदा॥ वरुचनरिपाकथंवरुच
 नरिगातनपनिष्ठनकर्मन्नाजीवननंजनासर्वहुकपकृष्णयथा॥ निरंजनपीगदनिगंसलामलविर्जितं॥ हुच्य
 वरुवयनवरुधोषविवर्जितं॥ प्रसन्ननिर्मलसुखंकिंवित्कृटकसकृवं॥ हुच्यसूटकरवद्वंविष्णुबंधनमूलमं॥ मर १२८
 त्यासांसरुथपा नंस्त्रीसुगवविवर्जितं॥ धावाविनिगःसगुणं वसुधसंप्रियालयन॥ सार्धंविष्णुसमायूक्तं गुदाकस्यय
 वलयन॥ दवतात्राधनकार्यमनिवलिसमन्वितां॥ स्वाधिवरुथागनजुविदिनमकुजापिगां॥ दानपुष्पंरुकाकार्यनि

यस्तुतावकात्रयन॥ तिसांल्लनसुपाफिगिष्ठवनिधिरुतां॥ सुखंमासुनसंपाफंमोनरुलासूचिमान्॥ सुदयसाधः
 यस्तुम्यकृपाववलवानिव॥ गनःयश्चासुवयकर्मदहावर्षादिगावगः॥ पर्वधयंरसंवकःसिद्धिकानसूधीसदा॥
 वापहासिद्धिसंपाफवलियालितविवर्जितं॥ नानागाविनिर्मुक्तंजीवदाचयगावकं॥ दवासुत्रमनूयासांस्त्रीणांरव
 किवल्लरा॥ पंचवदिवसुनानित्यंवाधरुदकयसदा॥ पगकर्मसंपूर्णमिष्टसिद्धिंयवर्कं॥ कामाधनसमयद
 खवनीसिद्धिमाप्नुयात्॥ वृक्षांगीवृष्कालुनिर्गुलीवागवहुजे॥ धूलवपणनिर्यासकसुनीवदुनाचिगे॥

वा.क

उल्लासयति यः स्वागतं वदन्त सप्तचिन्त॥ सर्वं वागविनिर्मकं निर्विषयात्सकाकिमान्॥ गिरुलावदुनात्यनां वृक्षहीनलया
सदृश॥ कस्य योयं पिवद्वर्षसम्पत्तिज्जवा नूजा॥ गिरुलावदुनवृक्षकस्य वीसदसं वयं ग॥ सन्मासमाजसं सर्वो दीर्घाय॥
स्यात्सवपवान्॥ कस्य वी गिरुलायकं यावाहं मासं संहिगं॥ यः पिवत्सगं यो गं सरवलिक्का नूजं॥ वदमस्तिकषाया घवमासं १२७
रुक्षयत्नव॥ यस्तु सजापयतसिद्धिं विष्णिगानां संहाय॥ एवं सर्वं क्रियावीना वृक्षथा गिनी कलाहवा॥ निर्मोहकायमखिलं य
गिनी विधिना वना॥ ॐ गिरिकायात्मकमहागुरुपथागवसायनविधिः॥ ॥ अथ श्रीवज्रवामाकाशपूजां कृत्वा यथाविधिः॥

२६

२६

गृहसाधकप्रवक्तामिसहायवगुनूस्वयं॥ चन्द्रिकावगथागमाजकिनी नूयिनी वग॥ यवावगान् वलिनीयागिनीषघनासुथा॥ वा
महर्षिमाह दूर्ध्वाध्यागरुदिकां॥ प्रविधमेकस्य वृक्षीनाय विविधाईकां॥ गथागं वज्रसूर्यमालालिकयनमाश्वकं॥ दनूकं वाम
दसुथां विमं पृथगां विदू॥ लावनामामकी गानाया लावालावनासिका॥ वज्रधालीव्यनीह्याषघानमिगासुथा॥ एवं गिरिविधं
यावृक्षीना सर्वजगत्पिनां किमिगर्हादिकं नृगथाजकादिनायकी॥ कल्लुहृष्टगगादवीजंगुलीषूनागनी॥ गुक्षसत्तगथादवीगल
सुक्षगथागनी॥ नखलुकिगथावीनी कल्लुहृष्टनव्यागिनी॥ अगुदसुक्षमयगुक्षविमर्जयद्व॥ थायस्याधियमितं तु गस्य गस्येव

वाक

सर्वकं ॥ नाम्नाय वमदा हानं वाक्यानीनामचनं ॥ कायवकुमदा सिद्धि सर्वपाया सुखावदं ॥ नन सोख्य सुवर्तकमदा दयं ॥ ॐ
किवा नादिक ल्यकाय वक्युथम ॥ ॥ ॐ त्यादहगवा स्तामिआ वानां वयावनं ॥ नदसं सर्वगुरुणा मवरा यरुयथा ॥
विधिं ॥ वज्रवा नादि मदाय वी पूजां कृत्वा यथा विधि ॥ गृह साधक प्रवका मिमदाय वीगु न सुयं ॥ वृश्चिका वल्लिया गिनी नूयि
लीवगा ॥ पना वृगानु वृह्नि नीवानादी वया गिनी रथा ॥ वा मस रुष वल्य नं वद हयथा गरदं की ॥ विविध मके कस्या रुवी नाव्यि
विधेई की ॥ गथा गरु वज्र सूर्य मालालिक पन सा ह्वकं ॥ हनू की वा मस रुषां दि संयूट था गकं विदू ॥ लावना मामकी ना ना पा ह्व

१३१

वनेनात्मका ॥ वज्रधाली वृत्रा ह्या मया गिनी पवित्रगा ॥ एवं विविधं ह्या सुदवी सर्वक गत्यगि ॥ खिगिगार्शो दिकं तल्लु था जके
निनायकी ॥ प्रकाणय सदा वज्र कर्म क्यारा नायकी ॥ वक्रा मिकर्मकं दिवं सर्व सत्तायका वकं ॥ यन सर्वया मया सुया किदवा दिकं
तथा ॥ यथमं वज्रवा नास्मा सुल मकु वकुर्मकं ॥ आ ह्या पय किदवी दु स्या मारि ग्य कलिं गक ॥ ककुल वृदि डत्य नआ मामी यरुआ
मामी यरुआ ह्या ॥ सफ रिंता लक म (ध्या) वयस वम ह्वनी ॥ वीजा क्व व डत्य ना रुदि पद मल्ल मकु क ॥ न वमन ना ही व ॐ ह
लाक पन क ॥ ॐ स गिग सा ह्य मसा ख्या सा यद हूंक रुद्र ना स्वा मा सा वल्या क वरुं न हूंक रुद्र ना स्वा मा सा वल्या क वरुं न हूंक

हं हं २ स्वाहा ॥ उं वं वज्र वा वा दिय हं हं स्वाहा ॥ नंदं मधुलव का गरा वय जा प ध्या न ग ॥ वज्र वा वा दी मुद्धे त्या मूल मरु वृज ला न
वा क ॥ वज्र स्व वा क लु म न दि गंधे नं म क टि नं ॥ रा ग र ग स्या वि सु या नु धू पा द यं सि धि का क या ॥ स वि धा नं रा व त्या धू प ना न न म क्रि ला ॥ वा
श मा ना स्व यं ग न वज्र स्व वा वज्र व लु कां ॥ वि सु च ल ला क ला ना मि ति गंधू प जा य न ॥ मा र्ज व वा कि पं वि कं क का व स न्दं व च ॥ वा वा का १३२
व क नृ क्षा था मा द वी म ध्य म य स थ ॥ ला ल खं क स्य व ता रु क ष प व मा र्थ ना व न ॥ लि ख्य मा नं म दा था ॥ रा वि ह्ना नं हा व क र्म नं ॥ रा म ना स
र्व संधा वृज ना सर्व म दा त्म नां ॥ क पा ल स म्पू टं व धा क हो दा मं वि धी य न ॥ उ ग रु स स मा ख्या नं स म यं प्र णि या ल्य न ॥ या गि नी पू ज य न्

नि सं सा म पा तं दि न दि न ॥ ए वं क र म्पु म रु ह्म स र्व सि धि प दा य क ॥ रा मा सं स न या ला क वा म से दे न सा म य न् ॥ स र्व द व स न क र्म
मा दि ति द हो स द ॥ वृ क्षा पि व स मा यां ति कि म्पू न ॥ कृ प मा न्वा ॥ नि शि च त न्द का षं स्व द सा र्ध कं र था ॥ ना ना म का क क्षा म न स व
ला क स मा न य न् ॥ वज्र स्व वा वा न क न रु क मं गी र्जु र्ज नं ॥ सं यू के र्मा न्धे ॥ क हो ॥ स य मा क र्षे ण प व ॥ स्व का या च न म्गो र्जु स्व क
हो क्षा म य द्ध ॥ नि च का सा मि सं दी प स य वि ध व लं य नं ॥ का क प क रु ग क्षा मं तु वा मि स मा दि न ॥ क ह र्ते ल न सं यू कं स थ वा
ह न मा न लं ॥ न व स द सा र्ध ति क्क म्पू रि वा ना ड क मा न्वा य न् ॥ या ह्म क्षा मि आ ह्म ती मा स न हा क कं च न ॥ क स्य मा स न या द्ध र्द

विदंतं धर्मं दाता ॥ हातं सायं यत्सु सखं वरुन वल्लहा ॥ एकविंशति ब्रह्म सिद्धांतं नाहं संशय ॥ अतं सैगं वनाक्षि
 वा क ॥ सिद्धांतं मदनं सुक ॥ का विद्रुल्लं कानां सुवंदास्युतं वरु ॥ कीउं गुरु वसिद्धि सिद्धि काटि ॥ पवित्रं ॥ गी
 वरु वानाही कत्युही वरु समायागं ॥ वजाचार्य पत्रं सुक सर्व वन मरुतं ॥ सिद्धि दं विष्णु का कषु समाया वल्लि कं ॥ अवं १३२
 क्षामरुतं सिद्धि ॥ पूर्वोक्त्या गथा गितं ॥ नथा गुरु पत्रा कर्म वरु कर्म या ॥ गोविं ना ॥ संका किदादा हो कर्म वायु वरु नतां गतं ॥ क्षाम
 कृष्ण कन पृथु इत्य सक्ति मीलना ॥ दिना रिषु मलाया श्व सर्व सिद्धि वरु पून ॥ गस्मि कालु विरु या मरु वरु मरु वरु

जपित्वा गवा नागु फं कृत्वा सिद्धिं समरुतं ॥ कृष्ण यं यत्सु यो दका हा पक्ष हातं ॥ काष्ठा निष्ठा पय रू भो सुक वरु स्य मक्ति ॥ ग
 रुवे ना वनं पृथ म सुक भव पून ॥ न वरु सुका वंद्या गथा द ॥ हा गुरु का वरु ॥ सफ द ॥ हा रुका वं या रुय दू ध ॥ एक वल्लि विंश मरु
 सुका वंदा पय रुथा ॥ अय श्व ल विंश मरु हा न वी ऊं ति ऊ रुय ॥ एका हा यं वा हा म द या रुका वं सर्व रू सें कं ॥ दिनी यका रु पून द या
 द दामा दिख नं ॥ वरु का रु थ मरु प व नं सर्व का वरु ॥ द हा मरु का वं द या दि ॥ हा पका वं ग ॥ अरु द हा रु का वं व द्वा गि ॥ हा रु प व
 मा रु वं ॥ अरु गि ॥ हा रु का वं व ल विं ॥ हा रु का वं ॥ वी व ल विं ॥ हा रु थ मरु रु का वं द या प य पून ॥ अरु व ल विं ॥ हा म रु की रु का व

वा.क.

॥ अथ यन नया सुवरगवान् वज्रसामिकी ॥ सुखदाया गिनी दवी हां था थामिनी वृष था गग ॥ पहावल वृवि रुयायं
उमव्यग गिरुथा ॥ यमदिता था गिरुजां था गिनी मूल मरुस्य दु ॥ हानवात्ता नवा वात्ता संवृत्ति सत्य माग दं ॥ लसव वृकर्म
वृत्राति संवा नहा यनात् ॥ सुमूला यां यविष्ठस्य सर्व पाणिगदक वंगारु कसानं मदाकर्म रुत्ता मूल मरुस्य दु ॥ दावयित्वा मरु ॥ १२०
साहं गस्य म (अनुवक कं) ॥ सफ रिं हात्मक नकुलं वमाना नुवा धिजं ॥ यावदाका वसा दवी नायकी रिं पाया लिकां ॥ कं का ववाय
विहानं गत्वा स्य ह्वान मासनां ॥ बीजाक वंग गहात्ता इत्य लि दू गिरि ॥ सदा ॥ एके कस्य वी वस्य जूक वमूल मरु कं ॥ डों मदा हा

नयिणा सेग नूप गिरा वयव हूं सा हूं सारुद निरुद (हात्ता रुद सा रुद सादा ॥ डों सरुद हूं हूं रुद २ सादा ॥ एवं मदा समरु गाव
रु नूपं रुकर्म हा ॥ रावयं गुक्काम (अनुयाग म मृग सुनूप कां) ॥ वलिहा संव कर्तु या प (अत्मकर्म समा नय ॥ था ग ल क जा
य रु क्त्वा मरुि हा सद वरु ॥ य रु व कं प्रव का मि सर्व सत्व दिता दयं ॥ पूर्व नूप कु व क वृत्ता मरु मि दं त्य मरु ॥ वं वा व
नयथ मरु दिनी य वि न्य मरु ग ॥ ह गी थ हूं का व द या त्य क् म डों का न कं ॥ वरु ग का न कं द या हूं का नं स क म व रु ॥ मू
मरु का न कं द या द्वा म व सुका न कं ॥ दा द (हा हूं का नं द या रुद (हा ग का न कं ॥ प रु द (हा र का न रु धा उ (हा हूं का नं कं

वाक

॥ सफदहासंकावंचकविंशतिविन्यसगाविंशत्यरुकावंदयाहंकावंचेकविंशति॥ वेवाचनमकानुंहाहाणिं॥ वम
स्तुपयंननो॥ वदिंहाहाकावंदयादरुणिंहाहाकावका॥ वलात्रिंहाववांदयाहाणिंहाहाकावका॥ वहुर्हिंहायंकावंचपंच
णिंहाहाकावका॥ उयवलात्रिंहाहाकावंचोवलात्रिंहाहंकावंचोवलात्रिंहाहाकावकावहुसफवलात्रिंहाहाकावका॥ १२॥
हंकावकावकावकावका॥ उगहायंपूनदयादकापंवाहाकावका॥ मूलमकुलिखट्टपांवहुर्हिंहायंकावंचपंच
त्यनिवष्टिगां॥ दिगीयंवामावहुर्हिंहायंकावंचपंच॥ गुह्यकावंचपंचात्यलिं॥ विरूपासदयागिनी॥ नागाहृष्टिवध्वंवादीनां

कुमानं॥ सदाकृपात्मकायागीमानं॥ सुविरुजंयून॥ गयामाविगसर्वदियापिसायिवदूषकं॥ नान्यकुमावहासिद्धि॥ प्राप्तादूषक
कसां॥ सस्वनाकनायकमर्गसेवकीयगध्वं॥ वरुंकदसंकायाककर्मकिंविगर्ग॥ नागवाजागथावाक्षेसावयनाकमाकनागा॥ पा
॥ वाहाकिविरूपाज्यानाहंखपालक॥ समानायमनागकुध्वानासदावपमकं॥ व्यानकुध्वाकनागकुनागहुलहुलयून॥
कर्मकटिकविरूयककनायनागकं॥ धवदेहाविजयनिजूनककुधनंहुय॥ आकर्षणप्रवहानवचकनविद्वर्जतं॥ वर्षायन
कुरुकननिवावहांसमवायूना॥ नागिग्याकुविरूयानान्यविह्वानकसुथा॥ हानाकाहाद्वयंवात्यदहाविह्वानदुहकं॥ हंकावकावका

दद्यात्समाधिनानाविधस्तथा ॥ अन्यान्यंयुसमावष्टंतागिन्यास्तुसंगकं ॥ मदावज्जवावाहीमुख्यसाधयतागमस्तु ॥ यथाक्रममव
 वा ॥ ॐ निजसुपदवस्ति संधिकं ॥ मूलमकारिधनत्वंविह्यानागनागिनी ॥ ॐ दीयंतीलकं कृत्वा ऊपितालकथरुवो ॥ यंयंकर्मवाक्य
 दुर्गकर्मवसकथं ॥ नृपंयुक्तिगं कृत्वा क्रादंवा सोमनूपको ॥ चिरुनृपं समाख्यातं तस्मात्सुदनामकं ॥ सर्वोधिपत्ययागस्तु ॥ १२६
 दवराकीयगस्तथा ॥ तान्यदवसमाख्यातं वाक्स्वाध्यासिकं पुनः ॥ तनसर्वारिधनतथा ॥ गनजायकं कृत्वा ॥ मूलानां वासदधाषावाक्य
 मयाच्यध्वनि ॥ वासनाकपकालदुर्गमधनागव्यनि ॥ ॐ ह्यदरगवान्स्वामिक्जवावादिगथा ॥ सर्वथागिनिसमायागावज्जस

तस्त्वापदं ॥ ॥ ॐ गिञ्जीवज्जवावादिस्तुमदायागिनीतुवज्जयस्तुधनकृत्तनागकर्मविधिलक्षणापटलानविंहागि ॥
 ॥ अथागस्तुननपिचदवीयूजाकृत्वा ॥ वावाक्वागयूक्तुष्टदवपुकाहाय ॥ ॐ मां हनीयथा ॥ गनकाध्यासर्वसूकालक ॥ समा
 धिसंवाक्कृदयसमवह्निगं ॥ रुकावनादसर्वगद्विमध्यस्थिनापिव ॥ यकावादनोष्पादपुतिगावज्जवावादिवायूनाकगिमागमासांन
 ददलदलेस्तिरि ॥ पुनः ॥ कायवाक्किरुधर्मासावदुर्विंहास्तुदलवृत् ॥ वादहांतारिपमरुषिंहायागिनीसदा ॥ तस्मै नमः कस्यागारिवक
 यादिका ॥ नकानातवसादवीवाकायकसूयिका ॥ कामधातुगसंपना ॥ माद्वनृपाकुर्मकां ॥ अकावाचवतधर्मासुकिस्वविपक

वाक

नाम॥ सफरिंहात्मकमध्वरावयत्मानकर्मक॥ यंयंमानकर्महिदुकीयतगुनूदाहकं॥ मासतडाहकंवापिगथापंचानकर्यादिकं॥
विषयाजिकालवहाधूनुनाहंरावस्यहानक॥ स्वतर्ज्वावधिबंवचकंलखपयत्नग॥ यमयकुसदाकस्यक्रियगनान्यथावव॥
पूर्वाककासकंहालासकुमाग्यामिसान्यस॥ वेवाचनंपथमकुदितायंमविधीयत॥ हृतीयंराबंदयात्यंबमयदायंगथा॥ षष्ठहं॥
कावंकसेवहंकावंसफमपूत॥ अस्महंकावंचतवमरुट्कावकथा॥ दहमत्रिकावंबेवद्वादहांकानंपूत॥ कयादहारुकावंब
सुकावंबकुदहागग॥ हंकावंपरुदहागुट्कावंबादहावदु॥ सफदहासुकानेकानविंशमहंकावंदयागुचेकविंशक॥ विवाचन

१२७

ज्ञान

काहाकाहाकिंहामपूत॥ नककिंहाकाकावंचयकिंहावेवाचनकिंहाआकावंचगुयाऊयत॥ पंचकिंहाययदववत्ताविंहादिहं
तथा॥ षकिंहाहंदयासफकिंहारुट्कावकं॥ अस्मकिंहाययदवहाकावकगदाययत॥ एतवत्ताविंहारुट्कावत्ताविंहागदि
का॥ उयययत्ताविंहागुययकावादिबकको॥ वहुवत्ताविंमजायंववत्ताविंमभकं॥ सफवत्ताविंमभकुवाऊकंनिकाऊयत॥
विद्याहायंपूतमलीकासावत्ताविंमभ॥ वांकावंचपूतदयादकाहापंचाहाक॥ हाषाहांकववामकुसाधनामविदरिगं॥ यमस
खसर्वकाहाषूदकपादादिसंन्यसत॥ दययमरुमिकुगसमधगुहावयत॥ हानविहानंददमयनयकु॥ आदयुषारिवरुह

वाक

ध्वनिविनागकतः ॥ रुलकमानूपकुसुदं सर्वसुखालयं ॥ तेऽकर्मस्य वला वृद्धवाधिसत्वाद्ययुष्माकां ॥ दुरुलसुखावांचकीरु
गालवथ ॥ सदुरुसर्वरावानांप्रथयाकर्मनंविदुः ॥ सनादिषूतदाहमोदुर्गतायाविवक्ष (लो) ॥ कर्हयाद्यसर्वात्मात्मात्मात्मावदसंर
वा ॥ आत्मनासववृद्धत्वंनयनसर्वजनव ॥ कदाचिकालवसुदुर्मन्यसतसिद्धागि ॥ कस्मात्पूर्वकर्मविद्वियत्वाविवक्ष (लो) ॥ धा ॥ १४०
मुवीवसुखावाचुरगुणगुहायत ॥ ततमाविगमात्मानं सखधुमु (लो) वव ॥ कृपामृत्पाययत्नंनानावदंक्रियतर्ध्वं ॥ कृपादीनान
सिद्धकंरुललाकपनव ॥ ॥ गिगीवजवावाहिकल्पमहागुरुवाजकववमूलमकुसुमावकर्मपटलविंहागि ॥

अथउन्मनिकेवहांपुथागंसर्वदूलरं ॥ कथयागिनीसमाभनखगाहनापथागतः ॥ वीर्यवाधंगधर्मसिमालयषूतमास्तिगं ॥ नारि
वकषूमाध्वपूरावथवृकुनायकी ॥ खदूपमासनीदूगागालवजासमासुकी ॥ नक्षिकंसर्ववागनहूनवायूनासद ॥ गारुंधूनुधूनाः
यककवहांदगथागाकंकार्यमानंसदाशागोसिद्धागपनमाकनं ॥ नववकिवायूविह्वानंयावयागीनवक्षगि ॥ तसाबंधपालेनारि
सध्वगिवालिगं ॥ नारितासाद्यथागनवार्यमा (लो) नवाध्वग ॥ सजसगिउन्मनिकुविह्वानंवायूनासद ॥ यथाकालथागात्मावययय
सर्ववसुकं ॥ सरुवकादृहं वसुधुर्गुवा (लो) रुदामयग ॥ पिष्ठावमूलंउसागया ॥ उर्ध्वस्यवसुकहाया ॥ ॥ दं कर्मपथागनवृद्धायुक्रम

[illegible][illegible]

वा. क

कानं वषमयूनः॥ हं कानं सफमदयाद्यायवीजुमुसमयूनः॥ हं कानं सफमदयाद्यामस्कानकथा॥ गृका वं नवमदयाद्याम
ककानं यूनः॥ प्रकादहापदं दयाद्यादहायकावकथा॥ हं कानं गथादहामवकुदं॥ हं कानं कं॥ पका वं पदहाववीकानं पाठहामः
सगु॥ विकानं सफदहागुयाकानासुदहापूनः॥ प्रकानं विंहामगजविंहामहं कानं सुदहामवकुदं॥ हं कानं॥ सेवनेकाकविंहादः १४३
याज्ञाकानं विन्नासगु॥ गकानं वक्रयाविंहावकुविंहासुकावकं॥ वदिंहाजकानं दयात् हं कानं सफविंहाक॥ अष्टविंहासुकावकं
हाविंहाकगग॥ विंहामगकानं वक्रयाविंहाहं कानं कं॥ द्राविंहाहावदयात् हं कानं वक्रयाविंहाक॥ रुका वं वक्रुमिंहाकडांपकमिंहा

न्यसगु॥ वदिंहासे वंदयाहासकविंहागथा॥ यकावाष्टविंहागुनेकोहावत्ताविंहाक॥ वत्ताविंहादयात्कुडांपकवत्ताविंहाम॥ गृका
वं द्रावत्ताविंहाविंहाविंहाहं कानं वक्रुमिंहाहं पंचन्यसगु॥ सफविंहासकमथगुवयत्युर्ववर्षिकां॥ मंग
कवव्यायनापुष्पायस्वराविकां॥ डां वमइहाकाकाटिससगिदलपकाकमहाहं थाहं दं रुद्वहाहं हं हं रुद्वहाहा॥ डां हा
थायामनहं हं रुद्वहाहा॥ न्निमकसमहं थायकपूर्वासरवतां॥ प्रकाहायं वासककाष्ठहां थायामकालयो॥ वेनावनं पथकुदि
नीयसेवदापयत्॥ अकावहनीयंदयात्सं वमननकावकं॥ वषवयकानंदयात्सफमसुकावकं॥ अष्टमकुदका वं नवमसुका

वा.क.

॥ अथादहगवास्वामिवागव्यवीनतायका ॥ सर्ववीनव्यनीकल्यवृत्तसुखात्तयं ॥ ॥ अथिशीवृत्तवावादि कल्यमः
हानुवाकवृत्तमवाटनकर्मकुषुविंहागिमसयटल ॥ ॥ अथागसंयवका मियरुविद्वषलकथा ॥ गगवगाउ
यगलंशोहिनीवपथागग ॥ यनःवकः विह्वरमानुहाणिधुंकल्यरुहयग ॥ अथविंहासदसाहिलकंसफदजानिव ॥ क
गमानसमाख्यागामकसांकल्यनायक ॥ सोवाष्टनमासायंगपविवयनुगुक्तकं ॥ वाधिसंहायमाप्राति विह्वयागुक्तकामिका ॥
कगदतकगसंधिवृष्टेसदसुमवव ॥ सधयतिमहमयं सोवाष्टनपसूविगं ॥ वसायहांवससावंगुक्तकिगुक्तयमक ॥ अमध

१४५

पिवथागंतिगलावृत्तमहांगयो ॥ समात्यरिजायमानुगुक्तकावलित्वयं ॥ अत्युक्तंरुविह्वानं पूर्वगुक्तवावृत्ती ॥ नेनात्मासंर
नरुषुद्विधीयग ॥ वरुषुषुसदसाहिलअष्टेवकलसोहिंक ॥ सर्वज्ञसुषुसोवाष्टकल्यसंखया ॥ सोवीनकलिसखयावत्यानिसद
सुमवव ॥ वागिंष्टुंतीकावाकनसूविगं ॥ वादजानिवलकाणिषरुवगिवसदसुकं ॥ उगसोनीवसमाख्यागालागरेसुविवकल ॥ गग
॥ सोवाष्टयासंधिसदसुषु ॥ सदसाहिलवत्यानिवकसदसुक ॥ कार्यकगयासंधिश्चवरुषुषुसवव ॥ एगवांसोवाष्टसूविज्ञानाक
संहाय ॥ कनिष्ठाभिरनाथसोवाष्टदीपरावता ॥ पूर्वविदउरुवकनूपनगाजानिवव ॥ एगवांसुयदीयासोवाष्टमिगवस्तिगा

वाक

॥ कश्चिदीयं ह्युक्तं न सिद्धिमीदृशी विधीयते ॥ उपदीय ह्यजागृत्य पृथ्वीर्धरुलादयं ॥ सो नाहदीयसाधकप्रसादं सर्वमक्रिया ॥ ॐ ह
हामनुकंपयात्वा मनुकं नृपसूचिणं ॥ विदधे संनदा नृपसूचं कूर्वा किमानसं ॥ सो का न क म सा पा कं नृजगददं सुखं ॥ व न क्षा वं ध या ॥
गतं अधना सो दय नि वा ॥ अ स्य दया यि मनु क्षा वि दधे सं न दा पा न कं ॥ ह्या पय गि न क द रा कु का नं सर्व संधि गं ॥ अ ग प वि व य न न वः १४६
रु ने ना स्या वा धि गं ॥ अ न न म रु या ग न वि दधे सं न दा न हं ॥ न्द्रियं विषयं सर्वं चि धं प ना क लो कि कं ॥ कृ प या मा त्रि गं न न रि वा त्म ना
सु किं ह रु कं ॥ वा ना का व क म स्य पू रा द्य न व क ना य की ॥ अ म स्य द ह नू या हि ख ग द्या न क मा यु धा ॥ न सि का ल व सं रु गं सु फ लि क्षा क न

षुवा ॥ पक्षाया या स नू पा दु वि रु या व क ना य की ॥ उं व रु वा ना क स र्व ह्या ना म नृ प व र्ष न प ना य न हूं हूं रु द् र स्त्रा २ स्त्रा ॥ उं सो हि नी थ हूं हूं
रु द् र स्त्रा दा ॥ रा वि ना त्मा म द्रा या गी क र्म कूर्या य र्थ सि नं ॥ ह म ह्या नां ग स र्वं ल ख य मा न् वा खि ता ॥ सर्वा प र्ष धी न द्र णा पृ ष्ठा दि स म धा रु ना ॥ व
के पू र्व ना वा च का षं वे का ण पं वा ह कं ॥ अ न्या न्य य ग मं म नु स क नं व न्य स दू ध ॥ व रु ष का ण वे वा व न व्रै रु श्व रु द्वा न षु या गि नी ॥ ण ष प थ
म पं कि षू व रु की ष षु य था क मं ॥ नृ सं रु व रु स नृ दि गी य स क का ष क ॥ अ नृ मा नृ प दा का नं रु र ग वा वि य थ क मं ॥ ह नी य म स्य पा ष्वे
रु य रु षु दा य रु था ॥ वं रु द् र क्ता हूं हूं हूं क्ता नि द द्या व रु थ म स्य त्स्व र्वां ॥ त्वा या न के क दि णा नां द क्षि णा क न द्रा व कं ॥ मा स्य पा ष्वे दि गि वः

वा. क.

अथवा वाहु नाना मवर्गकर्तुं सक्षमः॥ अस्वर्गपय र्गानि स्यं मका की एकमासनं॥ उद्या कयु वरुम इममकु समाहितं॥ इममन न कलि
गवान कवृ कानत नवना॥ यवना एनदी नी वमदा दधि पट पिवा॥ उद्या नरु नरु यवा प्रासादे ह्यवमम॥ वरुषा थपू पूर्व वाव नज वाव
मथा पिवा॥ पथिग निर्मा ल्या पि यक वयन कन विरु॥ इममन लिङ्ग निर्मा ल्ये न मरु क्य पूरु यत॥ इयदा मलं यकं ॥ ७॥ वरु मरु १४६
विहा यनरा मखला वंधय रु नू पुन वन हा दया॥ उल्य नं ऊप मा ल्या तं दसु क्य पु मरु दया॥ निर्विकल्प विद्या एन विद न था गिस
दासु खं॥ सिंद वधि वन था गी सर्व संस्का वि सृ चनं॥ अथ वा अलिङ्ग वरु मा शि स्य व त्म क्त स्य सिद्धय॥ इत्यां ग नरु दसु न कृ ग म कृ द्धि

कमरु॥ विद नं मो नया एन या वद पलं धि कं तथा॥ सुफ रा ह न्य दानी क का गतं ना पि जा गतं॥ रूज य यदि सं पा फं रु क सु स्ति कं म नर॥ कि
का स्ति कं यदा विद न क न प रं रु क नं॥ निर्विकल्प क नू प ल सिद्धि रता रु सं हा य॥ एन पां सो ना ह म ध्य य दि द्म क मा शि गं॥
कि कू लू रु सं पा फं रु क क लू य दि द्म सि॥ सो ना ह दानं दया ल्या त्म कं समा वय त्॥ वरा ऊप र्य था गि न्या नि र्म लरु व कि नि श्र यं॥ स
र्व था गि नी समा य कं वरु सत्त्व प न सु खं॥ ॥ ७॥ निशी वरु वा ना दि क ल्य म हा रु रु वा रु सो ना ह य दां हा मू वि द्म ष ल क ल य रु
वरु ना म द्रा विं हा गि य ट ल॥ ॥ अथान्य र म सं व द्ध वा ना ही रु रु गु र्म का॥ वा ना ह क रु स्य प मा हां क थ रु रु लू मा द वा रु॥ ॥

अथदवीयूजाकृत्वापिप्रत्यभवमास॥रावस्वरगवान्स्वामिथागरकुरुसमानिव॥हृद्यगुक्कपवक्त्रासिद्धजनापिकीप्रयाग॥
वाक॥यागिनीकुरुप्रसाहं वप्रकाटिखलभवव॥वावादिक्कल्पमाख्याकमाउहाकाटिसंखया॥सखमथाकुथानावाधिविरुस्यअंस
कं॥महायानस्यपृथक्कृष्णकमहागिकाटिसंखन॥पंवाहलक्षकाटिश्चपुनर्मितानयभवव॥यगानिसर्वादिउक्तानिमृतिगिका १४७
यधित्॥कुरुविसूक्तयागीसम्बनंसलयावकं॥नागनागीविमिश्रयनायकीऊगदुपिणी॥नननेवसंवृलयस्यासम्बनपूर्ववर्य
या॥सुगतस्यदक्षानात्रिविनयविरथापिच॥नानासूक्तकमहागिकाटिवाधिसलस्यदक्षना॥यागिनीयागिकुरुसत्रस्यवृद्धगा

वनं॥वेवितायगगल्लुकि कायवृवसुक्तवर्ग॥धर्मसंरागतिर्माहंसदासखविरावना॥पुष्पायायात्मकंथागीहीयुंवृद्धल
माप्रयाग॥नसमाधिकलंदवीप्रियंयस्यनीलगां॥सादयकृत्वाविह्वयायागितानाशयदक्षिणं॥यवंह्लात्तादुवेकत्वयागीनां
गुप्तसम्बनं॥अश्वात्सखदानाश्वसम्बनकनकथनं॥लक्ष्मंसर्वसंयुक्तंमालिकाल्यादिवर्गकं॥आदिवर्षकवावादिहृद्यगयक
नामकं॥कूलंगणविज्ञानीयाद्वैकसलसंयुक्तं॥अनकायाश्चयनागाआदित्यादिगदाकृत्वा॥यागिनीनामादिकंरुत्वागागनाकां
यकीर्तिता॥उत्पलिसर्वदवानांमकिणीकुरुवव॥माकनसर्वलाकस्यनंतमारुसमाश्रिता॥यागवात्रयविह्वषुतवनाजीति

वा. क.

सूत्रपातिवयकं॥संथागनविनावाहि।सिद्धिरुल्लेखदायकं॥वलादयंवलाकर्मसिद्धिवायेतिश्वनंरुवग॥निहवंगवगविहंग
लापूषदुना॥दवानामूकिरुत्तादुवावाहिरावयग॥सफुगिंतासकंवकंयागसिद्धिकनंपरं॥वेर्लुलकसंसुनंहाः
सकर्मनूसावग॥सूत्रादवदानवाश्वेवीक्षांवरुसचनी॥अथागैतंबंवरुसंपुगिंताविधिकियां॥पूर्वाकलक।सापगवरुप १५१
पवावरुकं॥पूरुयदिधिसंयुक्तंनानवरुपाविकल्ययग॥घटिदंसंरुगंयगिमादीनांपूवग॥सुपिगं॥आकाशमलुलवरु
यंवापवावरुनंविगानंधरुपदकंव॥रिगंसुपविकुतं॥समयलंसमंथासुंरिनिव्वावयलन॥यथासिस्ववृक्षरुवि

तपूवसंरुिता॥मायादशातथाकूकोरुवकिरुंदुमागगा॥अरुसंसगतनाथरुत्तापूयादिकामिकां॥गृहालयागिनीस्यार्थवाधिवि
रुपवृक्षय॥अननगथागगाधिसानरुगिरुत्ताविवकल॥नमरुनसंवयापंरिवावंतवशमयं॥सुगंधगंधनेलनरुत्तलंन
वलाययग॥पूतयलकल।नलायथरुग॥पश्चावदाकाहासंयागिनीवरुमलुलं॥पुगिमादिसुसर्वगयागीमरुपवक्षयग॥द
गकर्मरुगकार्ययावच्चावदिदिकं॥अक्षीणंवडमीलयदुवरुमधिरुग॥पूषधूपेसुथागनंदीपतेवियमचव॥सर्वकर्मपूतयथ
गृहासकर्मपूरुयग॥दवाअग्निमूखासर्वपुगिंताकाललकलसंपाकमुगिमांगल्यकावयग॥सुदंगरुयातिधोषेयथावांरुपूय

वाक

तु॥ राजनमनयादिष्वंजनमुनिं वपुःस्थिकं॥ पृष्ठिभुज नमो राग्यं समागत्यावक्षान्तिकं॥ क्षान्तिकं दूषणं यावाननादुःखमप्यदवं॥ अप्रति
ष्ठा यथादवंप्रतिष्ठाकर्तुं संस्तुतां॥ विषयस्य (अथवा) कर्तुं कर्तुं यथाप्यं दुरुग॥ निर्विकल्पक नूपणप्रतिष्ठादिवक्तव्यं॥ दवगालाकपालश्च
निष्ठकक्षावर्गयदा॥ तथाच संनिष्ठतुदवपुःसमन्वितं॥ नृणां हृत्तवाच्यववेविषयवर्गयतिनी॥ सर्ववीरसमापल्यावर्जवावादिपयस्य १५२
खं॥ ॥ नृनिष्ठावर्जवावादि कस्य सदागुरुवाजुर्दुर्लभदवताप्रतिष्ठाविधिपुत्रवर्गयतिविहाति ४५८॥ ॥ अथ सर्व
वावयागीनीरि४ समाजं कृत्वा पृच्छति॥ दवदानवसत्त्वानां कथं सुखं कदापयत्॥ यदि सर्वं हृत्तवाच्यसमन्वितकर्म हुरुहुरुं॥ अथ सहगवाच्यवी

सामं सत्त्वपदायक॥ नृनिवसंहायमस्मिअपयकुदपरा॥ हृत्तवीरसत्त्वमायावावाक्का मात्मनकक्षा॥ सत्त्वसामानुसावर्गसत्त्वानां दवना
यकीं॥ सनूपणममनास्तीति वाधिविरुमहादवागु॥ सत्त्वरावागुणाश्च वरुद्वयाद्दामसंरव॥ तस्माच्छृणुं वक्ष्ये दामसंकल्पमाप्नुयात्
॥ हृत्तवाच्यवक्ष्ये मिदामकर्मादिलक्षणां॥ रुमिष्ठाधिगमकुलं अग्निक्लृप्तानिकावयत्॥ अष्टांगुलसमावर्त्य ४ यावत्सुसुदसकं॥
अष्टांगुलं निनृत्वा गंत्याहुलकुपुष्टिकं॥ द्वादशांगुलवक्ष्ये कृष्णवर्णद्विजानि मववा॥ धातुगुलिकं तु नकुलवृद्धारिकावक्ष्ये॥ अष्टां
गुलमात्रं दद्विनाकुलवर्धन॥ विंशदंगुलकुलं नमलकानागक्षान्तिका॥ गानिदयदुदयं तु यानिदयं पमानर॥ कर्मक्षानुनूपण

ते

कार्ययातीयावदिवक्ष्यते॥ अत्राकस्यगिरिर्गोर्ध्वरागंखलितंरवत्॥ सर्वगानिवकुलस्यसामान्यपातलकक्षं॥ कृष्टस्यासुखागन
 वाकं गुह्यकरोवकावयत्॥ उरिष्ठस्यासुरागनतमीकरोवयाजयत्॥ यथावाहनतमीवतथासंगतमवव॥ गदास्रवकाकार्ययथाउपमा
 क्षम॥ कृष्टमश्नुवजाकुआलंकृतकुविहवगठंस्वगपीगंववकश्चकृष्टदनिगमवव॥ यथाकर्मनृणावनकुलानावर्द्धलकक्षं॥ १५३
 किंनुसर्वकर्मिकंकृष्टस्यसदृशंविहवक्षमात्रयंकंदकिंनननिकायंकं॥ वक्ष्यामिहिदिववकवर्द्धुगिकाक्षकं॥ कुरुतेसा
 हनंकर्मनेमत्याननसंरवत्॥ उवाहनसुमवर्द्धुश्चवायननमवव॥ आलदाधेकुस्तिगकर्मसाप्रयाननंसदा॥ आसनवर्द्धुकर्म

नृपक्षरावयकदा॥ हंकावककियागनदिरुजाकावकुरावयत्॥ महावलपयायनसर्वधाकुविनाहकिं॥ खेलेंकृष्टंसमार्गकिनकि
 वयपकिंनुवा॥ मडिनांमूत्रावयत्सकंसडिनादवगात्मकं॥ स्वष्टुयोष्टिकंकृत्वाक्षकविकृतनक्षत्रिकं॥ वक्ष्यामिवागविकृतनक्षत्रविकृत
 नमावक्षं॥ विकृत्यत्रोदविकृतनडवाप्तियत्सकंसडिनादवगात्मकं॥ स्वष्टुयोष्टिकंकृत्वाक्षकविकृतनक्षत्रिकं॥ वक्ष्यामिवागविकृतन
 काष्ठेनारिवावकं॥ अर्थवदयकुरुहूनगिसविद्रूपकं॥ अग्निविश्वमिदंयागिसकृपकृगिलकक्षं॥ अर्थयागादिकंषायअग्निव
 वाहयत्तग॥ स्वदयंरुजहंकावक्जसत्वंविहावयत्॥ सिद्धानाडिसमाख्यागा॥ लिङ्गगुल्लयग॥ दधनकसदासधूआदकंसिवा

धिविरुक्तं॥ अक्षयारुहवाकानंवाकानंयक्ष्ममकेत॥ तमाध्वनंवीजंनकवर्णंशुणवने॥ दलुक्तकृष्णिगवामदक्षिणाक्षमला
 वाक कथा॥ यथाकैमेरुतंलम्बादयं सर्ववदहस्वपिणं॥ सोक्षिणंमूर्किंरुयंद्रवापाधादिवायव॥ मृगयूवीवायावेवतंदनंवकस्तुविः
 का॥ वकापूयसमाख्यातं॥ शुष्मा॥ कन्धपायसं॥ ॐ न्तंनखदंनसिद्धिर्वर्मवस्तुसमासता॥ कक्षवामस्तुदवास्तुनृगिकुलुसमध्यः १५४
 त॥ अन्यंशुष्माविधानकुतानावीदिकदाहोर्गं॥ ॐ ॐ ॐ कावदकुलुपा॥ ध्ववस्तुपयत्॥ अन्यंशुष्मावमनार्धश्चदयात्कुलुसुष्मापयत्
 त॥ समयसत्त्वसमाहीलंसत्त्वंपदवधयत्॥ पूषधूपकथादायंगन्धनेयद्योषयत्॥ जानूनारंगनसलोपाणीसुखंवधवयत्॥ ॐ ॐ

प्रयत्नादा॥ ॐ निप्रथमाहृतिंवदाययत्॥ ॐ नमः॥ समनवृजानाममूकस्य॥ किंकूबूखादा॥ तमासमाक्षिणामक्तिवर्णंशुणवने॥
 लानुक्तयदिवदक्ष॥ शुणशुणगथावंक्षेनिमिरुमूयलक्षयत्॥ वंदंनहिखाहालासर्वसम्यक्किनाविही॥ विहिषामध्यमाहृयाः
 निष्कंयसमूहनां॥ वरु॥ शिखासमाकालप्रहिंसिद्धिस्तसदा॥ कुलुदुसनिर्ग॥ लिग्धनूपवेर्यसनिर्ग॥ निधूमविलावकि
 नानागमगवृद्धिर्ग॥ वन्दकाकामक्षिप्रखाहुसावंगकवकायमे॥ पूषवागक्षिणवापि सर्वपायकुनक्षरु॥ वंधूकपूयसंकाक्षं
 वाकसमसनिर्ग॥ सफदमलुवर्णंरुवाक्षेध्वयंरुसंपदा॥ वंधकाकायलाहीलमावगीणीगंधवान्॥ कर्णूलावृहागन्धिश्चशुणस्य

वाक

नाधिपयनः॥ वीणावल्गुमृदगाग्रं खकादा वसुध्वनः॥ अकिगन्ती नतिर्धोषा अग्निरस्य सखा वदः॥ शीवत्सुखं संखा अकिगुल
कलहाकिगः॥ ध्वजवामलसदृज खसिकावगजाकिगः॥ हृदयकिग वरुणकयिज्जमदावथः॥ यत संखुलसम्यकिरायनावाग्धस
म्यदं॥ वंदलाकि मुखाला किगिखाव हू मल्ल॥ एवकि सुसुलिंगा निविहं रमा नूका कवी॥ मूहं प्रकंपिगजागी मूहसुसुनिनसुलं॥ १५५
मूहमकि वामन मूहसुहा किमदिती॥ कृष्टुविंदुविगावकुजा कयं वदधुवं॥ नृयाक्ष नक्षत्राथं यदा सनापतधुवं॥ विवक्षु
धूसवक्षु रक्षाम वक्षु कि कर्वनः॥ नूकपलाहनेलारः॥ शिगार्थ चिनाहकृणु॥ सर्वादिगान्धदूर्गा न्धः॥ लज्जया विगंधवान्॥ पाव

सपदवृक्षयदिष्वादि किगानवः॥ वटावटकिनादाया रुमकिधाषवान्सि॥ मिसिमायमाना वरुधाषार्थदी निरुगा॥ आवमनकाद
यादग्निसंकिष्ठमानसा॥ ॥ ओं वाधिवृका यखादा॥ अश्वत्थस्य॥ ओं वरुलगायखादा॥ प्राक्षस्य॥ ओं वरुयखादा॥ ओं द्रु
नस्य॥ ओं वरुकूवलायखादा॥ की वरुकस्य॥ ओं सर्वपापदहनवजायखादा॥ किलानां॥ ओं वरुपुष्कायखादा॥ मुखलुगुलानां
॥ ओं सर्वसम्यदखादा॥ दंक्षमस्य॥ ओं वरुयूषाखादा॥ दूर्वास्य॥ ओं अपगिदगवजायखादा॥ कृष्टस्य॥ गगाहकमलासनं स्वदव
गानि सनं विंक्षु वीजपविहगं मल्लुलवकु विणवयगु॥ समयवक्षु नवकु अरुथपुवजथगु॥ आगतक समथयनूसा मदि

[illegible]

यान्कषमाश्चयमानसावधत्तवमविरुपवमाद्यससंधिषुगृहयित्वागदसंपन्नावास्तनावृद्धिनिर्मिणांलक्षावक्ष्यहालवृद्धाः
 स्यादुल्लुमर्हसिगलयंवकीयतगमायादोषवृत्तकक्षरा ॥ अंगिणीवज्रवावाहिकल्पमहागुरुवाऊअध्यात्मअग्निदू
 क्षामविधिपदवन्तामबहुविंशतिपटलः ॥ ॥ अथः समद्वंद्वधर्मवक्रसनादयं ॥ बलवज्रयथागनसिद्धिगववधू
 तिगानानासिद्धिपदामकृतानावर्द्धरुवादयं ॥ वमनियोगितादिसंम्यक्वर्थसंस्तिगः ॥ तनयागनमकिमांक्षयानागुहादुरुशि
 ॥ गगापद्मवलायांवकाभिष्टुतादवाग ॥ गनूनानूरुयमानांवाधिमार्गः ॥ वज्रबलंन्यसवीजंदकावमस्तसंयुक्तं ॥ वस्तवधू

वा.क.

किनादीरुडईमखाललाटां॥सुकनलधात्रयदजंकायवुद्धिमान्॥कमसहादूववृधिविहृषूकाठगां॥लंघनंरुवधापं
किरवकसयंगवत्॥रुगवन्तुगलिङ्गुसादिकथंदिनदिन॥कसिन्धु॥लुपादृष्टिपकिगसर्ववमुक॥महावागनमात्माव
सुहृवंतिसदात्मन॥यागवत्तुसुदुषूदहादृष्टिकजायत॥यागिनीमकुर्तुगस्यासुसुखार्थकननिश्चय॥यमवलाववका १५८
मिधर्मवपुसनादयं॥वहुकार्यसुथागनसहसहवदाम्यदं॥उकाकियागजालननलवजसुदुपक॥नायकाजकिनाकाक
ताषयडागवंकिना॥वाधिविहंसदागमंकिङ्कयावकववृव॥गवूठमूदेवगुजीयासुहृजवागिलकहां॥दूरीवंपासुखनेव

दानश्चकात्रयंगत॥वलवकयवसर्वासांललाजागीसलकहां॥हामंवसर्वगनेवयंवक्ष्यादिकानयत्॥गगावदिगमागुहागदृहांवृ
वरुण॥गुतिकावापिसुहृस्यसुयंवीनलराधिता॥रुगमाश्चषूअषधीत्रलादीवजवजिकं॥महलंघाहुनांसवतानायागपुकाहिगं॥
आंनमः॥महातवाहिमहाकालीनूनाय॥गयथा॥आंवलपवलललालयवलिंमाखाहा॥वांसंयदंरुलाईवागलिंगजुदीत्वागवजु
पयायावदागवृकिपिष्ठाठसि॥आंवामूहृधूमकलिविद्युकिङ्कदन२पव२दवदरुमानयखाहा॥वामववहागमजुवकनस
मनूलिखितारुखारुवका॥लदमजिं॥कानवदुसुयंलिखसुदुपदंलिखिआकस्यजपदहावहामूरुसं॥आंवजुकाहावलाव
क

वा क

लहनदहपवविधं हयासाकमानयहंरु॥वाल्मीकंमयापंचगयसदिगविग॥विगस्तिमायकंवाहुकिंरुत्वाकनीबहुलादकनसुव
यत्॥गुगुनूधूपविधिंनंरिहुकवलिंदयात्॥सकाहनादकधनायातयकि॥यदिनवर्यनिसफमदिवसखलंरुत्वायककपुके
यनयांपवादयत्॥वर्षापनविधि॥उंगराहज्जविगहमस्वाहा॥जूननपुकाविगसखलाष्टंसफऊरुत्वाकस्यविदिगदानः १५२
सूपयत्॥मुखवन्धकगारवकि॥डॉमकाकिष्ठंरिमकागठकिमकाःकादकितांगलमकानांमूयप्रीषणदवदरुसमुखवन्ध
निस्वाहा॥वलिर्वद्यापकिगवषयादित्वंस्वपय॥यस्यकस्यवित्कार्यमुखवन्धवद्वानपठिगसिद्धि॥उंनमनिगारववा

यविलिशकिलाकनूपलमूषिकानांरुहंवन्यामि॥मर्कटहंगवसर्पमश्वावलाहादिनाहिवाखिलिस्वाहा॥नकरुसूनलासंका
नकविंहाकिवावंपनिजयगृकणवाटिकायांचरुकायाक्कुरुकाहालासूकंधपयतिनूपदवारुवकि॥अथवाविषलवनवाजिक
सर्षपमूपलबीजधरुवकवबीजमदानबीजश्वा॥नगवांवसुसंयाजमदिषहूकनहंमवाहंनूधिनलालायवदुर्दहमायिपूष्य
धूपंवलिंदयाकस्यश्वादिहसक्तसंगकवासनगर्जनीकाधवाऊनत्रुर्विंहागिकपयत्॥गामायाकाववन्धकगारवकि॥
उंजींरुंरुंविद्वस्वाहा॥जूननमरुहागामयसरिमकायाहियस्तनपदिपदधिविनक्षमि॥कीवकपयस्तक॥उंनवकं

कृत्वा दद्यात्संज्ञां गुरुवति ॥ मनःशिलायां वा मसः पुरुषी कालिखित्वा दीपहिखायां तापयत् ॥ वसतिविधिः वा यद्यका लक
 वा क मधुमपलित्यरुजं पुरुषवदलस्य नामं लिख्यारु कपिष्ठु मध्यप्रक्षिप्य वृद्धका कंदशा किमच्चाटयति ॥ कुरुका वकस्य दस नचि
 नमृदरांज नत्वस्यधिक मसः सन्य निजय उदक मध्य निवृध्य त्वा हन स्फुपयत् ॥ ग्रामस्ति नारवति ॥ अथ ह्यग्नौ मा वयं तु मिच्छति १०१
 ॥ सिकक नवापिष्ठक नवापुगिष्ठ किं कृत्वा काषाय कर्षः न ताप गिष्ठ किं मुख्यादा नयं यावत्साद न वसुगुफं का न थरुदप निवाक्ष
 दकं पत्रिष्ठया प्रिसंक्षरु यं कृद्धं यं पूजयति न क्षति ॥ पंचमस्यं पनूधिना का नारुत्ता टकटी क्षुण्ण लना का नारुत्ता टकटी क्षुण्ण ल

नालाया ह्यनाम गृहं अष्टमसंशुद्धयात् ॥ सद्यः अयस्मान्नसी यति ॥ नूधिनं च दयति ॥ कनहवा नूधिनं वा सुवति ॥ अथ ह्यना
 ह्यरुष्टय गिष्ठ किं कृत्वा दक्षिणा रिमुख वामपाद नाक मय मूक हिखन कर्धे नस्य ना म्ना अष्टमसंशुद्धयात् वमसो राग्य रुवति ॥ स्वरुमी
 लस्वत गदल दृगा कनां अष्टमसंशुद्धयात् ॥ धनधान्य समृद्धिरुवति ॥ सर्वेषां गुणरुकिणं कर्म ॥ पत्रक नवीन पृथ्या निधव वद नक
 कथा ॥ निर्गुली रुक कधी च न्ना वनं तथा प्रिक हं वान नीवीजं मनःशिल मववा प्रिरुत्ता म्ना रागं वडहील निधय कं ॥ दलक कंज वीजं
 वदिगुरुत्ता टकं तथा ॥ पंचमः ॥ विंशति मगानि समरा ग्म्या निका नयत् ॥ पृथ्यादित्य संयुक्त न पंचमय न पीषयत् ॥ याय दं गुटिका

वा क कृत्वा अदिह्य वपुः शयनं गच्छेत् यथा शयनं वा साहस्यं कृत्वा कृत्वा विहाय गच्छेत् स्वस्वद्वयं वा नागं यथा शयनं गच्छेत् ॥ १०१ ॥
 साक्षात् भनयूयं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥ मंजुं नं लयं मंजुं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥ दसवं धाये मयं कयं गच्छेत् ॥ १०२ ॥
 यमयं गच्छेत् ॥ दसवं धाये मयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥ दसवं धाये मयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥
 धानयत्सुजयारुवगिक कयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥ दसवं धाये मयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥
 दसवं धाये मयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥ दसवं धाये मयं कयं वदययं गच्छेत् ॥ गच्छेत् ॥

किं च कल्लुषं हृत्तापकं न सहयिवत् ॥ हूलं प्रज्ञामयं किंचिद्दुर्गागमसकलपयत् ॥ चक्षुर्नागनाहयति ॥ विषदं हकालं श्रुत्वा
नालपयं निर्विषाणवति नित्यं धनयिनि ॥ सिंदूपाद्युमद्वनस्य निविद्धं खड्गनादिति ॥ सर्वगद्वेष्टयन्निखरुक्ति ॥ यवमव
दासर्वं नपि यशोरागरवति सर्वदा ॥ राषिगारुगमाश्च षोडशधीनत्ववडिकां ॥ मधुंधारुनामननानागानि वावहं ॥ ह्याद
रुगवान्कर्मसूत्राकां धसदास्ति ॥ ॥ सर्ववीरजगत्तागाडोषधीनायकी कथा ॥ ॥ ॥ गिणी वज्रवादादिकल्पसहायकवज्रप
चलाकसपुसनाडोषधीपुकरवहनिर्देहाय ॥ दिवं गतिमपटल ॥ ॥ अथ संसावपालकाटिस्तु ॥ कथागवत्रसायनं ॥ हय

वाक

गीतपथागतसाधयडसवक्षं॥दुकावयानिमाधुयकावमरुकस्थितं॥गीकावंपममाधुयकावदयध्व॥धायमानंमहाधगंस
वसगीवसायनं॥दुवगिसर्वनागत्वं॥यगगुह्यनवर्तनं॥वसायनसदालाकस्थित्वाकाष्ठनवावसा॥दुयगीवाकावयांवसायनाथागाहा
षकागच्छकगनथागतनविस्वाप्तपूर्विका॥वसायनवरुसत्वंवरुमरुवर्षेधुका॥गगाधवसुवनिगमानुगच्छकिवाधमानसा॥वाधिः १०३
गाहावसावक्यागिनीयागनावकी॥सर्वसत्वंवरुसकासमार्गसुपदक्षकं॥कत्तवावसदालाकदुववागमाधुधका॥राविगावसनाथं
दुयागिनीवकसार्गमा॥उदयगिसाधनाजावर्त्तयनथागिन्यामुपजायगा॥विगाहायतिनागमधुविद्यायानाहायकिव॥अपदव

धापिसर्वध्वान्तयादिगलक्षणा॥यल्लवसायनंलाकःसर्वसाधायगच्छात्॥नासायनंरुकीठंगिनेवात्माध्वसासुवा॥वसाकका
यंकूर्वाकमैद्योगादिमवव॥यथासुखध्वान्तवर्त्तयनंमापूयात्॥वागनवागमालाकवोद्विदध्वान्तुदादकागदवागनवगं
वसुमानंनवाधग॥वसायनंवसत्कर्मकलाहुरादिवक्षं॥वसायनंनकूर्वाकमध्वसंस्थितिसादवात्॥वक्षध्वान्तयागिनीवज्ज
धवादिकां॥गवृत्तान्नवर्त्तयनंसत्त्वलाकाद्यसम्भवा॥वसायनंविधिवक्षवसायनविधिरुमंयनविह्वनमाउहासाविमोयारिल
क्षणां॥साससिलककमुनीरौषधयीगवन्दनं॥एथकसमाकत्वाज्जामवर्त्तयनं॥हाध्वपंचकलायनामध्वमार्गकिसंरव

वा. क.

॥ सामान्यमुहवदीतवृद्धसुखविद्वज्जयन् ॥ कुरुवर्षसुरपंगीकुरुयकवज्जलना ॥ दानिकास्त्रीधकहायासुगंधाकुरुकावका
॥ तस्यायुष्मंयसात्तस्यासुर्वीरिमरसिद्धिदा ॥ लुक्कयकयसयायापुनस्यंजवदिकुगशाअयकासुवदछानाहुवहृदिकसन्निरा ॥
पुनस्तानिसमिगनारि ॥ स्थाकुरुनिहुरं ॥ हनस्तस्यवनां ॥ सुखं ॥ वक्षसंगुदंवन ॥ श्रीवादिशजनात्यनंपीकवदनसंगुदं ॥ १०१४
नलिकारयागंमांसजंनकिधाघृतं ॥ उरुमंजीषंजंसपिमिधमंनलिकारवं ॥ अमंमाससंयुक्तंनसायनविधाकुरुमं ॥ वयवःपुष्टिकुतं
वदुरुवृक्षसर्वलक्षणं ॥ याधिनिमृगनारिस्थारैषजांजाकिकावहां ॥ वदुरुसमारुवनित्यंसवगवसदावदु ॥ वदवतगिया

२३

नयंवदवतिथिनिगसूर्यासूर्यसयागयंसूर्यावदतिहास्तुनिगदमुसमायासंनक्षत्रयावनित्यहा ॥ वक्षासकनयागनज्ज
युवज्जगिसर्वदा ॥ वामनक्षत्रपदाननयविहृदनकर्महा ॥ जीवनीनृजंसर्वलुक्कयकहायायातिनंजनपीगदविगंमलामलविव
ज्जिगं ॥ लुक्कयकुरुवदयुवदुर्धावविद्वज्जिगं ॥ पुसन्ननिर्मलंस्वदंकिंविहृदिकसन्निरा ॥ लुक्कयकुरुवदवंपिष्टवंधनमूरुमं ॥ म
समांसंतप्यानंस्त्रीसगंवविद्वज्जिगं ॥ धीनाविनिगसूरुक्तंस्वदंयत्रियालयं ॥ सर्वद्विष्टंसमायुक्तंगुहाकस्यपवहायु ॥ दवगनाधनं
कार्यंमूलिसमानिगं ॥ स्वाधिदवगयानित्यंमृविष्टिन्नमूरुजायिगं ॥ दानयुष्टकृत्कार्यं ॥ शिष्यसंगावकावयु ॥ निर्वोहास्तुनसंयाफि

वा. क.

मिष्टवनिविघ्नकृतं॥सुखमासुनसंयाफं सो न कृत्वा सुखिमान्॥सुखदं साधयत्सम्यक्कृत्वा लानिवा॥न क० पञ्चासुवय कर्मदहावर्षा
जिगावता॥वर्षदयं वसंवत्सरसिद्धिकाव सुखिमान्॥दादहा सिद्धि संयाफ वलिपालिगवर्जितं॥नानावागविनिमूर्कं जीवदावंद
नावकं॥दवा सुनमन्या वसुधां रवगिवल्लग॥पंचवदिवसुधां निखं वाधरुदयसदा॥पुनर्मसंपूर्णं मिष्ट सिद्धिप्रवर्णः १०५
॥कामाधनसमंदसंखवनी सिद्धिमाप्नुयात्॥वृद्धगील्लकावल्गुनिर्गुली वागवल्गुजै॥धुनुवदगनिर्यासकसुवीवचनाचिने॥३
उदावय॥स्वांगयववाव समन्विने॥सर्ववागविनिमूर्कं॥निषिंस्यात्सकाकिमागु॥गिरुलावदनायलं वृद्धं हागलाय सदाकसूर्या

यंयिवदधसंरुवलिर्जलावृजः॥वदमत्तिकयायाध्वना सरुदयन्नव॥कसुवीगिरुलायकं यावाहामागुसंछिगं॥यस्यीवत्सग
गपीगंसुवनिवृजावृजं॥षणासमागुसंशयंदीर्घायस्यात्सूयवान्॥यस्यस्यजायगसिद्धिनिषितं नागसंहाय॥किथिकषूनवृद्ध
सूरदमसुषुसर्वथा॥विवृद्धसर्वथागायांसमासानां विदग्धका॥वाचने सर्वविह्वलुदाकसुनल्लानिना॥न्त्यादरागवान्स्वामिलो
किक्वसदाछिगं॥सर्वथागिनीसमायागाहृगवृववर्णिगं॥ ॥प्रथमथागिनिप्रयंजनगुलांकथ्यगहृसाधक॥वज्रवा
वादिथागनवृजवायूसल्लकगं॥सर्वलुषुयदूयगाकपाहाकं॥वागनांवगदह्याहाकथागवृसंसिगं॥वजनूयसमायागाहृवः

वाक

नियोगिणवकं गायनं ह्यहो हानवप्ररुंजनं मायुवागं ॥ अचलं सर्वकालवृत्तं वानाजसंज्ञाय ॥ सर्वरुगामनायागी सर्ववक्ष
प्रवर्तनं ॥ लालालालादियागनशागिनी भाकदायकी ॥ नादाविंदुस्त्रिविहयापराखनालाकण्यं ॥ तस्माद्यागी तर्हवविहयाप
कथागिरि ॥ आत्मा मध्यमयागनसयाहनं वप्रहस्यत ॥ अलप्यं सर्वविहयादहनं वप्रकथ्यत ॥ वयं धर्माधिकं गायिनाः १०८
कादिगिरिस्थ ॥ वृद्धानवाधिसत्त्वानां ह्यनश्च वृद्धमलुल ॥ हाहा मागयथायामं यवनाहो वंशागिनिं ॥ तस्मिन्कालनव
ह्यस्यदगस्यावालयागिनी ॥ गगहं सवधरूनां गस्यागरपुकाजितं ॥ प्रह्लायायात्मकं गवृज्वल ह्यमवव ॥ एतवन्

विह्वलं वल्लदियं मस्यथागिनी ॥ वृद्धलाकसमत्तानि क्रिष्टुकिरिव नृपं ॥ नवं साका नगं ह्यनिवाकावापयसिगं ॥ व
यावेवाद्यं यान्निविह्वलनसकृति ॥ मध्यमादृष्टिरि ॥ यागी ह्यनं गणं ॥ मामलं ॥ यदि वृद्धानवागनधर्मसंघतथापनं ॥ य
दितीर्थकविधं सूर्यधर्ममस्तानयं ॥ यदि प्रह्लायायात्मयागं ह्यन्यतात्मजं ॥ यदि सर्वमनित्यात्मा वयं पुं द्यं नयं ॥
विंवह्वलनगडकनधर्मधाययदिहृति ॥ यागिनी धरुं कं नृपं राविता वृद्धनृपकं ॥ वल्ललवन्कावाथ ॥ मान्वाथ वृ
ह्वलान् ॥ किंवह्वलनगडकनधर्मधाययदिहृति ॥ यागिनी धरुं कं नृपं राविता वृद्धनृपकं ॥ वल्ललवन्कावाथ ॥ मा

वाक

नलसुसंवदकानयन॥षाठ्ठाकावकलच्छागिनीपनसाकन॥सुनासुनयवंगवप्रविष्टमध्यमकन॥वदुश्चक
दलंगत्वावसायसाकपनसर्वथागिनादिजायाश्चसकृदं॥यागसा नार्मसाविरुपायनभाघदलनाग॥सुप्राजायन
नित्यंरुसर्वकालसवस्तिगं॥सुसुप्रनगदादृष्टिनिर्वाणंशगनकलं॥कूर्यात्परुगनेनात्माकनीथेषसकृदं॥नवंच
कल्लिगाथागितागमायाकिनिश्चिगं॥प्रह्लाकलसमागम्यसूर्यानाययनलकं॥वसायनंसकृवाधागीरुसुयकषूद
णी॥षाठ्ठानांउक्तलानासूर्यवंगवागनं॥कनूलाहूत्यगांथागाद्वजलौकाकलं॥सलुलवकमाध्वविनयितार्थी

१०६

सुनकां॥सर्वलकलसंयकंनसायनरुजायन॥अथगल्लूयकद्वनसायनात्यलिकावलां॥मल्ललंलानवजाखंशुमृगंजीव
सागव॥षष्ठादुमधमल्लनरुकीरायलागनंशुलं॥गगात्यनासूवाधवीकन्यकाकामनूपिणी॥उदिगाकसमावर्त्तलाकावस
भमप्ररा॥नानावतविचिरांगीपद्मवर्त्तुसमप्ररा॥अस्त्रादलरुकादिद्यासंकावाहवसनिशा॥नानावसध्वी
धवीरुलाकंवसध्वनी॥खड्गवालांकलसध्वकपालकलिध्वजं॥गथावादंगथाध्वंनवमंगवनप्रदं॥रुका
धनूपाणंवकंखड्गंगसकलमल्लल॥लूलसंवदीलावगलियकिवाकनकन॥पवयौवनसम्यन्ननिनजसुनसुद

वा क

नी॥ मधुनामटिगसर्वतदीहृगानिगधगा॥ कीनसागवनांमश्चवदकघटमधूपमा॥ सामयानकुसाकन्यादसवकुवेवावनी
॥ वेवावनीदसमधुदुदुकीवदुतंरुवत॥ सर्ववीसमायागठाकिनीजालसंमुखी॥ एकहृगानिसर्वाक्षिभूमंतंनोदनु
पिती॥ हलोकलवराकावतसगरोमंतंथा॥ कुंभुधर्मादयाख्यातं॥ गालकमृगहानंमकुटावत॥ हानविहानसमु
पन्न॥ सदनयाभादकंजगत्॥ पी० शुभं वसंभाह॥ मलापकक्षज्ञानभवव॥ पूष्पापूष्पकसंवचभूमृगमर्धमूहमं॥
यकुमकुनवधाकंसमूलं वसुखासुवं॥ पिरुपवमन्यव॥ विवादयहकमली॥ विप्रानंयहकर्मपूकृषियानांचवि

१०७

गुहावेष्मनांमंगलार्थमूदाक्षंसिद्धिसाधय॥ प्रवक्षापूष्पकालषूदीर्घयाख्यानांभवव॥ योगिष्ठासामकालपूष्पाक्ष
रुमनाभाववत्॥ नेमिरुथिगिनीपूष्पमरुसाधनगहृहा॥ प्रवंवहृविधाहृयागस्यादाषंतविद्यक॥ स्वाधिकावसव
क्षामिहृषूक्षकोविप॥ गुनूवीनयथागिन्यापूजयदनूपाणयत्॥ उंजा॥ हूं॥ किमकुल्लाधिरुिकावयसदा॥ हूं॥
जी॥ किमकुल्लाधिरुिकावयत्॥ हकावदवगवर्हृहाकागेवश्चताणयत्॥ जी॥ कावावीजदंतावभूमनाकावकुशाव
यत्॥ हिववादिथविकुनयिवगयदिदीक्षितं॥ विषकसुनसंदहासकुसिद्धिनजायत॥ सदनं विकलाकश्चिद्वहृविध्याक

वा.क

जायतामदनविकृतमलेकामाहमिथूननगि॥नृत्तगसुदुर्गवेवकलहाद्युयगिधुवं॥निद्रिकायसकावापिपयकनः
ननावव॥कुधावथागिनीसर्वयायात्मानवकंवृजग॥याधिह्मकंरयकणविदवकिरायानका॥गुननिद्रागुन्यादि
सत्त्वदाहंनकावयत्॥अमृतकुविषकणसिद्धिसाधनेतिरुलं॥यगववर्जयसलीपूर्ववृद्धनराभिरं॥पालयधिविस
यूकंनृन्नेविद्यसयूतं॥यागिथागिनिमलायन्नवंवयविधिनाधिरं॥सर्वसाधनलंवहु॥रामरुगकल्पयत्॥ननः
मन्त्रादकंपाप्सिद्धिनाह्मवकल्पयत्॥पल्लवृद्धिववंकल्परायरुलसंपदा॥सुवासुगुलमेव्यर्थलरुगनूरुवंपदं॥५

१०१०

यजामूलकावेवगाडीपिस्त्रमधूजा॥वृकाजावकृजावेवयक्षासनामदीगल॥साध्यापक्वविधपाकंयष्टकासुविधास्मृतां
४॥गायीसफविधानकृकमपुषाविधानत॥नानादहाविधायकमयसंहायवरुं॥गिह्मगिरुकाककृमधूसिंघकः
जायतामूनकवासुकिववृहमादिनंकुरुवावयत्॥पूषंगुगुनूधूपंवलिदयावआदवत्॥कुर्यावविधिसंपूर्णजायत
चवलवानुली॥सद्यासयंयदाविनदिननुकानयत्॥नवंयागवलिच्छिद्यंसद्यासवमदामय॥सर्गाकर्मभकुरुवस
कामलकानिव॥यल्लभकारुनीनस्यप्रिवसिमलकानिव॥गुठसेकवलंगायकभकदकलुकानयत्॥सद्यासवमिदं॥

वा क

कंपार्थवन्तविलसिताः। अतलकावशस्यधुकिंयुष्यवृत्तयुष्यकधन्यकं। मलयंलालिवाकाकलोलयतिशुवल्कलं।
पुनानिसर्गलानियादांलनयकल्यथत्। दागिनलत्रिलस्यापिगुरुसाष्टपत्रंरुवत्। जायगमदिवाश्वेवलिशिदिव
सविद्यग। यत्कंमत्रिंशत्संक्रिष्टानागकंलं। अदिमरुत्थावालंलवंगमागधानितं। गुरुभवलंवेवसफत्रादकदाप १०१
यत्। अलवंगीतगन्धज्जायगखट्टलालं। लर्कनासदसंथागमाशकुरुवृद्धिमान्। तलगलानलदंवरुंमालंनृणादि
कव। सफमादिलकज्जालिगलसद्यासदाकमं। गिगुलुसारवातायंलमलनसमन्वितं। अल्लंगनपदागयंवरुसुगविवदल

यावयलधूससक्तुगताधधंयदाययत्। गिरुलाकंक्रमंनारिश्कपूलपुकागुनृ। बालसुनसर्वाशिवधयार्थनथाऊयग। अ
न्यसाधगगल्लयद्रुदिनंवि। लवग॥ यावयिलारुमधावीत्वासर्वंमृगरवत्। सोलंनंवरुगंवरुयसिद्धिखरुगुलं। विवि
धरुदिननादिज्जालिरुलसमन्वितं। मृगमदंसमवेवमदिवावसमंरुवत्। पवाईधंनकीपुष्यंशमवलासमन्वितं। सिद्धिया
यावलाघंरुखरावावगगपून॥ पवाईगन्धपुष्यस्यलमिहंरुकावयत्। अतनैवरुयागनमासमासनरुजाऊयग॥
नानाअलवरुषांवरुलादलानगरवत्। पुनदागवगदकृगुगलुल्लापयत्। मयपानंविनापूष्यलामंवेवघृगधि

वा क

ता॥ सङ्गुर्वनाधर्मसूक्ति सारुलपदं॥ मानासंख्यवामयंतकश्चिसमथारवत्॥ आत्मयुगवसंकसंक॥ अङ्गु नूतुसत
लह्यन॥ अथरावृष्टिपानं च दवग मरुतावयत्॥ पञ्चनृत्यश्च ननेव पुथागनास्यसंखवं॥ वानूही वसमाख्यातनर्थय्या
लवायूना॥ श्रीश्वनावाधिवृक्षगणवायुलुप्रसिद्धाः॥ रजयकुसुमसंवयं विवक्तिकनूला मुखान्॥ कीडि सुदयथागिन्ना
सिद्धिसायानूगमिनि॥ रस्यरावानुदवीवेमयपानकुकात्रयत्॥ सविनायपञ्चनृत्यं यथाविधिअलंकृताः॥ दकावायवपू
नगरुपमंकावंचलुवन॥ उंकावाकनयार्गवज्जंकावावादवकी॥ दकावाधिवलायं कुवकावात्मनक्षत्रकं॥ लंकावंगवनिवा

१०२

लपुयागकस्यकात्रयत्॥ दकावंगवयासंवि विरूयाथागमरुमं॥ गकिनवसमास्थितयपञ्चनृत्यश्च नस्वयं वकीसत्तैः
वनीश्वेववृक्षवादिनायकी॥ पञ्चनृत्यश्च नंगपि विरूयासर्वथागिनी॥ पञ्चलानसमाख्यातनर्थश्च नं विरूयनकं॥ दया
दयार्चयतुं संजुक्तं सर्वदवतवहुरु॥ काकासर्वगदावृष्टिपुवनं वनरुक्तं॥ नृत्यमोतमदाविं वनिमिकलकयचन॥
आकाशाहाकनूपलजायगपममाहुर्गं॥ यागिनीवृक्षमध्यसुदृक् नूपिजिजाठिगं॥ वक्ष्यकर्मसदाक्षमंतदं कनूगारिवा
यस्ययस्यकुक्तीनिगस्यगस्यवरावग॥ सर्वथागिनीवसंयाकिसाधनवामूलक॥ मावरांगकगाहृत्वा नृत्यमाना कुपमध

वाक

क॥ सर्वपापप्रणांमन्त्रगुणायुषं निवर्तुं ॥ कामना सर्वसिद्धिनिधायिनां रुच्युच्चयत् ॥ सिद्धिं लब्ध्वा स्वर्गं विने कल्यंते वका न
यत् ॥ अन्यथा रुच्युच्चयत् ॥ गतं निरुक्तं सर्वयवर्तुं ॥ कीर्त्तिकानां उमं न सुहृन्मन्त्रवापर्वकार्ये ॥ क्व वासनाय निर्याजसूत्रं पश्य ॥
हं ॥ नृणां हृदयवाच्यं वीर्यमानकथागण ॥ सर्वमयसमायागरुच्युच्चयत् ॥ ॥ नृणां क्व वासनाय निर्याजसूत्रं पश्य ॥ १०३
हृदयवाच्यं वीर्यमानकथागण ॥ सर्वमयसमायागरुच्युच्चयत् ॥ ॥ नृणां क्व वासनाय निर्याजसूत्रं पश्य ॥ ॥
वासादियथागतसाधयन्तु क्वच्युच्चयत् ॥ वाधिविहृष्टिर्गन्तुमनूयन्निरीकृताविक्रवन् विजानीयायानि न्यायनमाकृतं

॥ कालिकानां प्रयागनवायुवादनगां यति ॥ यथेवात्यनवल्लभश्च सिक्काललयरुगा ॥ सारिह्लावकृषाणां हिजायतलानव
कृषा ॥ रुगस्यानर्गनयुषं हृष्टमिह दमानसा ॥ गत्यागतिविधा ननु दिशगन्तानूलययत् ॥ जिहामानंदनृत्ताकार्यादिव
नस्य यागग ॥ जिहविहानसमाधिरुद्रं जनिममथमा ॥ स्यर्कावकायस्य समाधेयवमाकृतं ॥ पूर्वनिवासानुसू
त्यकायनकलयागवान् ॥ अर्द्धनिहंसमंकलानात्रीषष्ठत्वमवव ॥ षष्ठीपवदुहमानिघटिकावदुनियोजयत् ॥ वादहंगुल
मायामा अर्द्धगुलवेवमाहूतिं ॥ षष्ठीगुलपमाहिनहकाला वादहंगुलं ॥ दक्षलवमूर्द्धकृकासृष्टमनामया ॥ अर्द्धगुल

वा'क

वविष्णो नरिहासासचाव ॥ १ ॥ सघावंमिगायायांल कलंतामकर्म ॥ २ ॥ रावयथागिवायिकालाकालनिवला ॥ ३ ॥ मल्लो
गालिगंरुतायां नीलकजाय ॥ ४ ॥ विष्णुयमिदं विरुंयगाय कृपाणिनां ॥ ५ ॥ स्वस्वरावाप्राकिनेनास्यं गन्धिनां लग्नयाहि ॥ ६ ॥
सामकनाकिनवरुपवमायायकवायव ॥ ७ ॥ रुहागिनाधवंवीजं वज्रवा नादियागवान ॥ ८ ॥ पं व वा जानिहामानि ॥ ९ ॥ रुहा
नामयकमां ॥ १० ॥ अथात्संयवक्रामिहामकर्म विहाय ॥ ११ ॥ वाज्रदनाय सगंदनसदमाहि साधक ॥ १२ ॥ पूर्वकविधा
ननहामकर्म समावरु ॥ १३ ॥ मदा मां सरुदी वला लाय साधनामविदर्श ॥ १४ ॥ इहूयानिर्विकल्पनसं पूर्वसकटकरव

१०४

गामनुरुष्टं गालमात्रमां सनदयात्यवमाह किं ॥ १ ॥ मध्यकीवंसमालायल कर्मकरुहामय ॥ २ ॥ लयननगत्र (ह) संजायगव
मदाहयं विषाहूकरुगे नमान्वाहि रुहामय ॥ ३ ॥ कल्लकनागोपकलनरुषकणा विग ॥ ४ ॥ गथाकटविष्णुमर्के (ह) रुन
(यो) दा कक्षा रिम्वं ॥ ५ ॥ कल्लयविनलां मकी मध्याक्रमोदकर्मि ॥ ६ ॥ सामयकविह नववृत्ता नागिसदानि (ह) ॥ साधनाम
समायागंसमवयननादिकं ॥ ७ ॥ ससेना वववाकस्यमन्यथामयिकाकथा ॥ ८ ॥ उच्चाटनं तथा वक्ष्ये ॥ ९ ॥ नावलदार्पण ॥ १० ॥ काक
पक्षवला निम्बनिर्यासकेलविह ॥ ११ ॥ पिष्टा वस्याग्निप्रकाल्यावा यथादिहिनमूखा ॥ १२ ॥ उच्चाटयनसंदद ॥ १३ ॥ सफनायलकर्म

वा. क.

वि॥ विष्णुवर्ममागतिनिश्चयते मुमुक्षुविग् ॥ सूर्यवंचकसंमिष्टं काकलूवरुहानिव ॥ धरुवाग्नौ पहात्य धरु
हासुहागोरुनं ॥ विदिष्टसर्वलाकस्य कंदवत्सुद्रुनं ॥ जथाकषणं वक्ष्ये आत्मासिद्धिं न समयरां ॥ वायवांसाधयि
ग्वास्माध्मासालं च वांदनं ॥ ललिताक्षयपीठं पाणिं रूपाय गतं ॥ जंकावं वक्ष्ये ननु विष्णुसाधनं दां वक्षु ॥ थापिनाम १०५
लकविष्णुलाकवसमानयत् ॥ एकखलु कपालं वा निर्वृणं वान्सारुनं ॥ लखसाध्या वीनं वा कवीनं हामय रुथा ॥ साधु
नाम समुच्चार्य नूधिवत्सालायाधूरुवकाष्ठमवव ॥ रुरुगावने खनकं नलखय साधु नूयं ॥ वरुणाद्याय साध्या

पिमकुंजकाशुदाकिव ॥ एकैकपूषासंगृह्यतुं साधयि विग्रहं ॥ सफयितं हामय सुनसितं कथा ॥ अथान्य
कनं वकामि वक्रचंदकाष्ठकं ॥ वरुणाद्याय साध्यापिमकुंजकाशुदाकिव ॥ यमाकृतिं कृत्वा वसनकृतवावेनं ॥ नामाशि
साधुलखं वदयस्व यथरुथा ॥ अर्द्धबाणयमिषितं गदाकर्षयति ॥ प्रिकरुकनविलिगांगिनामसूखीरुविश्वना ॥ सा
ध्यासदयनाशे गच्छ विष्णुस्तनय रुथा ॥ सुवर्णगोत्रिका रगमालिख्य गम्य उपनिवास रुक्मनासुहागं जयत् ॥ यस्याना
ममूच्चार्य कृपलकुं कक्षात् ॥ यवागच्छ किञ्चन कयसंगृह्य साधक ॥ मालिखानयनरुलका कय कक्षा लिखितो

दा'क

ईडईवानयनक्षिपत् ॥ डवारनलक्षं वापिवाहवास्ति सयंकिल ॥ कर्षंयां गुलफादिमन्त्रिणा कृत्वा यस्यावाह कृत्वा
खननरुस्यगोत्रं कृत्वा वकि ॥ गार्हस्त्यखवाकुमदिषाणां कृतं लिखनदिना ॥ गार्हवकि ॥ अयं किं यत्नवस्तुं गृह्यत नवतेन
कर्जलं यादयत् ॥ नागमल्लिकासुमनहालयत् ॥ हृदयमकुमालिका ऊपत् ॥ हृदयं दुर्दृष्टां विहाय तः ॥ अजयदं जनकस्य
सर्वत्र किं निपद्यति ॥ अंरुगलिं गत्वा दा ॥ वेसर्पा मार्जनमकु ॥ ककुपस्य खल्यवमादाय हस्तिनस्ति गृहीता गृह्यं यः
दाययत् ॥ अकनयुष्ममं यां निमूददं गायिनि श्विगं ॥ अं डदकनसमाजागडदकनसंरवा ॥ तेषां वगुठयकं वल् ॥ दावश्च

७७७

किमहावल११मसकाब्दयथाववडाब्दसमागच्छिसिर्थादयत्नादा॥मकुं बहुधाथलासुं कं तथा गृह्य क वालं वां
हागिवानभववा॥ऊयचुर्षुदिदृक्षिपसहाकनिवानां॥कृत्वा नरुसुखीहवतिमानवाचसमकन॥सुखनलरगस
कुजायं वानरुनरवग॥यवंथागवलं पूर्णं सर्वथागवृत्तमं॥रावस्तनकमखिलं हृदयपविवाजिगं॥सर्वथावा
नरावक॥सर्वथागयोगवान्॥सर्वमकुसमायामात्सदृशयागवर्तन॥अथावश्चरंयकिषायांसकुनकुपसावर्तन॥
यागिनीरुक्मिनाक्षपूस्वर्वायकवर्णादिरि॥गृहनीयंसदाचार्यकुरुयंचथागवर्तन॥लाकावन्धनवक्ष्यस्वरावक

वाक

नित्यं न ॥ यति मरु यथा गच्छं प्रिति मा वा पा न क वृत्त ॥ स्व वीरुं वा क्त न ह्य य य सि काल रु या सं या ॥ सर्व संपत्ति
का न क्षा ग ॥ वि ना यं व ह्ना न म्पु ना रि मां य नि षि न ॥ सं ता वी यं व रु स्मा क्त रु वा द य था ग वि न् ॥ भा क्त म्स्वा रि का ॥
का क्षा मि ह् स स्ख म हा स स्खं ॥ या गि नी न रि मा वृ हं त दा रु (ग वृ क्त न य न् ॥ म क्त नां व य था वा पि स मा वि न् मूल य य न् ॥ १० ॥
पं वा मृ त न द या नि मि त्ता रु त वृ दा य य न् ॥ म क्त क लं स य य था गी क्षी मां दे या ले म ह्नु ल स द ॥ स म क्त द या ध मा द या रु न
स मा नि वा ॥ वि हा व क्त न म्पु म्पु रु ल्या क ना रि व ॥ य का क्त न स मा सा य वं का न व रु वा ना रि का ॥ वं का ना दि य नि षी च व ॥

उ ना क्त ना दि कं सृ ता ॥ ह्नु न म क सि न्म क्त र्थ सं क ना क्त न म क्त का ॥ स म यं व रु वा रु या य नि षां च का न य द्ध ॥ सर्व ग था रा न
प द ध र्म व्हा रु स मा न का ॥ का य वा क्ति रु प द म्पु या गि नी ना न्य कं वि रु ॥ रु (ग वृ यं व रु क्त नां क्रि या दि नि नि वृ रु वां ॥ वि रु
हा वृ व म वं व था गि ना दि ष्ट य नि षि ना ॥ स त्वा व का न क्षा रु ला म क्ति नां रु प व रु न् ॥ स दा य भा क्त या गि ना म क्त द य य नि षि
तां ॥ क र्म किं म य द यं रु ला कि रु गं वृ स व दि का ॥ स्व यं व य म हा ह्ना नं स्व सं व या स द व ना ॥ स्व यं व य म यं क र्म सा द य था य
नि षा स ग ॥ अ न्य वे द य क र्त्त वं रु या सर्व ग रु क ॥ वि रु हिं स व ह्ना न स म ह्नु ल या दि द व न ॥ दि रु जा दि म्स्वा वे व रु रु जा य म्